MSS No. 264 Subject Philosophy

Name of MSS Hariprabadhinu Sinayapatrika

Author Nand lal

Period

Folios 119 (118+ 00a)

Script Sanskrit

Source Prithi pal singh, Amritsar

Missing Folios

264/MS

002

264

AUTHOR. NAND LAL.

TITLE. HARIPRABADHINU SINAYAPATRIKA.

ॐस्वस्ति श्रीगणेशायनमः ॐनमोभग
वतेवासुदेवाय ॥ अथहरिप्रबोधनीविनयप
त्रिकालिख्यते ॥ [illegible] दषटपद ॥ एकरदनगु
णसदनजयति लंबोदरसुंदर ॥ भालइंदु
अरविंदचतुनिधजु तमुदमंदर ॥ ढूंढविघ
नपरखंडखंडि नवखंड निमनतहीं ॥ कुंजक
वनिरमुंडमुंड जुतध्यान धरतहीं ॥ जयति
जयतिगिरजासुवनगुरुगनीशगणगणग्रणी
लालचरनतहरिचदभक्तिदेजुसुभवस्वकुत
मणि ॥ १ ॥ पुनः ॥ जयतिदुर्दि कुंदरगंगाध
विगंग [illegible] स्वरसग्रति ॥ वैसुवेसकलेवसहान
रिद्धिवसेप्राग्भावति ॥ हंसवंसग्रवतंसजा

नंक विवंससहायक ॥ दीन प्र दीन ... सु
कीर विदिनन लायव ॥ सरनसुखद सु
विवेक धरसाय नवसुभ शान्ति वस ॥ ललि
तलगनक विलालकीलगीरदेह रिललित
जस ॥ २ ॥ प्रातः जयति तिमिर प्रतिनासनाम
तिगजहर नगजारी ॥ उदित उदयपीरख प्रवल
तेज त्रिभुवन सुखकारी ॥ पंकज कोक प्रमोद
दानि जगद गगन प्रकासी ॥ जयति सरित सर
सलिल करन पावन गुनरासी ॥ दीनदया
लु दिनेश दुखहर नतोरभय जग हरना ॥ ला
लन मितपदवर रूपा प्रभाधर न विरचत कर
ना ॥ ३ ॥ जयति वरद वर विदित वृन्दावन वृ

धामेश्वर॥ विश्वभर्ता सुख जगमित ज्ञान
महिमा योगीश्वर॥ कलुष भंग भर रंग गौ
रि गर विसब विपाली॥ चंद गंग जुत मौलि
कंठ हालाहल काली॥ तीन ताप हर त्रिपुर ह
र तीन नयन त्रिभुवनपती॥ तन्मय ताप वंदि
लाल तन तोर प्रवेश समसती॥ ४॥ जय
ति जटिल कामारि माल सर सर सुत नदृति
गंग चंद जुत लसत मनो सत स्थान भक्ति जुत
रूप कंठ जुत गरल जयति जनु भ्रमत गिरख
रमर कनक लस स्युक लित लसि निज भाल तमन
हर॥ तीन नयन जनु वेद त्रय त्रिविध तापन मग
ति तपाग॥ लाल जयति त्रात त्रिपुर त्रिपुरारी ता

रननरस्तं॥ १॥ जलधिसुवनं मदहरनं प्रभ
यपदं जयति वारणं॥ २॥ कृपाविलोकनं हरत
जयति जनमोह काममद॥ घनकविल्व दलं प्र
रवं जयति प्रपति तं जनं जिह तरण॥ ३॥ प्रदोषभू तेस्वर्थ
विलसण जेप्रला सा सवत है तुमारी
ति प्रभ तस्वामं प्रपवर्ग विलदारण॥ ४॥ रचित विरंच आसा ततप र र ता
सोसेमी विलवन हीकरत
नरंस्वकरंत दे शासना निरत॥ लालभन तमव
भवहरन जयति भीमदपाद्रि द्वित॥ ६॥ ७नः जयति
शंकरतनुग्राम शारदकुंद ग्राम हर॥ ७॥ प्रर्चित देवप्रदे
व जयति नरनगं चराचर॥ ८॥ वृषभ कंधरवृषवे तजयति
वृषवाहन स्वामी॥ गिरजविलभ ताः नगम्यं जयज
ति प्रकामी॥ लालपत तं जवगति शरण पाहि पाहि देमी
मवर॥ तज कुतर्क हरिवद सुरति मम मति रति रहि प्रागमर

॥७॥ पुनः जयति विभ्रमबिंबस्वभीमसंसौनविहारी॥

काकोदरउपवीतंमगाधिपंत्वचं तनधारी॥ वाम

लासनंकरकलितं जयति निर[illegible]स्वाधा

निराकारं निरवयवं निरंजनं निगति उपाधी॥

प्रादिनां प्रतं प्रनंतगुणावरणनां प्रगमां प्रनंत (सेलनाग)

धर॥ लालजयति जयजयजाटिलंजलानिध

जगतां प्रगास्तंहरा॥८॥ पुनः जयति प्रणतनरक

ल्पकंपद्दंद्विलिमलंभजनां॥ जरतसुरासुरं निर

षं विषमविषं प्रसनं निरंजनं॥ तीव्र नंभलंदक

लदिप्रा जयजयति पुरारी॥ दीना[illegible]पंदयालुंदु

सहंदुं प्रहिंउरजारी॥ प्रंधकारं प्रंधकं प्रमित

शामनं जयति दिनकरंतरेणं॥ विश्वमजगतिं प्रविर

तरुणजुवा प्रर्कीरम ध्यानका॥

लंजटिलदेहुलालतवपदशरणं॥ ८॥ दंडक॥

धर्मप्रिय

जयति वृषभेशं प्रियवृषभंगंगेशां हरशेसगर॥

स्रगमालाके

दक्षको जो क्रतु जग्य है तिसके जो है
भग्नहै वताहि केसो जन जो भग्न सामग्री
तिनाको द ग्यो हो मार निरभग्न करने वारे
गभरस जो तो केसरि सर्वक्रिडि को की स्रग
माला है तिन के ॥ २

३ ॥ श्री ॥ वि

कुंडहरा मैं शराहै

दैस्न प्रमथेश व्याली ॥ दक्ष क्रतु भग्न निरभग्न

संहृत दक्ष हत तंग प्रत सुमरंदा स्रग मुंडमाली ॥

कामरूप द्रुम देरको रवरत

कामदुमद दुदवंचंडमलगुंडधरि ॲ हरि मलकुंड रवत पीनके सिर २

गभडवल डकै केरी

गंडवलंडकरी ॥ जयति करपूरधवलि गुंद

चंद्रकलेशं

कुंमदानामृवेकोटिवमनी पवकल्पांतकारी

सर्व प्राप्ति जरुके नाम सर्वात्मा रव

सर्वगति सर्वप्रियसर्व सर्वात्मा सर्वप्रद सर्ववस्तु देनेवारे

सर्वहृदयवासी = वैराकृरव तप्रलाधार

सर्वहरसर्वधारी ॥ धारनातीर भ्रसरस

रुके कामरूलडमहडिम करेहैं सलमृदि

वमृलडमरुडिमरुहरभवमृत लमवमृ

तमयहस

लसरी ॥ मनमातंगत्वक्भृंगमंगल

बाल कृपाल श्री पृतरहस्तोसमरहीहैं

मंगलके प्यारे साधुहेरमेंधरप्रतांग केसोहेस

सभंगप्रियसंगप्रद्धंगगौरी ॥ नगन

वेदनजोग्य वरण नवरहेहै हरहरिश

नमनीयवर्द्धनीय श्रुतिवीयहरदोहरदमनी

गभतिश्रीय विश्रेद्व गभ्रातिरप्रतरहित सासानोमे

यपरप्रीय श्रोरी ॥ हीनगभ्रव सानंसमसान

देगमवलनेके ॥ सुवदा मि

जनोको मानदेत हे गप्रो कोहीमे सुवदस्के मोहोतेहै
गतिमानजनचेतंनिरवानंवकाली ॥ तांडवी

तांडवीनत्यपरततपरदेरिवितजिनोंका

गप्रपव गप्रमनेज नमानके गमर्थीत जोन सबंध कोरवे की
नत्यपरवितदुरंवृतिहरंनित्यद्रवविबंलिहिर
ही सो निरवान मोहोहहैहै यह तो गवर्थ मे देतवदवोहे
दहीयवहैं २

डव वृतिके हरी
गभ्रो नित्यद्रव
दीनोके दुःषको
देषके द्रवीयमान
हे चित जिनोका

कृतंपासी॥ मधदन मधून मंम्रमंमेदमटकनं

मधीमन्नमरंमस्मवरींमस्मधारी। पिंगलवर्नं

जटंहरमंविधु तप्रभा शरणजनहरनंमुदकर

नंभारी॥ जयतिंप्रत्यंतंप्रघरूपंप्रंधकंउरग

प्रसनंप्रतिंमनुत्ल्प्रतविमानं॥ रमंतपर

रंनिरकूरकुजपूरंहरंसरंभामरिंकृतंदरमा

नं॥ जयतिदुरदिनदुरदंदमनंदुरदेशहरं

दीनतादोषदःतापदासपरमासप्रति

माभुपूरणाकरनंगर्भगतंकेलित्रासंखमनं

मकृतिवधाधिंकां बाधामनसुदे

प्राराधिंप्रागाधंगाधा॥ इंद्रचंद्रांग्निंतिमरा

नामनौदिंजादिचरनवरणादिंप्रजप्रादि

देवांशासनाधीनंप्रदिदीननवचीनर

बीनजनदेतानिधनीनंसेवां॥ कुमदज

वाटरघु
वरचरि
तकोटिपा
तकमव
पासमल
पकीन
त्रपपुरस
ना धा॥

प्राधीमेररवरे तिनोकोप्रगाध लेसर नेवारी जि नोकी गाधा है

कुमरहृपजनोकी
दिकालमानरवंग्रमाँतिनोके हृदपदपकमलोमें
भोरेरहीतरहदिन जमानि

नांईंदुज्ञरविंदद्दियमंगरवंम्भपरप्रियंवारि
सुषके हेने वालेमदरहितहैविरदजिनेको

संगधारीसुवैदंनिरमदविरदवेदवदंवरव
ग्रौ३ तूषवरवेहेनेवाले हैग्रोनरदवरवंग्रमाकीतरहतरहत ज्ञानके

रदसारदवरवेवंनपनविगजतकारी॥ नाथमो
नालवा
तीएहे
वेदवद
कथाता
तहैर

माथंनवपादपरंकामरिपुकलपतरुसर
मपरहते
संकामदंपुरारी॥ विष्णुपदप्रीतंनिरमी
कैलास
तंहैलालवोपालवनप्रीत [illegible]
तरति
त्रिकक
ष्ठ
१०॥ जयतिसरवेश्वारीविष्णुमायेरमा॥
हीरनिधकन्यवेंजयतिदेवी॥ ग्रमितग्र
स्तां३उतांत्रिपालनंप्रलयनिमषतवर॥
तांकहैंब्रह्मसेवी॥ तोरग्रसंसं [illegible] ग्रमित
ग्रंसकी
ग्रंसतेग्र
मितिसावि
त्रितेग्रादि
लैकेउलो
कीपान
ग्रमिमत
प्रभावातिपे
कीउत्पतिहै
जैसेकप
हितवहा
दिककीउ
पतिहै॥
सचींसारदसैलजॉग्रपरंसाविद्री [illegible]
सुबुधा [illegible]॥ सकलोंउत्पत्तिग्रगिनितप्रभांयपावक
गुनवाले
रपासमतिवस्त्र [illegible] ॥ जयतिग्रसारन

विबुधा

स्मरनं सबसुखसंपद ... रनं हरनं संतापतनक

१भाव के चर्णी का ध्यान
१भती ताप के हरनी वाले हैं॥

चरणध्यानं ॥ ललितजुगपानमसु...

नंहरिपदकलितपरमअभिरामभाग्य ॥

प्रमानं ॥ मनहुं विविधविधसकरलोकत्र

यं सोमधरवंजयरं जुगलललालित्यश्रि

यम् ॥ श्रुतिसुवाविसनकादिं प्रीवक

धेल ... तव सुबगण वरणन करके वर्णनीय ... रण ... भए हैं

मलमवंवरणंतवसुगणामें वरणनीयम्

जयतिनारायणी अग्रलअघघायनीं ॥

मोक्षपददायनी लोकमाता ॥ सर्वसो...

ग्यो प्रथमे प्रमरेशासमानतनवातवरुपादग

उत्पन्न हैं ... कृष्ण को उपमा ... चर्ण ... उप

दीठजाता ॥ जयतिराधेगोकुलकमलागा ॥

गगन को उपमा ... तव उपमान ... जगवंदनी ...

जगंमनतवपायउपमानं जगवंदनीम

श्रेलविद्य

जयतिविद्यादपादधामविधातुरलिमहि

सकल भावेन ... वालेन पवीत्र नहे १

मनोहर ... नोलो की शोभा को धारन करके प्रतिपारे जानके ... लोको ... है जावन ... की उपमा ... ४

पु. वि.
१
5

नहि षण्मुभादिके रहनत
वेरने वाली माथ के हैं
कोऊ नहीं ...

षण्मुभा दिंह तीन वीपमू। यज्ञांग्रवतार।

मुविभार संघारहि तविह्नु ग्राधार ज्ञेसो

कयके रे। संगतवु ग्रवतरन निमष नहि वि

दुःख वन करुँध वसी केरन सुगुमा ते रे। ज

हरि परमात्मा ग्रवतुमप्र इति
यति जय प्रवृति हरि पुरष परमात्मा परम

पद पाहि नु हिं सेय ग्रकामी॥ लाल मति

हीन ग्राधीन वी कर श पा सुरति कर

वाउ जिंह उवे स्वामी॥ ।१२॥ छंद बरव

हे वेकुंठ रूप मा
द॥ ग्रारति पाल स्व पाल जय ति उय पेज

निज वडे हत पको न स्थापन करने वारे॥ ग्रोजि सें स्थान न मो य
न्यपवनी॥ जहू पलचिंत न कीन जपाति

जो ने चितवन कीया है ति सी ग्रस्थान मै गवन करें ने वारे ते सी जयहो
तिह मारगगम नी॥ तजत जगुराग गणनि॥

पुन्न विप्रस्वरी रुद्र पाली॥ जयग्रति है

छपन पय जलद धार गगन शासी॥ वा

तजत जग के रागो के रागो
के वै। ने पुनविप्रों को सवरी
की रुचि पाल ने वारे ते री जयहो रे॥

स्यामअंग नर वसन तनित लाल गगन इव धर न धर ॥

जयति जयति कमला रमन अंक लुषनि कंदन वर

न वर ॥ १२ ॥ जयति अक्काम लला मकामग अभि

राम सुंदुति धर ॥ स्यु सोमा धाम स्युस्यमतामर सद

मा व १ व वर ॥ नीतभवन भय हर न भागत भगवन भ

व मोचन ॥ जयति भी मप्रिय मध्य मध्य मिमस भंज

जनोकाहे सर्व

वि भो जन ॥ सरि भोग जीभ व नम हि भर तम विध्य ।

१ र्वंवत मोग जोसेमोज दासनको देत मैस भाचत है तुच्छ

त भ ल हून ॥ लाल देन दास न संकुचा जयति जय

जान ॥

ति निरगु नांसगुन ॥ १२ ॥ पीतवसन तन स्याम

लसन जनु मरकत गिरवर । चपला चमकत चार

चहू दिसं चसगीत जधिर ॥ कुंडल सकं कपोल ।

जयति जनु मरकत दरपन ॥ कनक कलित जुगमक

॥ ६॥

वि· ६ं

महाराजके कपोलोमेकुंडलोकाजोप्रतिबिंबपड
रहाहै सोनहीहै [illegible] मानोमरक
तकेदेसीसहै॥ उनमेकुंडलोकासतकारनहीहै
मानोसवर्णकरकेकी एहै एमकरहे हुराकोन
जोजननहीहैओसमाकरवेश्रोउनेकाहोवहत मतापररवि
हैमहाराजकाजोप्रतापरुपीरविहै कैसाहै

रमनहुँसवरघुनंदनपरपवन॥ हिनकसुविचारगुरुंप

ढावतचपलगति॥ लालसुमनविसवनसमउस

मतादिनविजईविमनि॥ २४॥ नयननलिनंपर

लसतनजुगलभृगुटीवरवांकी॥ सिनतिलकजुगाभा

लचतुरदससपुरछविढांकी॥ लोनेचपलकुंसजन

वलजनुहिमकरफदजुत॥ जलामरकतधरत

कांधजनुविषपरनंषिरहिन॥ लालेमनतंसुखंसिं

धुहरिंपरमंमनोहरंछविधरन॥ ध्याननिरजवि

भरानिनिजपदहीरे नुदिमवनविरत॥ २५॥ जयति

अनंतप्रखंडजोतजयविगतउपाधी॥ निगमनि

रूपननेतिनेतिकरनमचुपसाधी॥ व्यापकअंतर

वाहजेवतिजयजलंपलवासी॥ विपकनंवरण

जईश्रौतिविचित्रमतिकासेग्रौकामरुपीजोराजा है
तिनके सापलमतकेवासतेगुरुरुपहोवरहे मकसे
को सीलकेमेपाकेग्रपनुसुभापमानकरके
चपलगतिक्याचालपदारहाहै कामकेग्रपिनकेवासते
क्योकितीगएसमनवालोकोसमगकरके सरदीसहै

॥ ५ ॥

नं व्यास ब्रह्मं वाणी॥ अविनासी॥ जयति मत्स्य

॥ प्रहलाद हित॥ अनुपम॥ अकथ॥ अपार॥ अज॥ ला

जे

लंबर न॥ अति ले लिन वर न रूप चतुर भुज विरदस जा

॥१६॥ जयति मल्ल मद मत्त मल्ल मघ वैद्य मा

ललामीकेलप

न॥ अभय पद नख॥ अज ह्ल वर गा। कमला वरम

केसबन

उन॥ जयति धरनिं रद धरन जहाँ कोल

वतारी॥ कनक कस्यप दल हरन॥ जयति नरस्स

वग

व धारी॥ जयति जयति वलि वाधं दे त्रिलोक मा

पन करन॥ लाल द्वि वित्र मंत्र वंश रस्ता॥ जयति ज

नन मंगल करन॥ १७॥ जयति जमन वंस

स्वा

ज्व परम गरम प्रीतम स्वरूपी॥ स्वाहि वंस नृ

नीवासस्य सी

वंसु दपर परणा कामी॥ तन धन धाम विराम अ

॥७॥ वि

ह

7

मिंस्वरथंपरमायथा॥ जयति कोशाकुलदेशांग्या

वांध्वतधन

तांऽप्रभिमतंमनसागाथा॥ जयति जयति सरवसा

ख वामल संपूर्णानाते

सुखदं विसुं नृपनवरसललितहा॥ सरवंनात

रवीभव नेपवेवर लेऽप्रमो लकलालतु ने लिऽमारे

भवनवदलिलितोऽप्रमोलकलालतुहा॥ १८॥

ख

जयकौसवमखैपालंतांद्विकामनसुवाहूं॥ वि

कटधनुबंमवंदमनंपरभुधरंमर्दशासिंसाहूं॥ रघ्रा

नंदकंदऽप्रमंदजयतिऽप्रजानंदनंनंदना॥ रघु

वपावनंकरनंचरणंजयपंमुनिसुरंरंजना॥ दिस

ख ख

रावराघऽप्रसाधुं[illegible]लंजयतिवालिखैरथलहरन

ख

दंडनऽप्रदंडदसमुखैदुरद जयति समवेखारिस

रन॥ २९॥ स्याडकसुरंजाविंद जयति जीवनप्रद

विलाउनेवाले

जलधर॥ऽप्रलसीसुमनसंकाससविकासनंजन

मनसिज हैं काम औ लोभ
है पद्म है पर पत के तिन के षं
डन करबे वारे सो जय
पाई हो तुमारी जय हो

वं जय दिनकर। मनसिज मनसिज लोभ पदजस

तुमारे चरननि मे नमस्त ... जे

पादंडन परिहर। घोषमनोभ्रमधा प्रास्तनमितजन

जन हैं तिन की जो आसा है सो अबधी है तिन के पोषन ...

नें जय जय दिनकर। प्रबलप्रतापप्रभापयधर जय

जो तुम चंद्रमा हो तुमारी जय हो॥

ति जय ति पद्मारमन॥ लालंसरसंसठं मघगहनै

दहन प्रभाकरन। रंपवन॥२०॥ सवनंतालं जय प्र

रनं चपटं ... गपाहे धावी॥ प्राप्ति मनि रतो महार

गीध हि तो प्रेम ना श्रावी॥ पाह ननातारन उदधि विभी

प्रलाको ... सनको ... जो है

चन जय जय वरदी॥ कमलज ... स्यामघन

प्रजय पराजै ति नाको मघन करने वारे ते ही जय हो॥

प्रसा प्रजय विपदी॥ वरवंड प्रचंड वि... प्रहरिं नवे ...ड

मंडन करना॥ कुमदवंधुरघुकुलंकुमदं तिमरम

लनं दिनकर दरन॥२१॥ जयति वकीउद्भर नंदरनं ब

कंसकटासुरखंल॥ इंद्र के प ... जयति वन्ह

मइ जंभनल॥ कालीदमनं कृपा[illegible]ल जयति रस

[illegible]

[illegible]

राधा विहारी॥ निरगनिकंदन आपजयति जय प्रन

लग्नहारी॥ मल्ल सल्ल चाणूर दर जयति कंसगर्द वेसंघ

नो॥ पटक पछारन जयति भुवि वासुदेव प्रसारनस

रन॥ २२॥ जयति विमोचन वंदि विबसवसुदेव दे

वी॥ जरासंध मद दरन जयति सिसुपाल सौदिकी॥

संदीपन सुत राव सम न जय जयति मुरारी॥ स

वल्य भरदरनिदर उपारी॥ भक्ति प्रताप

प्रसिद्ध हित जय जयति धरनीधर धरमंधुर॥ लाल विज

सारथि भा जय जादवपति सुरनसुर॥ २३॥ जय

ति प्रभव पद दानि शरणागति प्रगतिप्रहारी॥ द्विरध

वीचि विलास सरसमु जा विहारी॥ कारण क

रण प्रपाल प्रनव स्वर प्रलय विधारी॥ जयति वाल

जय हे बालरूप हे करवटपर
स्थित हे नुवारे प्रेरि ... जो है
मारकंडेय विधि ... मतिवारो तिसके हे
... प्रलय ... के करनेवारे ।। १

वटरूपं विमतिं ... के ... नककारी ।। लालं मनतं भव

भयं हरनं जयपति वद्रकाश्रमं तपी ।। करे मुक्तं कलु^

षीं बुधीं कूरं कुंभं नकायरकं पी ।। २४ ।। जयति प्रजा

मिलरदिं भदाम्भवभीरं भयानकं ।। मच्छं कच्छं व

ला बोग ... की बान

पुधरं नं जयति लतात्मगुनषानकं ।। गच्छं गच्छं ज

जिनोके हे तगच्छ गच्छ के दीन ... गति सारी ...

मे हेतं दीनवत्सलं गति सारी ।। जन्तसुतागतिस्वच्छ

दामिनं जपजयति प्रधारी ।। जयति विवत्स ... पादघर

१ क हाल मे ला खो क लपो के करनेवारे

वीणां लाद्दानं कलपनं करनं ।। लासदतं जनप

... तिनके पद ... करनको हे ...

जिनोके पद ... सहायतावर ...

तपरं सुरं विपदां पदानं प्रसनं ।। २५ ।। जयति करा

... तीको

जंजीर धरनं हरनं ... गफूलं विषमं बरं ।। कुवल

... वकाल ... तिसकाबधनकारी

यं बंधनं करनं भरनं भवं जयति चराचरं ।। विश्व

द्रोहं कृतं प्रधीनं मितं निजं भरं गति दायी ।। सा

संसार ... चराचर के पोषन करनेहारे
... संसार के ...
चराचर रूप ।। २ ।।

... ।। ६

नहीहै। अप्राप्ति अंत जाको ऐसा जो संसार है तिसके
हरने हारे॥ अपवान हीहै आदि अंत जाको ऐसे हे अ
पहो तुमारी जय हो २

॥५॥ वि॰
ह॰
१०

विगतानंदकंदजयपति जयदीरघिंशापी॥ अगुन
मानरहित
अप्रमान
अमान प्रमान विनजयपति अनादि अनंताकर
अनुभव करके जानन जोग्य
अजन्म अजय
अनुभवगम्य अपार अज अजित जयपति श्री
कंतावर॥२६॥ जयति सुरसरीवरनंदरमंका
वनवदवकज॥ सिंधुसुताकरवलितनलिन
जनलालितसरज॥ जीवनमूरिमहेसजग
पतिजनअभिमतअवधी॥ ब्रह्मसुवनमान
भ्रमरभ्रमतनिसवासरलुबधी॥ सिलआ
पसंस्रुतसमनलालविसरजिदंविहरिजय
उरगारिकालीउरगनिरविनिलमेंथिनूहि
य॥२७॥ वरहीकंठललामप्रभाजपतनकितिव
अंबर॥ धरनसुतंचरमालअपवरवनमालविसु

जयहेतु अस कोई सपावक देजे अनिलोक
नाहै सो जनम के मार्ग की सो तावे हरने हारी है ६

दर। कुंडलंवानननंवालितं जयति मुकुटामि

तं छविधरं॥ कौस्तुभराजतकंठलासतग्रीव

त्सप्रभाकर॥ प्रतिअंगुरीमुद्रितनवलितांब

गुरवाहुअंगदंधारनं॥ श्रीवत्सचक्रंगदंपद्म

सनं जयति विद्युति भवनं भरनं॥२८॥

जयति विलोचन कूपाशमनपद्मलोचवि
जनेम जनम की जो जरन काम क्रोधादि

मोचनं॥ जनमजनमउरजरनं जरावन
के के उतपन्न हूई हुई तिसके दुख दूर करने वारी है जनम... चंडा लौ प्रसिद्धि को कीमा

जनमननपावन॥ जयति कुवरधुवकर^
^अविलसपरग्र वानी मतिको प्रबल करने वारी

नप्रबलमतिनिपटअप्रवानी॥ प्रणतन

काटकलेसकठिनवृत्तअप्रकटकहानी॥

द्रुपददुलारिंदवानमहिजयतिजयति
लज्जाप्र... स्थिर करने वारी

पतिथितकरनं॥ लालमननंजय जयहं

प्रकाशनोत्कैवकठनाकलेसोवकनाटकाटहैपक्रकरिवंशनमीवकलीहिव

२० वि
ह
10

लालकहितहै हेरूइत्रिसरूपा ग्रविलोकनकीजयहो केसीहै दीनोकेसुदरूपी ...

रिंमुदनसंउसंतिहितोधरनि॥२९॥जयतिका

लकेकालसुईशानईशाहपानिधुंसाजन

केग्रदिराजजयतिमहाराजसिद्धनसिद्ध

जयतिग्रमनवेसमनस्यरवेसरप्रकासी

वेदनवेदग्रह्मघउदधिकेउदधिमहासी॥

देवनदेवरूमभिमुविजयतिप्राणकेप्राणप्र

मु॥लालसुनेवसुदहरीजयतिपूज्यकेपूज्य

विभु॥३०॥दारदरिनकरहरनजयतिनिर्मलपा

रजलधर॥ग्रवंनिवंधछनदानेहेतुजयजय

हरिसुरतरू॥शंकरसुमतिचकोरसुतासुप्रद

जयहिमकर॥निजजनदासुरमिग्रन

गणजनकपुरंदर॥दुकानंदुवनंदेरदु

महादेवकीश्रेष्ठमतीचकोर सुताकेमुखकेदेनेवारेचं द्रमाहरदसुमारीजयहो॥

दुख जो दुख न प्रातु ति जो की दु खकी दरर
करके दुखी है पहै पे जो दीन जन नंदे ति
नके दुरग विलास प जोतु मेहै नुमारीज
पदेौ प्र कंधनु जनुदीन जन नंदु गीति अ
रप्रागलव है टेरी ७प्र समरथ भए १ ।

खी वंदुँ [illegible] दीन जन नंदुर गजय ॥ लालभनत

मन मथ विषय जयति भीम भव हरन मय

जेल कृती मेघ
॥२१॥ जयति कृपा पय पर वयो घरं वद्मापति

७प्रति प्र पद
प्रभु ॥ कंध तल सन प्र १ र कल्पतरु जय जय

उल्लावि मदहस्त
परविभु ॥ विमद विराग विवेक विभल वि

जगहित मेतत पर ७प्रनंता
धंवरन विकासी ॥ जगहित निरत न ७प्रत

प्रेरक तुलसी लाभ ... पानी देना सकति
नियंता निधन चुरासी ॥ जयति रारगा संस

सुखके देने वारी राक्षी कृपारवयारे सर्वहित कति
तेरस मन्न सुखद सन्निधर रसनर वदित ॥ ला

सुंदर कीरत ते कलित
लल ललित कीरत कलित जयति जयति जप

निरधनों के धन
७प्रविजितविता ॥ २२ ॥ जय सहाय ७प्रसहाय जयपति

समरथ ७प्रसमरथ न ॥ निरवलके वलदेव न

ख ऽऽ
यातिदु खक कर क्रकरषन ॥ जयति ७प्रमान नमा

वैराग्य विवेक नाना तत्की ७प्राधिधा... चारोवर्णी प्रकास करने वारे ॥ ५

॥२१॥वि.
१
॥

न्ऽप्रयति पति पतत उधारी॥ पद हीन के पद जा

(ज्ञान वैराग्य नेत्र)

यति है कुंठ विहारी॥ नयन हीन के नयन [illegible]

[illegible] बुद्धि हीन की बुद्धि वर॥ लाल सखा साधन र

हित तिन की साधन सिद्धि [illegible]री॥ २३॥ जय

(द्विपत्ति रूप रोग के नष्ट कर्ता धन्वंतर)

ति विघन तम मत्त सूत्रा विघट रु जगति धन्वंतर

लवन मेघ जिहर रवि तप्र भाति कोटन मन्वंतर

जयति दिवाधि [illegible] ब्रासर सन रह्मा ऽप्रति स

रसी॥ समन त्रिदस सरि उदक जयति उग्र

तर दरसी॥ महा मोह रघुर जुन सचिव का

म क्रोध प्रस लोभ मद॥ जयति परमु धर ऽप्र

ति प्रबल नाराय[illegible] [illegible]उद्धरन हद॥ २४॥ [illegible]

(सर्व साधन रहित जे पुरुष है तिन के साधन की सिद्धि रूप है)

जयति भुवनम्ह(ख)म मरनमव जयपभुवनानी॥

मगतनम्ह षितकीनं भीरहनं अभ(म)त दानी॥

॥प्रस्तरनस्तरनं प्रहरनं विघन जय जयति प्रका

(संपूर्ण ब्राह्मणादि वर्णों के)

मी॥ करनचतुरभुजवरनं सकलं वरनन जयस्वा

(जन) (कु)

मी॥ विश्वविघनवारं विपुलजैनम्मितं कहिलालंवि

प॥ विरदं विसद दिस्तं लोकत्रय सुर नर नाग नंदनी

य॥ २५॥ जयति तरणितर तेजं तीव्रकोट नतनधा

(तिरणपकुलवदित)

री॥ त्रिभुवन ताप दि लोकं दितिज दलित रहे निहारी॥

सुनसुनं सुरनगुंकार सुर ति सम रथ है त्यागी॥

(ख) (बे)

प्रगटनमाद्वपालं निरख विधि गति स भागी॥ भको

विधवी ग्रहण कर्ने जोग
मां कर्मों की गति दी

॥दावरवमरल
है तिनकी गुवार
की सुरत राजी
२

रंडकक्यादंडकाविराप
काजोदंडपाकवी करा
श्रकके नूप्रा नाभिस
केविषंडनमे एकमीदंडन
लगाया

१२वि

12

दुर्वितप्रहलादजवदेषदासदरवीरप्रभु॥ धमका
रनहरण भए जनुदनिधनहितवीरविभु॥

२५॥ जयतिभालंकपिकटकंमत्तरजनी
चरतारे॥ जउचैतनवनमीवंधानंचारहुनि
रवारे॥ दंडकविपनंविषउदंडकवीदंडन
लोपा॥ शोकश्रमतसुग्रीवशोकहतंकठल
गाया॥ जयतिजयतिदसरथसुवनदहनदुख
नदसमुखे ॥ प्रवधरजंरजाधिपति
रामचंदप्रभुविजारखन॥ २६॥ विषपवि
लोसप्रकासउउततवलगमनपदी॥

किचानवीजदिसेव

सोवरं सकांक्षिवामगीलतनाहिं जवलंगमकी

[illegible]॥ १अवगुनं चुगनं१अगारस्यनवल

गवृद्धिचकोरी॥ जवलगंमजनसस्सांक

(औरी क्या राखे १ औ चं द्रमा)

भक्तिराकागतिजोरी॥ उद्यानहृदयपं१अका

(भावमानसितिसमानि॥ लाल)

समदि सोभन्नसुषद [illegible] शंभुंस

नकादिश्रुतिसंमतसारदसंतमत॥ २॥

(१अतिश्रृद्ध)

जपतिविशुद्धिविवेकविस्वुवारधितनयाव

ति॥ १आनंदवर्द्धनननमिनटतालनिगधस

विनगमति॥ भक्ति१अकाशपतालअगजल

१मदिनंमाहिं॥ १असुर१भरिनेवमध्यंकानस

करदवजिह्वठाहि॥ रहकोउपंजिमस्तमनम

(वस्तुमे)

हिवासवासजिमसचगति॥ लालनय

२७॥वि
३

13

तिसरवसजननावंदनीयंकुद्गादिपतिं॥ ३२॥

जयतिंचरणांजलजानस्वनघमुक्तांच्छवि

छजनं॥ ध्यानजनितस्वविपलकंदितां

सांरंभूतिंसाजनं॥ मन्नमधुपवंरंदितलं

वधंसानयादिकंथिंरसां॥ जानतंपरसंभ्रताप

सुनगंतिथौनानमकधूजसं॥ लालसुरपस

लालसुवस्सदनेनजंतजसुकृतांरवसुमतिं

भाक्षितहैं निरमयंदहितविप्रंभरजयजय

भावितविरथ परहित

भक्तिं॥ ४० ॥ संचितकर्मगंप्रकेचंकेवंभ्रागा प्रारब्ध

देव

मीवहुनंगं॥ इह नरूपादावाभिजयतिवेस

घटऐश्वर्य

वजेतबरभगा॥ मनासिजंमदितमनोरथ

भक्तिभविंडमनेगेवासो॥ नावसम्रपमवप

द जयति जिहि ध्यान प्रभा सौं ॥ जयति विलास नादिव

धविध प्रबलत्रुबसावर्नितर ॥ ७ ॥ ध्याजीवकवि

लासकरि जाहि निवारनचंडकर ॥ ४० ॥ ज

यति जनन जिहिं सेवाकरत हेलाहि बंदन ता ॥

भगमवासमात्रु गमकरनं जिहिं वेदनविवि

परमजे विस्टभी लादी तिनेवे करतल मैं गरुड ततवे
ते रने तारे

तं ॥ परमविस्टभनगरुडतावकरतलगतिकारि

हरविग्राधप्रपराधवीनप्रपवर्गलिहरी ॥ जा

संविसदवीरतव ॥ लितभवनचक्रदसंभाधरत

लालभनतजयजयतिजयविस्मभक्तिप्रदभग

४१ घवरापकर

चरित ॥ ॥ वलमलायमबत्राहिनसततहि

पाव

करपातकं ॥ नैवकउच्चस्वरकसविस्मरघवरं

बरेपातेतकतार

करि कारीक ॥ जिमविरहिं प्रतिदीनो ॥ निरबउद्दी

पंनंभावरि ॥ किलविलावंतनकंपविपाप्रसार

विवध विध कीप्रजोक सना सौर वकुक प्रव नीप्राह दनीतिलवे तले जोजी वठपाहप्र हैरेति सवे वकेके निवारन कवैप्रका लकरने वारेप्रचंड हैकरजाकी मैठवेस्व रुप

२४ वि
सं
१५

नातजाधावही॥संख्यांवाठैनवकलेशविमवसैघि

घातनंसगति॥नाथारणानिजप्रति॥जयतालो

श्रीनवरजेस्मति॥४॥जयतिविश्वप्रतिपा

लविश्वावासी दुःखभंजन॥जयतिविषमरि

नंदहनदेवदूषनखरदूषन॥जयतिजीवप्रा

धारपारनिरपारप्रचंडी॥जयतिविरदवरवि

सदवीरवामनव्रतंडी॥लालवदनपाधा

विवधतिवलवधौलञ्जीप्रवल॥जयतिहरनी

सउपलानिहरसुगनसमन॥ संकटसवस

४॥जयतिदेवदुखहरनदीनदानवदलखंडन

जयतिमदनमदमथनमदनोहमं सुहिमं

डन॥जयतिजरनंजरहरनजनजनमजनजारन

स्वामी॥जयतिजोतजगमगातजेतजामघं

श्रीजोतजिसकीजगमगारहीहै
औ जेत जौरहैजीवतिनके जाम
वचौकीदार॥२मफातजीवोकेरावक॥

मेगंनामी॥ लालवदनावै ॐ ठ पति जयपति

जयपति तावसुषनिधे॥ विसुविरजवागीश

वरदविमदवरदवारांनिधे॥ ७॥ जयतिध

रमदिजधरनिधरत प्रवतारधरमपति॥

प्रमितप्रधरमप्रभावकरतप्रजप्रजित॥

प्रणतारति॥ संतवमलसुषदेत जयपति त्रि

उदपप्रभाकर॥ नापकदिव्यप्रदिव्यसुदिव्य

दिव्यमनोहर॥ लालप्रवनतवसुजसम॥

नप्रारणगतिहरिसन्निधर॥ सुरसालसवत

सालनसमरसमनप्रोवसतप्रसनपर॥

८॥ जयतिप्रडोलप्रषंडप्रनलप्रव्यप्रना

मयांकठिनकालवलिकोटकलषकाटनकरण

मय॥ तनवतावकनमहरनानरणनर जनेजनाय॥

तववया तुम्हारी नसेन क्यो विरमल जो नवीन छवि है तिनको नवल निरूपन करनेमें सदा लालमति मंदको नित्यप्रति न जाने हरवेहू नई हदयवेने तो कौन जाररहे।।

15

२५।।वि

६

तातन।।नवसनलिनवानयन

नवलनवनीतानिवलसमन।।नवलनैंन

वनितनजरनवलनिरूपननासव।।

रहैलालमतिमंदवेसदानसोतानवीन

छवि।।४३।।जयतिविस्वरविरजविषयंव

टवढनंकुठारी।।विद्याविदजावरवानविपत

वेदनविवहारी।।मानप्रमानगिलानहाम

परंमानप्रहारी।।वंद्रूरउ म

वरुठउ वारी।।पततपंजपावनपरनप्र

वलप्रसिद्धप्रतापपरं।।लालमनतमवउद

भवरभरनपरा भववूरनहरि।।४५।।दउ

वछर।।देवनिजभमकरपरसाकर

नरसहैंवरवीनतप्रागुजर

जौनसे नु मारे विवेक जो रति प्रीत
ति सभी निरतनतपर है संसार तैव
राग वानी है ते संसार सिंधु तर जाय है
जनमा रवी ऊसी मै नहि पवन

संकारी॥ येतु नव [illegible] निरत विरत नत संत तज

लधि तरत तन द्रुपरत नजन मलकारी॥ जयपति

जिह्वा वस रवान निरवाग्र दहानि ग्रघ [illegible]

नेअमममेदनारुरी॥ जन्नसरवन्न अलपहतता

जनहरनन्नहानिरसहाकिरततसभासी॥ प्रद

दुपरव द्वप्र नुरुद्व कन प्रच प्रमितव द्वपर

शुद्धिकर नु द्र काल॥ एक सविवेक वपटका

नहि टरत जहि रन प्रविवेक वलिमकवा

ल॥ जयपति निरपद्वाचु विपति जनके हरन रद्दा

प्र [illegible] पदवदा धारी॥ दवसम प्रतिकम

लादी सवसादि प्रम [illegible] तुसहसाहि हिरएवा

देहासी॥ जयपति मुदपात्र प्र हसाति जननात

र तं चाहत नुमांत्र जन मांत्र दाहि॥ मारक

16

रिमज्जंमज्जगपविंगतिंदजंप्रभुपापप्रदिवंजेषग

प्रदिनी॥ जयतिसुद्विष्टपापिष्टतामष्ट

ततिष्टमदृष्टमतिवष्टहरी॥ वंजेतानंत

हर...नंतावृत्तंकरीशावंजेसुतलोचनगतिचंत्र

धारी॥ वंदेविधिमिज्जंदरमज्जिंगिनसज्जंना

यप्रगटपुनसज्जंप्रदसज्जेहारी॥ नित्यदृढचितं

प्रादित्यकोटिनप्रमापद्मप्राभिततपरदज्जि

धारी॥ जयतिमुरवंदंपाप्रानंदकरवंदहारी

मंदकरचंदरुतमंदहासा॥ नीतपदभीत

हरपीतवरवसनधरवीतरतिप्रीतनिजगी

तवासा॥ जयतिप्रणतसंतप्रणपजिगिरवपनि

जेहितसेषवरणतंजतपविकारी॥ दारुदुषदद

भवपदनिरवृंदगुणा॥ जयतिजगवंदजमवंदित

री॥ जयति दारिद्र दुःख दारिद्र दुःख हारिणी वास सुदाम वर वि

प्र रिपु अधि मर्धघानी॥ वैनतेय केतु स्तुति नेति काई

सेतु भवनाम्बुध ताते उद्धृतारी॥ जयति मु

नवीबंडनाको मंडने करी

जदंड परचंड बल खंड विकट मुंड नवखंड रघुंड त्वा

दंड परमी प्रापको दंड है पाखंड रुपति मरको खंड करि प्र

मी॥ दंड परदंड पाखंड खंडन ति मर चंड कर चंड

चंडु ... ॥ जाको तकेमु जो

प्र खंड नामी॥ जयति प्रति जानन प्रा ज्ञानमु

मे कानन गहि कुम कानन प्रभि मान मारीके ... ने कोरे॥

जंबानन गहि ... रन घट कानन प्रभि मान मा

री॥ लाल तव चारु मानो कीरारुण मृदव रण दूरि जर

नजिव समन भिजकरनिहारी॥ ४॥ १॥ जनःदेव

दहिनि जग जन्मा निधि प्रास नकलब जगनपति सरित धार

नमक्त शोकहारी॥ प्रभि तव स्नान प्रति रोम राम

तरु सिर स... रस ते कोटि प्रति गोनित प्रभावी॥ उग्र

दिर एपाकी

प्रति रुप कर धर किरण ... प्रग्र घर मार दम्भ तेज शाव

नंउग्रंकर्मी ।। जयति सुषरवप्र ... पंम्र कासमं

हीमंभजिनानमी नभवमेदमर्मा ।। प्रणनजन

ग्रासव्रनप्रासद्रण करनहरनजम्मत्रास ।

ग्रासगासवासे ।। जयति सर्वशाम्र नेशाभप्पन

विरजभावनासज्रत्रधिभारहारी ।। नासीनरंत्र

स्तिनेदेपादिप्रम्रपादि रउनसुषदलगललदनन

बेलाधाण वसनवारवरंबलागर्वभरप्र स

मरलग्रनवूं मुजदें सिधाण ।। जयति प्रवधेस

... षिभेशं विलुवाकपदनागरनसरसाल

वनदरनरहघ ।। सभगंसेवदधेतनवोरिशशि

दविदबनंदरशनानंददापकंप्रनपंपंविाँ ।

बिब्बनं श्रु हिमाष ग्रानाप्प दिजीनमामाना

पंपांरविदं ।। प्रविलभवनीश ग्रवपनेप्रनं

।अहै तकपा।अहितीगआनंदकांकद
मित्रहित
।अमरपतिप्रमितं।अहंतु।आनंदकंदं॥जयतिप्र
जयहेप्रह्लादके हित थंभतेनरहरिरुपप्रगट कारके दनुजेश
हलादहितांथंभनेरहररंपगटं हरदनुजेश
कीग्राग्राने हरेश
हंसमुदप्रदेसा॥श्रीमवपिरबरादिदेवजेहिता
हिंपवकांलउंहिपउरतलांबविबमंयेसा॥ज
ईश्वरेकाईश्वर हीनता
यतिग्रहवेशईशोशं।अनरपसमनदीनता
कोजो।ग्रावेश।ग्रा३ना।श्री।प्रतिकलेत्रिसकोहती
वेसंनिकालेशाहलां॥हंदारवंदमनंदरपद दीदं
।अग्निदाता
रनंदशांदिहनारदिजदेवकर्ता॥जयपतिसर्व
नंनिरवानंदापवंचरणपरसिं बिनाशीगतिं
उपाई॥परमपावनंपतितपररउद्धनीशंसालि चरण
सदैव
नंसालिनवकमलासदाई॥जयति विबुध
वरकेदेनेवालो।श्रीवेईश
शविहंगेशवाहनंविम्हवल्नंवरदशांविषयन
नासिकृपरब
विनासी॥परबपरलिंद्रपरमात्मापरमादिज्यपर
लक्ष्मीकेप्रकाशकारी
मपमपालपद्माप्रकासी॥जयतिंकल्यानकरं

२१वि॰
२॰
14

मनोहर

कोटिकंदर्प केलि कल्प नाहीं जा कर कमलंघा सी
९६ मिपर प्रगट पारा लसाहि वर... विपरम पद
पावि पद पूज्य भारी॥ जयति प्रभु लीन सकुली
नकी संकत जो विरदहित दीन जनकी नयानी॥
कालविकाल भ्रम जाल लाल लाल सम्य ध
रत धनमाल वर स्याल मानी॥ ४०॥१॥ ना॥क
मलो शा का तप्रेष सपनामसम पनाम अमदस
...वमलली ला॥ मध्य ताव मलवे प्रगटविध
चार भवनेज...पंज विज्ञान सीला॥ युगल
प्रभ करणमल प्रसुरज...गध्यान मेद्य मित
वेल वय व विस्तारकारी॥ नामकैट मनमधुकु
ट लीकर वसमहा कमलमवेवे वेलचार ता सुत
री॥ निरवमी मा सुर निरप्त सबसेव पतिसो

शरीवाइ ताहेवा

चसंत्र्क्षीवधशर्णचाहि॥ व्रेमगदवंठवहिरमश्रु
नेशाको नम्रवतीहपानिरबकेमभुकोभ्रे दखीच
भपार्वुलेनैननाभ्रिनिरबप्रभनीदमाहि॥

जपति जगदी शजगहे नुजागनेकरजातना

तूलजोरनवशान॥ १ग्रं त्रविभप्रहिरमहा१

पकेविम्रवाटपटपरमवि नतवधपान॥
पापग्रती मर्द्ध रहै तेसकेपीउ नकर्तीजेसका नामवनसी
पापपापीन१ प्रतिजपति पीउनकेरननामव
कुजीसरसहैभन्नाकीपीरवेरिनेहारा
सरव नसीपीरहारी॥१प्रापदूत१प्रापमे१प्रसुर१प्रव

लोपांपति१प्रसनदहिचहू तं१प्रामिबु१प्रहारी
छिप्र
प्रसवानी
सुनत१प्रजवानिदस्पानकारनहरी
सावधान रैवे
सवधानेहैदानवारी॥ देवदुपजनननदीह॥
निभि
दसनदारनमम्रत्रसलीलान ... त ... म
धमकाव त मनार
वंपसारी॥ड्राट१प्रसुरानंदूमंप प्रहरनेविम

घहरात गर्जन का
जो पी घोष धार है
सो पर कपाउ नहष
लेत मया

दुसहं संसारस्रमखेदकारी॥ उछलतजललगब्रह्मि
तं प्राप्तलंब्रह्मि न्नमैं ब्रमितजलजजात जं
तं संघारी॥ घोषघहरात परं मुष्षिपरमषि
ष्षद्भुलवाय ललनाहिं विश्रामकारी॥ ज
टाजुगवटतानलउत्पर कहुराह्वेकार
क्रोउवस्त्रतेभारीकठन
कुलिशानकाठि न्नभारी॥ प्राननप्रतिपालंप
ब्रह्मा की
ग्रासनहिंपीरहितांदीनजनप्रानपतितपत
नहंगं॥ प्रौढअभिमानकै [illegible]
एकलेहि
करतसंगरस एहुपाप्रसंगं॥ सगरिकेसंग
छम
मैंभक्नौंमस्व [illegible] करें भाषमैवसंभगवनंम
वारि॥ वेदविधिदेवें भदमैं प्रतिमिठनम
जनकं प्रवासिंप्रस्तासकारी॥ [illegible]

जलजात जं
तुं श्रीकास
धारी जो दु
लेत भुपा
र

[illegible]

पततो के
संग

हैं सन हरि
[illegible]

निरवक्रोधोऽक्लेशबन्धनातिहृदनन्दिवंधरनमो

वक्त्रं [illegible] शिरसुद्धिने ॥ मिक्रोऽप्रसुतानवीद्धापि

तिंसललवैभर्तृ [illegible] नपतिजितसोणमीने

निरमरानंदगदगदगिरः प्रजयप्रजयपारिप्रवि

कारप्रणतार्तिहर्ता ॥ मंदरप्रघवंदरप्रानंदवे

कुंदहरिंदनपगलालपतिरावमती ॥ ४१ ॥

पुनः ॥ जयतिपद्मेशाभ्रुसवेसवैराटपरमपद

दायंपातालपादम् ॥ ब्रह्मवरलोकंनहिशा

वं जहिसीसरुभ्रमप्रपरवहूलोकप्रगपा

नपादम् ॥ भ्रुकुटीविलासभयकारिप्रति

कालहैनैनहरिरोणप्रमितेजरूपम् ॥ जय

तिजिंहकैरप्रतिवेसंघनजालवरसघ

नसुबदयसुदरप्रन्दपम्र।७प्रघनीकुवरजुग

नहींहैसद्रिसजाकेजाउपेसेसेसगाय हैहैहै

जुगलजिह्नासकानाहिजिहसरसवेउसेबगा

रात्रीदिन आवेकासमझना

वे।सरवरीदिवसदुबभजनावसनिमबंपदा

कथनकर्केअवलीकाकोनसारहेहै

वरसुकवि [illegible]वलुषननिसावें।परमअघदुनंप्रघ

पवन

श्रवणदसादिशामहवीगउन्चासन्रवेस्वा

है

नी।लोभलावन्यमिध्यप्रघरतवभनत

जगप्रमितभवकीबानजोपापीचोकोहै

कविदसानगप्रतवरप्रमितमीतबानी।ज

सापविलासकेजोदासहै

यतिजिहदाससविलासमायामहाईदुदि

गकादिवलिवारुमारी।चंउजिंहतेनजवृत्नी

उनदिसादिसवैघोरन्चाहपवीगभवबरासी

जयतिपरदेवतावरसनेराजतावरागरदाग

रात्रीतेवेसाप संसारउत्पत्ति

त्रादिरजनीपसापम्र।सर्गउत्पत्तिपुनपा

व

लोनासमंकहिजनीनकायासुव्योहारनाथम

जपतिवीनासपती [illegible] भार।प्रथादघारोमस

जीभवरंगरूउगामी॥१प्रसिध्उवरीलसरनाथ

नरिनाडिकांउदरकारीस्रु१प्रथगादहस्वामी॥न

रकुप्रथं [illegible] १प्रहंस्कारत्रिभगारिजारिजपतिं१प्र

संबधनाजिरहवसनस्वानी॥१ब्रिंवरविसदनारि

बिमलब्रह्मानंद१नंदविमलसमनंदसु१प्रद्युम्नकर

नी॥चिंत्रमहिजनिचरे१प्रचरमपावरस [illegible] म

गवंत [illegible] ॥शरणगतिपालसुरसाल

सेविकसदाम्र१प्रह्लादपरानिरनानामी॥ज

यतिवागीशदेवंठवासी विमलवरदव्याधादिवा

रमउवारि॥लालहरिलालितानवचरणरतिचाह

रिनानिरुदनाधिपतिंवक्रधामी॥ [illegible] ॥

२९ वि:
६
21

पुनःस्तुवं ॥ जयति वैदेह्यमग्रीसुखंश्रयनार
नराभ्यवरनाराध्यां तेजरूपम् ॥ परमदयार्द्रवि
तदीनजनदुखनिरखतुरततनपदेत्रागतिवन
भवरूपम्ं ॥ जयति जदिंपदरवद्याकुलशाग्रंकस
लसतंस्तुभगधुजविंदूगतिदपसरसै ॥ पद
रतागतिदर्काँउँ ने भानद्रवतमारदैरंग्रामितसु (अज्ञान)
षवानं ग्रहैतदररसै ॥ जयपँ ति वततानिरितंवदु
कम्रमरंसदांनिरततपहिरतधरंब्रह्मचारी (वैराजक्रोधार)
वदापलरूचारंभ्रगविहूराजतालसित
धामगतिं प्रविल प्रघ९त्रांहसी ॥ लस
तभमचारंसंबाटिकरकलितचरपीतवर
वसनंध्वितउतवेसम् ॥ परमासोंदध
मुखनीलमाह्री नीलघनमोरकंठाभि

इति वृतिसुदेशम्॥ मंदमुसकानमुभका

नकुंडलंसं तलक्षिसुषमानादिसंदतार

नै॥ पविनप्राणतादिरामुन्नमणिकौस्तभंनि

रव छविप्राणि॥ कोमिंदुलानै॥ घोरतव

सोचदेवतानोकेसहितदवाधिपतिकरामे

तवतर्इन्द्रादिपुरंदुगम्नगे सोच देवाधिपतिदेव

ष्ठपम्॥ मारसनमानकरसंगकरपूर

वसरनलालितरंमारिसनवह्वरषम्

प्रेरपठवनमएवैठतिरूपलतिरूप्रगटरि

नत्यकीगते

राजपुत्रुपवनविविधम्॥ नत्यगतिगान

करेकीतालोकेतानकरके

सुनतनतनविध्यानंकरतालवरितान

करतीबालईन्द्रादिविधप्रकारकीमानकीडा

करमानविविधम॥ भृंगगुंजारप्रारामार

ललररहेहै सुदर वसलोकीजाते

सादिसललसतारस्मारसरविपलवनजा

करकेतालै तापवीनोकेकेकालितहै श्रवस्वरकेकेपनोप्रतिललित सुंदरहै

नपरमावीनकरवालितवरवालितस्व

॥स्व॥वि॰
ह॰
22

कामाग्निमरकयावहुत
ऽअतिव्याप्तरहेगाहैं॥ १

रललितऽअतिव्याप्तऽप्रतिरहे कामाग्निमरमं॥ नि

मषेकेऽप्रसंख्यलांडउत्पतिप्रलयकरतांजिरणव

निरषतेहो॥ एअप्रमगयेहैं क्रोध जिन्होंका

तिऽअतिविभ्रमभारी॥ निरषप्रभुक्रोधजातवोध

विसदवोधमेंहैं व९ जिनका॥ प्रगटकरतेहो थे अमितऽअपसरोंको मुरारी

मपवपुविसदअगटहतोऽअमितऽअपसरमुरारी॥

देषकेतिनोकासरूप

चाहतिहरूपकामारिबललाजितहै शरणगतिभी

शरणकोप्राप्तहोते भए भयकर्ते भारीस्वरका संगहरणया है जिनोका

तस्वरअंगभारी॥ पाहि दीनोंहि हरदोषदारु

दोमाकरदामाकेधारणहारे

णरूपाकीनऽअसाध्यमध्यमाधारी॥ जयति

मक्रोकेरित वाले शरीरकोधारणवारे

ऽअव्यक्तिऽअजभनाहितव्यतिधरऽअगुनऽअविका

है

रऽआनंदरासी॥ मैं प्रतिरूपकोटानब्रह्मांडनहिके

मनादयवैकुंठवासी॥ दीनवत्सलनिरषदीन

लोभावेहेत

तिहिहेजयेदीप्ततोहेतउरवसीऽअनूपम॥ रजनि

ऽअहलालकेव्यालांतवचलतपीनिरषकरकूपाभ

भयकरूपोनिकाल

वेविगतिरूपम॥ ४२ ॥ पुनः जयतिकरतारतवरा

कंप्रवनार्येदस्तनंत्र विभास्मेंदं सर्वसम् ॥ वाधनि

जजस्मैं गाधकुलचंदलप्रसान प्रवनारंदरि

परनासम् ॥ जवनकतं प्रवधमैं जावं प्रवधा

धिपतिं सामनिजसंगले गति प्रवासम् ॥ तेरण

वरवंसं प्रवतेसराघववलीं तारकासधिसु नव

न विंसम् ॥ जानजउवरपतीं कोसकां मिनकें

यतविवधविधयज्यस स्वास्तिदीने ॥ प्रायस्वस्था

ननिरभयसु तवरता षिंसंगमुनिवरनं प्रान

दभीने ॥ सुनतउद्वार श्रुतिविहतमंत्र मठपित

दुष्मारीचंलवहं गसुवाह् ॥ वाधादितं जस्तकेप्रा

यगर्भितभए निमबमदिराम तितं रस्उद्धाहं ॥ जय

तिजवकनिभवनगगनमेछुरहिसदितमनिवं

दतिरहुजसिधाए ॥ घोरपातकमर्दं मध्यमपाषान

पगहुवनहि मुनिवधू दुख नसा। गमनकृत

जनकपुर भयमद मथ प्रवलशंभुधनुकठनहर

सियविवाह॥ कुपतभ्रगुनाथनतमाथगमनत

मगविहसुधनुदेवंकहिपाहिपाहि॥ स्रवदसमथसाहि

नंघवस्तातनगुरुआपकियलाभरीझवरव्याह॥ प्र

मरग्रानंदसानंदप्रजानंदप्रतिसहितनिजनंद

ग्रहगतिउछाह॥ वाकयपितुग्रहनकरविपनगमन

नभएसंगसौ॥ मित्रसियसहितरामसू॥ व्योगवा

धाविषमविपनगतिरामकीस्रपतजटरगतिदेवधा

मसू॥ भगिनिमरवादवेमध्यमाहातानिकनभरतागतिवि

पनंकमंरागमहेतमू॥ धरमपपधीरनिजवीरने

हभीरसवचरनि जपीठदीपसुबनिकेतमू॥

प्रवधिवि आसपरस्यास आस्यासकर प्रवधआव

तामएं भइरं भागी॥ एकवार प्रहै तां प्रजा प्रथि लांघट
घटवसतां प्रभिन मुनि मयन गतिरतसुभागी

वासवरसंपवं वरिमर निक्षरि प्रथम देखप्रउर

पभई मदनवौस॥ श्रूपनखनाम तिह संगप्रउ

सीताकोअत लके हेत कपाकोकर सोउ तमई

स्रीवलखं प्रसन केहेतां वरिवदनदैरी॥ सेख

प्रपता रल खलखनं उरभाव हरिनाकर

रकान कतां घोर रुपा॥ जाय खर प्रादिसठं सहस

चौदसंत हां नासवर गई जह लंकपरा॥ दुखहं

केसांमारीच निज संग लै कीनत कपटमायाक

रंगम॥ हरि छल जनक जांप पगहे प्राहनजा

यरत वसंदुरगम प्रभं गम॥ सियविन वासल

बंधीर खग वीर गति मनजर तवे सतादि सरस

गामी॥ प्रथवसं तापवं उरविरहव्याकलसवरतागर

विपनमें प्रवेश होना हो तो तेगीधकी
वध्या वत तूत के श्रीगम की तुवनमें ॥ प्रोड्ड

दसतकी निंगति विपन स्यामी ॥ सिद्ध तप [illegible] थनं करता

रसवरी अध मसाथ सुग्रीव कता प्रीतं भारी ॥

तालसप्त छिदर सब्या सिद तांक सरं कीन सुग्रीव रा

तैके प्रोड्ड बदहै वकी

ज्याधिकारी ॥ वासकर गम ढ्दि परं दुबदव क्ष दिगतं

सिप सोधा रिते

सिपहितं साधह मैं तग मने ॥ नासकर विपन

हनंगम ढ्ढरह सवं लप सिपसं देसंगति तामसरने

मालमरवटवली संगर घुनैद लपविंघु तटवा

सावत दीन दानी ॥ श्राव मन दीनं प्राधीनंद

ससी सकोविंद गहि शरतादि वंसं वंधानी ॥ वां

धंवर सें नंगगि संकं भ्रंगदवली वहु तसम मजायदस

सीस माप्या ॥ दुष की कूरता प्रान हरिसनं वाहि

अमितं संगर भयें बलनं साप्या ॥ भंसकर तादिघ

नेनाद संघारं नवहु रत्नं वेषा गतिं रा षरारी ॥

डोलब्रह्मांडं ग्रहि कोलं संकुसममहागिरताललके

श्रा ग्रातिवलिसुरारी। रश्मितउत्साहसुर साहं श्र

वतमग विविधजयजयति उस्तातउचारी॥ कीनल

काधिपति हरतं [illegible] श्रीवराराम सियमीलनविरह

पहारी॥ मधोनलकारूढं सिवसहिताग्र

लवनं सरजादिं श्रवधहिं सिधाए॥ भरत दुख

दीहं हरं वंदनरपद वहुरंमातपदनाग्मितसुष

श्रमितपाए॥ मण ग्रव धाधिपतिं ग्रमरं दाव

ग्रमरं ग्रजितं ग्रविकार ग्रानंदकर्ता॥ लालम

तिमंद ग्ररविंदपद रूचि सदावहितसारे हरु

विज्ञां सु [illegible] ता॥ ९ नः। जयति मंधुमद

मथनं वासुदेवं विततं घरनिभर हरण कृत

धात हारी॥ प्रणतजनपालवसुदेवं ग्रन्हादं

[illegible] वि

ह २५

25

हित प्रगट गति नंद गेह व्रज मसारी ॥ ग्रेर बल

वंस जिह निधन हिं शतनाग्र प्रग्रकुच विदम

विबं मे लगन मनी ॥ निरख हरि प्रकलय दिव्य

रुपा [illegible] कुव धिरस मे दीन ब्रज राधे चरणी

पान कर प्रांणाप यपान येवें रत हि परम पद

दीनं निज मान ते केरी ॥ प्रमित प्रथव कस

देवरिषके श्राप मै साप दूर

कटरेव [illegible] विस्राप गति जुमल प्रर्जुन उ

व्रतघनेरी हे त्रिभोके

धर व्रत घ नेरी ॥ जयति गोतीत गोपीन

क्रूर कर्मीके अपहारी

हित रत विवध वरत मे क्रूर कर्मा पहारी ॥

नंद नसुमति सुबद गोप गण प्राण प्रमेह स

तोविद्य धाधि कुंजन विहारी ॥ जयति राधा

रमण रास रत [illegible] प्रमित विघ काम

मोहित व्रवति जन उधारी ॥ करज धरगि

ॐ

श्रुत्वा कंसानां धौ निधनं पठवह जनेश्वारे वदनं प्रह
री॥ प्रेमगोपीनकों निरष गमनत भयों सानगद
गदगिरा विनय भा[illegible]षी॥ कंसानपनाईं [illegible]ष्टैत
(जरासंध को)
पठवत भई मगधनरपं प्रतिचल्यो परम माखी॥
वार ग्रष्टादसं हे पराजय पं प्रवृद्धिं वहुरंयवनासुरह
(नासह ते)
हर नेहेतम॥ सयनतोन पतम चवंद मकाताय
विनकीन द्वारावती हरि निकेतं[illegible]नपति भीष्मसु
(रुकमणी)
ता लद्धि प्रवतार ति हरुक्मिणि सुपाल प्रति कन स
गाई॥ जोरवलदल विपुल मयपंप्रगिनितवसीप्र
व संकुंदन नगर व्याहतांई॥ रुकमनी पठि लि
षविप्रकर दीनत्वं पठव द्वारावती प्रभु समीपम॥
भागमगराजकर चहत हरि क्रूर स सनुरत गतिग
(वैंची)
होमम हूनं महीपमू॥ निरष प्रभु पत्रिकां वांत्तर

विरह तपका
गदकी

नीं विरहकी अमल उर लाय वाचत भ्रतारी ।। सा

सुबद

जसंघ दन तुरतें गमन ता भए गह हरन हरि कीन ज

नवेद हारी ।।७ अंबका सदन गति रुकमनी निरष

हरि मोहि माया विवस की नगारी ।। ताहि वाए द

भ्मजदुकुल नलिन दिन मणी प्रगट गाहि वाह

गति रुषम गारी ।। रमा सप विभ्यवति श्रीगमन

तभए जयति जयशब्द सुरलोक भारी ।। मध्य द

रावती प्रवस दि भूवन पती अष्ट वरनायका द

तसु रानी ।। भौम षल दुर्ग मै विविध वर कन्य

का वंदि महि मार वज गहे नपानी ।। विप्र दारद

सह

दुर्वंदु षित तीहि नारै है पठव हरि ग्रीरलाष विप

तभारी ।। नाम सुदामगति दुष्य पहि मित्र लष दि

नता हिज्ञी अवन विभव भारी ।। नेम प्रति गा २ रि

हिं
२ २०
27

प्रति

सुपालन्नितद्विजवकतं स्मरति हृ चालजनपाल

स्वामी ॥ धर्मसुतंजस्मर हिं निधनतां प्रभुस्वर

दीनअपवर्ग हिं हृगे प्रगामी ॥ व्याधचितजान

मृगं मारहरि चर्न सर तुरततहि दीन वैकुंठ दानी ॥

लाल अहि व्यालपरं व्यालवस कालसबं हरनभव

जालवैदरभिजानी ॥ ५५ ॥ छंद तोटक ॥ जयविष्णु

दयानिधदेवं हरे ॥ भवभेद विभेदनं बुद्धिपरे ॥ जय

अमेक शुद्ध स्वरूप
सदैव

शुद्धिस्वरूप अखंड सदा ॥ जिह धर्यवतां ज्ञातं महा ॥

चक्रादि अजन्मा सी है ते जिनो के

विपदां ॥ अजन्यासी सुचक्रंगदांकमलम् ॥ जयसं

सर्वसदैव है प्रभा जिनो कुंडलोकी सो है कु जो ले जो नोके

बधवंसुवभाधिमलम् ॥ जयकुंडलकाननं भान

अमल है आनन आन क्या और स्याम सुमुख न हि है
अमिता और उपमा न महाराज वैसा द्विसस्याम सुमुख न हि

प्रभा ॥ अमलाननआननस्यामसुभा ॥ उरआ

अनूप

गतकौस्तुभराजत है ॥ अनूप प्रभा पादविंडजतां है

हृ

व्याधि विराजतन वदां महा ॥ अंशावतंसानप्रका

जह ज्ञानका प्रकाश है
तिस हृदि में ध्यान आवे ता है
चिह्न का

रंगं प्रतुल्लंगरवस्सदेवपतिं गोपगोपीनगो

रलकारी। कंसागमक्रूरसनस्थार्थरतिंकरवि

मथुरामें हरिकी प्राप्तीके हेतु

नयपटवरजगम्भीरं हरि प्राप्ति हेतुम् ॥ प्राप

रजचंदसेनंदवलंमथुरीसंवदनोस्य

दरजीको

वरुणं निकेतम् ॥ रजकं संघारं सुजीय

रजकीके विषमप्रयोगकेसमयकी का॥

सुषदीनहरिंकूवरीप्रंगं समविषमकी

हाथी

नो। कुवलयापीडंदन्तसहस्रगजवलंघ

वलदेवजीके सहित हाथीमें दांत लेतमे

रतंपयहन्तं सहतवलंदन्तलीनं॥ रंगप

लंधनुकठिनंभंजंच्याम्रं हनंसल्लंपुष

दुबरा

कं प्रपरवलं संघायं। केसगरिकं सुबल

हासके प्रस

प्रसंजददंसके दलं प्रवरं सम्भं दिवं रवह

॥ देवकृत्तातिवकरोदिनदुषहन्तं सुहीं मातवि

वंधनके

तुबंध नहिरं प्रधारी॥ निरखनि जनजन

28

श्रम शुंड वितुंड नि सिंह वली॥ मल कुंड प्रचंड विखंड कली
जय मालि सुमालि विहाल करी॥ मन काल कु व्याल न व्याल ३ ३

जय हो प्रचंड जो अघ है सोई कि सा है तिसके खंडी
खंडनवा है

जय हो है तारक मुक्ति वाला श्री तारक क्या ताउ कु ताउ ना करने वारे ता उ का के अघ वा उधार करने वारे ता उ को वे

शंभ हं॥ जय चंड प्रचंड अघं दुस्तरम्॥ जय दाय
जय हो वर भगो वे मुक्ति दायक

क मुक्ति वर भव गम्॥ जय तारक तारक तारक के॥
स र स मी वी है

जय मार क मार भी मार ग के॥ जय मुक्ति [illegible] स
सु वर का मा पुहि सबल लोग प वा

यं सबलम्॥ [illegible] ॥ हैस
सु धर का मा श्री सबल है

हैर ने [illegible] रन जात सलम्॥ जय पाल हू पाल अनाथ
हे वाउ ने वारे

न के॥ जय दुर्भंद वान दुःशासन के॥ यह साल दया
प्रति दीन

वर दीन वरे॥ चितवे मग तो दिन रैन परे॥ निज
मुकी

वान संभार प्रनाथ हि तो॥ प्र[illegible] ना[illegible] नवा हि[illegible]॥
है न हि तै   ५६ ६८

[illegible] कि तो॥ [illegible]॥ प्रव नाहि नाथ विलंब वानिय
तं विरद वे जं संभारिए॥ निज पतितं पावन वानवा
करे देव प्रवनं विसारिए॥ मेरे अघ मवेर विचार है
जे विस्तार कवी न ती करी
रि कान कर जे नाहि न करी॥ चिन राख रे कोऊ नाहि सा
अरे को देखे
घ तो मन जस मुस्मो लख हरी॥ नहि जय नाग प्र जस नका

जन जान प्रा वल प्रताप प्राप न पारि पारि निस्तारि
करुणा निधान सु जान साहि व दिव दल रख रिप धारि
निज पतित [illegible]

॥ ॥वि॰
५८
29

रिभुकनितनेतिनिगमवषानई। जितसहसरस
नारदताप्रहिपतिसुजसपारनपावई॥ जिनह
पभवनवनापशंकरससनितनवदससई॥ तेऊ
नाहिनाप्यप्रघानिरषतप्रेमजलसुबवरबई
जपेरवदाहवकंददरनरुसारुषंदलकलरहे॥
लावन्यवपषंप्रनतरतिपतिसररसनहिकैटमप्रे
गतिदपं [illegible] पदलसताप्रंकुसाकुलसरंधानवारन
वनै। जतिध्यानमानप्रकासहुक तमहरतवरन
तकविघनै। तेई विमलपदजनप्रानधनत्रिहु
सेपद्यवद्युवपदलही। हिपधारविस्वरतरव [illegible]
षिमहि सेपजिहरप्रभिमनगहि॥ जिहरपरसम
वनताप्रसममपदिव्यतनद्यार [illegible] मिलिपतै
श्रमरूपपादवप्रनपमलसैंप्रीवाप्रीरसुरनतैं॥

जयदेवदेवअदेववंदतसेवजगपसेसवजे॥

तेईवहतसंसरनलहितसुचअघहतगहतसु

भेवजे। प्रतिकूलकूलसमलदहवंमलवरअ

नेकूलहे॥ जयसर्ववित्रयसुबसर्वदायकसर्वधारि

सुरमलहे॥ जयधर्मरलाकमर्मभदाकजातघ

टघटरमरही॥ जुभरपमपअन्तपभवतिपह

पमवगतिजनगही॥ दुबदाहदारदंभदूबनेद

हनेहरिजगविदतहे॥ मतिहीनलासविग्राल

गरिघजं ॥ ॥

दयासिंधुदीनावंधुदेबाधरदिठवर॥ तेरेविन

मेरेनाहिंसीसपर॥ साहिवसुजाननायगअ

पसोनहेरिए॥ कोनेदेनवाहि नाअस

मोमिवेरिए॥ आपवेनवनेअसीसीमेरते

२८वि॰
६
30

सरी॥रूपाँसमृद्धश्रीनिवासवासरापानीहरी

रावरोनदेहेरवैासुभाग्यदीनकोविरहन॥रूपा

केदहेरवेमैरावरेक्योंहैहैऊन॥करमकठोर

गतिकालकीनवाहिए॥येनवेनभागना

प्यमेरीहूंनवाहिए॥रखिएसुजानजोहूं

पतनमेंरसो॥रखवेमैरावरेहैसुजस

पहारसो॥देवतोविमानकेउगाहकंगुला

मको॥तातेवारवारमैसुनावतहूंरामम

को॥आवतकेमेरिएवकारकीनके

लाःसदापलमाकीजेसुरुतविहीनके

॥कवित्त॥कीजेनाविलंवअवलंवक

जैदीनानाथदरससुप्रेमकीपिआँपति

चातकीरैनदेनसैननाएरैनपरीहूंमाप

तैनकप्रैतै नहीन जोसचैन कीरूप नति है तिसकैतु सानैग्रवतकसुध। नहि लीन

तैनसुधलीनवैनचैनहीननताप्तकी॥ ला

लकहै सादिवसुजानश्रीनिवासनाथ तै

ननलनानसौं नितनपीसंगानकी॥ ह

नहै प्रथीनहै जसैनप्रपीनपीरही

नहैं नहीं हैं बसैन हीनचातकी॥ ५५ ॥ १न:

विरहनिहरेकीबडाईविसदाईदेवचकतचकै हैं

त्रिभुवनउपमानमैले है॥ नरलोकनाग

लोकसुरलोकस्त्रलोकशिवलोकग्रोक

विरहकी सेन ता सर्व लोकों में स्थान नहि रही

ग्रोकसामनतारहतिनहै॥ लालकहै दिगा

जदिशानवेररसतेनदीसजपरसविनसे

नताप्रलीनहै॥ छिरधिजाछेलछविछि

रधिजासँगगावेघोछिरहिछपावरहूदी

६०

नस्वाहछीनहै॥ ॥ १न: धास्या नर

॥ [illegible] ॥
१६ ६ ३०
31

धारयोवद्रिकाश्रममैनरनाश्रमलरुपजासमैमैतासमेमेहेदेवदेदीरसावी
दरिद्रतली[illegible]सुपैकी विपातरुलीधमकाधरूपभावदे वादलरुपीतिसदनेविके
केरुपीधनकीवधीकर्वैताक्यापिसधरूपके कूलेराप्रूजोपीरुपीको दूरकीनी
गमैसीदूरकुरीकहूदनीश्रामेरहनेनहीपाईदेषादिप्रानमैदीनोके जवां
दैकुवेरसदिसदूतीकरूपमानहैरहीलालमया॥ सानेपतालीलो लो
तीनेतापनतेमुक्तननकेक्याफेरेसीरेरूपतारक्यातपायनासनीभई
किसीको

नारायणरूपवद्रिकाश्रममैंतासमौविपद
घामदारिद्रनेग्रसी॥देवदेवदीरसा॥
ध धीरता
धीचारदविरदधारेवरधविवेकनै[illegible]
कलेग्रसी॥लालकहूँदूरकीनदूनीनरसु
नपाईदसादिशादिवेदैतीनौकेधनेग्रसी
तलपैवितलपैसुतलतलातलहूँवैता
६१
पतीनतैतेनतनकतापनेग्रसी॥[illegible]॥
कीजैदीनानाथदीनदेषकैंपारिपाल
जिसदपावैदिनदिनप्रतीमैजोदीनहोदुषकीभीदसावै तुमारेपाद
पातदिनदिनदीनदुषहदशानवै॥पाद
केमलमैप्रीतकीपरमभवनहो अर्थात्सेलारदुषकेतेहि ग्रानपडे
पोपयेजमैनप्रीतकीपरमभवहोलोकपरलो
तेनदुषोसेदुषतहूपा प्रीतहीनहोसालोकप्रलोककेतेसुषहै
कवेनपारसुषध्यानवै॥कामक्रोधलो॥
तुमारीप्रीतमैतनवरहूपाध्यानहूमैनेल्याया॥
लोवनलालकीलगनलागेमनगतिचंच
लेवलावेनजहानवै॥कुमतिवलंवीक्रूर

कुमतीकलंकीकूरपनजोमे है जैसकीकरणीको जिसदकाके हैरूपाकरकावहै वेनकहोकि को लसे भगि...

रूपनकी धरनी को कोऊ कालरूपावरवरो है

नकानवै ॥ ६७ ॥ विप्रलबा लिषबालिकालको

करलगतितवे कूरकामोकी

वहरलम्यक हैं लगवहै दै नातासबूरकामकी

जाहि उर दापै वीरपंडवसे पषीपतिहै नमेग

लेहै नसुरतधनधामकी ॥ लालसे ग्रधी

रवैौ नैनसैं महेकुपीर एवे ग्रंवधीर जावे करो

कूरवामकी ॥ जहैं नगिलानी गीधग

जेहरगिनतीगुलामकी गीधा...गामभे रहै

कागपदगामगमगर जावत ... गिनेगि

सकलकुसलदाषोकाभंडार

नतीगुलामकी ॥ ६८ ॥ सकलकुसलकोस

बसगानिधानमे है ॥ निलजनिलायकवि

वेनगमनरीतके ॥ पसपसमस्याकूटपंस

कामादी

नंपसादनमवाकपहैं से प्राशावीरावै

रीसुरीतकोंनमाधरतमावरलालकीग

२१दि:
६:
32

जहा पती मो लोको
मेरे को प्रभ प्रदेने को
लभै पन ही को ऊजन

चक्रवस्थपत्रिलेवस्तमरथनःप्रभीतकोसा
नेमदपदनमहानमोहमरथादमेरवेकोपा
सेईप्रतापदाऊजीतको॥ [illegible] ॥पकेधिमापतीप्र
भूप्रक्रीडतपततै [illegible] प्रनै छुपीर
औहहेरा। मैनदीनवंधुप्रसप्रानंदप्रंपदहेत
चाहेधोर भ्रांतकीदृकाविलेपनावेरा॥वारवा
रदीनजिमवनेहिरारीमरैतनछूटैमोतनःप्र
लोमाललाधेरा। गरम्रैगनैनवोऊगल्वा
रेगपवानगंगागपावोसोउपकारीगरवावेरा
६५
॥जयपवेरदै तऊरावरेदै दीरराशिपवव
लेवगईलाजप्रापवकेहेदीनकी। सवलभरे
सेतानतापतोभरेरासेठडेचरणारराणप्रपैद
नीगतिदीनकी॥ प्रवनप्रतापसुनःप्रारपनरिकेदी

तोणकी शरणजे प्रथ है तिनको
प्रभु पद जो तार ईश्वरी ताको
दूसरे को प्रापके सिवाय न है।

पावनपरसैंप्रेमसदेवलोवेरआधीन
सोमेकीलालसाउठगईहैप

ठलालसाउठीहैंपारतेरेवनआधीनकी॥पतितन
पावनवरहैंप्रभुतेरेपालेश्रीरैंकाजसरपतिपाले
६६
पापपीनकी॥ ॥आवबैरअरजाएकहीरहीवि
वासीमानजद्यपआनेकरुपकारपीछेहैंवरे॥सुर
लसदेरहेंदिएहैंजानकानदावसुरनरकिनर
जेजाचैचितभामरे॥लालआतिकृपनउदारदे
वतुमैनाथहीठहोपंस्थानस्वपरवभुलाधरे॥
जाचैमनविजगारिजनमंजहालौपाउंजनजा
बेतेजीव
६०
नदीजेजीउजरेप्रेमसावरे॥ ॥जपहीनतप
हीनभजनतितरहीनजन्मसबलखोबेरकाम
मातापिताभूल
कामके॥कापरकेपूतभलहुं हूंकोवलंबरूपके
लवलहकारकाहूकेनंकामके॥एसोलालपस्यो
आवशरएगतिहारीदयाधैसेवैनिवाहेंगेकिम

मेरेलालसनेहसे
पावनकी
पावनपाव
मेरैकाय
पादरअ
तेमिलावो
मकीपाय
बसतुम्हारे

हेम्प्रभुपत
कितेहैंमेपत
तेरेहेपाव
तेकेपावन
सेकरमहैरा
नेकतपहुके
ने तेरैतोश्रोर
के रैवैतोकोका
रवेहेतैप
नैरैहैरैत
हरेहैपाव
पीमोवेप
तेकोपाते

वंहू नामको॥ अजामिल ऐसो न अगाडी वे भयो
से भुलो तसी न वमै कहू पराभव है नाम को॥
॥६८॥ मेरी गति वौ न द्वीप सागर निवासी वीर
जन्म लै उन्य[illegible]कीनं लालसा सस्नारी है। अ
ऐसे जोर भाप है
जन वि[illegible]ष अवरु[illegible]नंन सरण गहि जाहि हे धार
ण न र अकति हिहारी है॥ विषय विलास के हुलास
आनंद है रहो
मै हुलस रहो। दीन भाग हीन कीनं तुम हू नि
तारी है॥ सोर के बजाने बलंलाब नं लषाप भव
सालके लषाप वेकी वारी आवदे घर हूं नहि
लाल के लषाप वेकी लषित न वारी है॥ [illegible]ाक हं
मोहं भाग हीन वयत धिकार जग अवमे लषत को
ऊं पाप पीन जान के। वडो आवरज अवतक नसं
म्भो रोपन अघ मऊ धार न धस्यो है नाम ढान के
लाल अति दुःषी है भि[illegible]रव अनादर ए पनतं पानै तो

पापीकेकी पाततेप्रापवेजानवे पततकीनेो

पततकीनेजानवे॥पापीग्रप्रमानवेकरैहैंजे

गमानवेंसुकोनग्रनुमानवेंररैपामेमेमान

के॥ ॥रमहिवमपीरहमरीनिहारग्रौर

वहजावकरैहैविपाडोटतहिंयामकी॥ग्रारतिके

साथीप्रभुहाथीवेप्रमादवारेतेरेहाथी

पाथीपरधामकी॥गुननिजहसवेगरीव

कीगरीवीदेरग्रानगरवस्योवेरगारजगुला

मकी॥ ॥निसदिनग्रावधेधवरवेग्रगा

ठग्रेग्रवरपततहूरहूरवेवरीवरे॥गरिव तलाज

तेननेवपीरमरमकीमपावीविहोवनातेला

पीजेविपाटेर॥लालकेनेरनुधीरघरेघनीछि

रधिवेछिनछिनछिनतजेपततनवांतरे॥वडे

कीवडाईवोरवमेंनलाईवेरवडोईविवादवलिवा

३३ वि॰
३
34

रतवि[illegible]वेश॥ [illegible]॥ श्रौगन अनंतकी न संवनो हैं नै

सपाधीन

के मेरे चरनवरत अवलों न भवपेर है॥ प्राकृत रूप

इन्द्री पंचके नाद सहै औ

नवु विचारि काल पास वध्यो कापरवलि त्रवलिन

वलीके नेदान हैं तिनो मै / वउ अजाझ्य है औ साकूर जो मै साल है तिना

मे मेर सहित है / पांको की पोष ना कूरने को न सीत जान

सन मे मेर है॥ ऐसो कूर लाल ननत जानति ने पे

औ आप स्यवस है औ उदस है औ सुविचार वोई के नित्य प्रति भरे हुर हत है औ संसार

षनाते स्वव सउदार सुविचारवे भेरे रहे॥ भवपास ट

रूप पासको टरनवारे हैं औ अमुरो की अनी पांके संघारक तौ है औ जगत के कारन

है औ से आप है के कौन कारन ते आप ने प्रन को नजात है॥ मे घीन हैं औ ऐसो नीन आप

रन संघारन अमुर अनीकार नजगत के कोकारन

ने [illegible] पा पांके पोषन रूप प्रनको

न हित जात आपको नजात है॥

पनेरहत हे पारजत हैं

पनेरहत हे॥ ७४॥ रा[illegible] ले हू दीना नाथ हैं। अना

थ बंग पेनासे सनाकुटं वकी वे डारी मैं कि तानिके

ता॥ ठैर है लोक मति महान मोह भील भीम बैंच

न विषम सर मारवे को है सुचेत॥ ३३ ॥ न घचाव कालि

कोल विवराल वाज मगमै निसंक कत लाल छाड़े

है विजेत॥ संकट हरन हरी अव है तिहारी ओट पा

७४

हि पाहि पीर तविषम पीरकै [illegible] अचेत॥ [illegible]॥०॥

दीननकोदानसमर्थहैं देवैं मैंकालोकहताहूँ त्योंको
मांसनमैंमैंग्रापकेगुनमैंदकोरहोहूँ ग्रवी
कौएतनेग्र सकानोग्रैग्रैसोदयाहोनहै लग्र
गाकेकेहेतहैं

तेरेदानीदानकोनदीसतप्रमानकछुदीनन

कोंदैवेदिनकहजदकारके॥दसोदिसदेंसवे ८

गपदहलखडेहेदरकदरारपरेकंचनवहारके॥ला

लकहेनिधनमैंचटपटीलारे मटपट ... परे

हेसमर्थदसरथकेपुत्रश्रीरामचंद्र

पलाप्रवनिप्रपापके।समरथदसरथसुवन

ग्रापकेदानकी ... सोमनमथहारी ...
... सोश्रीसमर्थ। ...

ग्रकपकपकपननसमरथमनमथहारिके

॥२५॥ तुमहीहमारेगुहस्वामीसबारामचंद्र।

तुमैतजपतनकोप्रपरनठामहे।जानतसकल

उरप्रंतरकीकरनीकोकरमदिऐजेमनवचक्रम

बामहे॥लालकहेनेकहपततपनप्यारेवीरमवते

मवतेउधारदिएकोउ ...

उधारेनरस्योहेंवाहनामहे॥प्यारेवकरजायेमे

हिमारजागिलानतेरूपछेतोसहजवानेकोन

कीमोवामहे॥२६॥जोपेदीनवंधुमोहित

पि
३५

म्यो रहबमावेरे ते तऊके तेरादावसरए पालदीन

को॥ जहां जापवाधतोरूपनवरमनमाहेपावे

नोलबते मोहूए लोभागहिनके॥ कोटकंप्रसा

धव्याध सर सत्प्रगाधमवसाधसाधवरखेरप्र

पाचप्रधमीनके॥ लोवमेलुपतजोलबाएंब

लेसबलबंलालननलबताकोहलसकारखीनके

॥१॥ प्रापसेसुसाहिबसुजानताजवकहजाउप्र

रेतामनननजेनमागेचेवनके॥ महराजदीर

शावी निपटप्रजाचीहिजेप्रथवपरंदरतेमंदरदे

मनिके॥ तऊनसहितमेजिसतंदुलनभभिपति

भिजुनकेचजनंमाधितनकेके॥ एसेपारजात

तजवंटकवरीरनपेवहाजाचरावोनिजपरव

सनके॥ ७५॥ तनमनधनप्रानसामरेरस

नेही मेरे सांवरी रूपा विना न सरत गरीबकी

मोलके सिरकों जिनकों ग्रास न वियेकी रहे ति

म मोहि येकी रुचि प्रीत नचाहे पीवकी ॥ ला

लन वाहीके रस सविनेएसी गति पानी केपर

सविन जैसे पानजीवकी ॥ रहे है निहारग्र

व सकल विहार न जप्रतर नतारक्षानि सा

कै गरीबकी ॥ ॥ सकुच विहाय स्वामी मे

रू कोब है दपाल याको है निवासकें संस

तनदीसमे ॥ मेरके तो आवसा नदी सनाग्र

लोकी मध्य आव जोनि हारे तो गाहै तब रोग के

मे ॥ लालक है काहेके अमावत रमानिवास

हो तो जो अपर ते पढावत गरी समे ॥ वडो पाप

पातक को प्रगट कहत हो पावन पतितपन प्रगटि

॥ वि
६.३५

36

दोहा रीसम्मे ॥ ॥ जावते जनन मज जग जीव
हौं राखो नाम कौन ॥ अघ वृन्द तारि को तैं जो
न बच्यो है ॥ लंपट विषे न साधु निंदक नारि
द भाखे ॥ ऐसे अघवृंद जो विधाता प्रोरस्यों
घर घर धन मद मज्जन के कूकरस्यो चाटत
जु ठार तिन्है प्रीतहेत पक्यो है ॥ कमलनयन
कौन हैं जु विनै करै लालमें हृदैन जोगन कु
नीच नीच न बच्यो है ॥ ॥ विगरी विलोक ॥
निजं हरको ठौर नाहि विरदतिहारो हे रघरत
है धीरको ॥ अधम उधारन कृपाल ताअब
पानी पनैक नसहत रत प्रण तजन पीरको
ऐसे चलि वांकुरे विरद की नितारो ॥ प्राट ॥ अमे
दानवारे द्रिढ मत मुनि कीरको ॥ समम्मत

नर

बिनकरवपविदुषनवारलालसेबल

नवरबललनवीरको॥ ८२ ॥ आपसेसुसा

हिबनवलावकुनमेरीजेपनउत्तितरंपा

निधानजानपे॥ ८३॥ आपदेवदेवलालसे

वस्थकन्तावपनसुनतजगवूरेंनगिसानको

पामेमेपरतनकनवोरश्रीनिवाससुनोकप

रकपतदेनपततमहानको॥ पोषपोषदेवनं

॥ अघकवत्रुइदेदेसीसवेवछाएकामिवरेन

वमानको॥ ८४ ॥ आपकीदयातेदुरलभनदु

नीमेरेवअभिमतिअसीन॥ आरतनश्रीनि

वास॥ वदविमवनपे अभागी॥ अविदुषनसेवि

दुवनमपम ॥ अदूषनदि॥ अवास॥ लाल

लबललचापलालसाकरतनाकीविनयविलो

नेको॥ आपकोसबकोचहैजातोतुच्छकोकयोवरआदरदेते ८

कैनती मेरी देवकै तास क्यांति सद पाका निरमल पात्र मेरे कौ कीजीए॥

ककीजै भाजनविविमलतास॥ संकटकहिन

विकटनकौ प्रटन ठाड़े सटन मटा सुनो घट

घटके निवास॥ ८४॥ विद्याहीनबलाहीनवं

धनविहीनवरबुद्धिहीनवाकहीनविसदवि

चारके॥ प्रेमहीनधनहीन प्रथमै प्रवीन

प्रसंपतिहीनपरलोकपासके॥ लालकहै

साहिबसुजान हीरासिंधवारे सभ ग्रगही

न आपे पारण प्रचारके॥ सुनवे प्रवाजके

निवाजके परजाहौ हु भाजलाजवकसांवे वि

भाजलाजडारकै॥ ८५॥ जहलगजोर मोर

बुद्धिकों घटे प्रबल जोर जोर घोर अघ कें

रनं कहै सुनाय॥ सकल सकट नकी नौक ह्वा

वहै धीर त्रापी उदधि अपार के नसीवरं कहै

वनायाछप्राधिहूं कृपालजो हूं कमवैकलोंचोहै

वहने काल [illegible] पवके

सेसविषवैगोमुषसहसविपुलगाय॥पादपद

मनतेंप्रमानविनंपायनकोंपरसप्रसारलाल

भालतें [illegible] लाय॥ ८६ ॥देषवेवरासंक टहै व

लिकालसेवोंवहसकोंपंजपजेगंगागमैंनंत

जगतकोरागमवनिहा

नकप्रमारहि॥रागमषमिहरनविरगमैंप्रता

कपटहृदीदरपावमै

पर [illegible] तोंदानदपांदीनैहै कपटनदमैंवहि॥

रामदम नोत्रासाधन

वोमासिद्धसाधनंसुरेशसोंसवसदेवसार

कहैंजगंनंप्रदातावरैवहि॥नारायणनाम

कोंनहेतंप्रबलंबवलीपाललाहिंषीनंन

ठीक

कोंकपनोलजांसहि॥ ८७ ॥पावनहसतंपरि

पावनंहसतंप्रसकोंपावनहूरनंजमंसदनभपाव

पापते जो [illegible] नहीकर
तं प्रभि तं प्रमापवकरा है

नै॥प्रापनहसजांसुषमापववरतंजोनजोष

पननेवांछतकरतमनभावने॥ लालकहैमाध

वहेफलजनतिहरेगुणपनीवहै सबैनसहस

मबगामने॥ घातनवरतअरिघातनलगत घर

जातनघरतवातवातनसुहावने॥ ८८॥ हसवि

एवकजेकुवानरतेदपासिंधकामधेनुकिवैछुक

हेनपरजेहै॥ चोरविणसाधुअसाधु निरुपाध

विणव्याधिग्रसेवीसेव्याधिप्रानहरतहै॥ ला

लकहैश्रीपतितिहारेनामनेमिलं वपततविजे

ईविणसुसंसेविद्यतहै॥ पाहनतेजलजानदेह

विनदेहमानहिजसेअजानदि॥ मानमानपति

है॥ ८९॥ परतिपलंपटअमितअघसपटजेसंकट

मिवारकीनेतोपरविहारीहै॥ अपनीतप्रीतकेपनी

तकरवेकीरीतसकलसवेलधरीसाधिवीदि

हारीहै।। लालकहैं विभुदेवरावरेप्रतापीनामरा

जसतुरंगमेधसुगतिविष्यारीहै।। रावरंवांहसंकेव

वंकनअवंकनकोसंकरनकीनेतोहअंककोअधिकारीहै

॥८०॥ दीनवत्सल जातपांतकोनजानतेरेघात

षातनाअघातभएबाजवेरके। जानेतजुठरेनानि

हारेबाटबारेनेवप्रेमभरेभारेनाविचारेवडीदेरके

लालकहैरहतरजसुवंसकेविसालहाथीसररजसुह

दसगलीसकुचगेरसे॥ भीलनीकेभांजननमैविधो

भलाहूनभएअसेवेरमालमषेभांजेभेरभेरके॥

॥८१॥ जैसोनिजजननदेसुन्यासुभावरावरोमेंउद

धिगंभीरताकेआनंदअपारमै॥ जगतनअवगुवाप

लतेनिकसमधछलीज्योंदेवजोगतेअगाधजस

कीवहारमै॥ लालकहैंअमितअकारअपराधनिध

जोगतेअगाधजसकीवहारमैहैवेउ

३८वि
६:

39

मैंकहीं नमतकी भगत संसार मे ॥ तिनके संजोगको

उलके वियोग के प्रहार का जो पीछे लागे फिरत है

नंतजत कृदानिधान पीछे लागे फिरत वियोग के

अर्थात् वियोगन तिलहसक है॥

भ्रहरमैं ॥ ८४ ॥ अंबरीष हेत दुरवासा की दशावि

दशा हू दिखानको आपके दासकी लोभ विधन हैर हिते है ॥

लोकि रसहू दिखान [illegible] तिअजुति दास तीरथधि

दुरवासा की दशा को और लोकों दुनीको

वासी वीर कहा लौ वखान करो विषकी विमति मे

वडाजे वैइ लोक है

बसारदवि आसकी ॥ लालच विसरे लोक सरस

सुरेस लोक शिवलोक ब्रजलोक और लोक आस

की ॥ रहि नरजहि छिरदीवनिहार देकी रसानरस

गईरतीते सतसकी ॥ ८५ ॥ सकल उदारन उदार

चेलामणि नाथ भिक्तकति हारे दरस मांग दैदन

यह भागत है

को ॥ रावरी रहन जेग मेरे उर ठौं उपजै मन कौतर

कन विहाय करे पान को ॥ प्रेमप्रभा प्रकाशनिसजग

पवन सपनउजावै दीव

तदुसह द्वंद्वन उनसावै सिवासम [illegible] ध्यान को ॥

आपका जो हीयहि वासा द्विस ध्यान है तिसको द्वंद्व तन उमावे

कृ

पहिरस समजै । अजलौंको सरस सुषवं मनसे जा

नवरैनैं धनंतें मानको ॥ ९४ ॥ अवहास्यरसांज

वंचरण पार एकरसमें उचितन । प्रापके । अनायरु अनाथ

को ॥ वेरवेंटेरवकेसें हैहेस । अच । प्रोघदपानधरतेंहि

नम्रनाथ जो मैंहै

पेका हैननतमाथको ॥ लालहै दीननको देदेवे । प्रम

पदान । प्रवकेरसंको चतहो हाषीवारे हाथको ॥

हैतो । प्रतिप्रारति नकहवेकी रीत जानें । कृहस्प्रा

ईद्राहिकोके नाथको

ईववतंकवस नाथनाथको ॥ ९५ ॥ श्रीरकोनरा

वैपति । प्रापके गुलामके रीसावत जगतपति सवरेगु

धा

लाम हैं ॥ जगनाम समवरे नैवकों नलज्जाकों

प्रेवरीब है नतेंद्रु रवालाकोकोई अष्ट नानमिलनामघ

। प्रेंवरीब हैं ननतें ईद्रिजको न ठाम है । लालकहैं जाही

भुजतरदिजवस्यावास नाहि वैस । प्रनादर भ्रष्टो जे

धामधाम हैं ॥ दासनदुरुहदु बदाहतनदामोपदा

३९ वि
ह
50

विहरचौडुसातनिनैउरगहोदामहै॥४९॥ धाजौ

नसैवृपालदीनआनकैनिवाजेदीनसंपति
धुरैसकी

धनेसकीनरचिहै॥ अंमृतगभसनकैज्यौंको

दवकैं भसमकौलालसानरहैतैजोंअविहै

लालकहैसवरींअलौकिकनवाजसकौसुरा

सुरसनकादिसवलैरचतहै।जेहीभातरंक

ज्यौंधनदपदवीकोचाहैवाहतहैंवाकरत्यौ

केईनाचनचैहे॥५०॥मारिवैअघारीहैंअ

गारीनासुनीअवेरटारिनाटरतजौनटरीतैं

विपतहै॥कौरति[illegible]उनारीभारी

भुवनमैविचारितारिअतरनतारनारिपांडु

वतहै॥जानीरीतप्यारीकृसवैरवंसभाम

रपीडुपदुलारीकीसमारीजातपतिहै॥कौ

मनिरधारी वारी लालकी जि हारी वलिहा
री जो विसारी सुधा प्यारी कसपत है ॥ ९८ ॥
विविध प्रकार रत्न जरित आरति सुवार भरी हरी
करवै नवल सारती करी है ॥ नैक हू न हिलाधरी
लिपट निपट लवरी ऐसी प्यारी नैन आगे
ववीपरी है ॥ लालरस भैरे नैन छवी जात वि
षमदारी मेरी हू ... वरी की परीमरे
सिरवरी है ॥ तेरे करस सरीते न सरी का वे
मुवि मरी है नैन नरहरी प्यारी नव सेवा री
है ॥ ९९ ॥ सर्ग गति प्रति विपद प्रवल
भई गिर गई गांठ आसत्न गर गई जी पकी ॥
जर गई सो अंबरी सप्रेम गौर विपर गई वर गई
प्राप आवरे गई हिपकी ॥ लाल करेहु

४० वि॰
हः

41

उगई

उगई हरि की छबि समता पांग जगमग धूसर रन

करै जो सेवबी पकी ॥ ८२ उगई भणा की गारज

वैधो वै

परकस गई गरर पर्दू स[illegible] न बस [illegible] गई धीपकी

वै

स[illegible] बेलबेल कै बलाक कौं सामद के प्याल

कामके मनो

मैन गंग्रा नी छवी बामद तिहारी ये । मदन म

र ध्यामै मन न सदा हीं अनुगामी है   कामम सी ग्रा जो

नै परपान मान सानुगामी मदनमै नमरी

नायका है तिनके पीछे विहार करने वारे मै सो

मानैनी नमगर विहारी मै । साहिबसु जान

जान हानर पीछे बेत मै

रतनाकर जा प्रान प्रिय दोउ जा जहान मै नत

मैने प्रापनी हानी न देषी

नतानि हारि ये । लाबनके लाल सी ल

नदीर   ववरे की बालते हीनी करी छिब कों की वरा की मै

लित बाल लाल पाप गञ्जा बालते बसाई

ब

विषय[illegible] बारी मै ॥ १०१ ॥ तेरे पाय पंकज के

भ्रमर

प्रबल प्रताप रस हिबला मलिंद हू मुनिंद

त्रिह   ईद्र की विसोतहू

[illegible] माते है । रमा नै छवै मवमु रसालो निर

[illegible]

एकतिरस
मैरंगोहै

सापूले [illegible] सुपनहूहै बतनएकैरससरातेहै ॥ लालक

हैदीनावधुछ्किसधिंनिवासीदेवंसमाजिमानजैधनहे

तसकैनातेहै ॥ तिमैतजांनिरतानमिरजतनकभयमंडरा

तपिरतजैविरहारसातेहै ॥ १०२ ॥ यहीलाभेदहवोतिः

तबतेपावश्रुद्धिकेअथिआत्मातहै इसकी

हारपदनेहरहैनाहीबेहहूनेप्रतिनिवटबरावैहै ॥ का

ताबव्यर्थहै ॥

हूकेनकामकीनेमालएवदामकीहैकामकोनचामग

हैरवहूनरावैहै ॥ लालकेहैरमाराजराजनधिराजवीर

भरेकाजकेतिहुरैषनउपावैहै ॥ लिजिएनिवाजभाज

भरेजहाजहूउतहैपनरूपीनावकोसजो

देवसिरताजमेहूरउतजहाजंप्राजसाजपननाव

है ॥ १०३ ॥ जैसीरीतरावरीनकप्रानदेवकीदयालनै

आनजैहै

वैकदीनकीनचेवतनिहारके ॥ आपकीकहालगवहै

मतिपंगलीमेरैरवरसकानतोप्रापहारके ॥ ला

लकैहैकुसमपभाजनविवधविधातजैभारनिमतजे

जैसेस्व१० धनरैतसमैं नातेतनत हैतिसेभी हीतरह सद्जीहं वधोकोत जकेआ १केप्रताप हपीरसमें फिरतहैरह एकतनेक भवनहीभी नकोजैवेत ग्यवानरसा तेहैतेईकस तसपवहोत येमंडरात फिरतहैश्रम रहरवहोउ

४१॥वि॰

फूल आवळ रहे । छील है कलनकी गिरी नवि धा रही ॥

तेरे छील छ कहा के विहुर कीना रहे ॥ १०४ ॥ एक

अंस अंस ते अने व लो व लो वर्ईशा सजन सुपालता स

ते अगिनि जहै ॥ औसी धाति हारी अजनताई को प्रतापवीर

वर जात सारद पनी शवि थ्यवत ॥ लाल से मलिन माति

को न गिनती मेरे है जहां पासे विमति अमित ।

॥ नारनत है ॥ दीर दीनि वासी उपहासी सी हमारी श

त को न है जु बासी गुनरासी तो रम्वित है ॥ १०५ ॥ वर ब्रजु

जारे जि सेव सुब कारे ते उभए तजन्य रे सु आभा

रम मभाजना ॥ और हमि हारे तेरे दीसत दुबारे का

ल पास मैं व धारे को न टारे दीन भाजना ॥ अव हम ह

रे यह दीवन दिवधारे आगे हाथ्व है ति हारे लाल वारे को नि

जेना सिंधु जाथि आरे सुन चार वाहू वारे अव छोड़ तोर वा

औरवारे १

औरकेदरसेतकोउकाजनती

रेभोरँकाजना॥ १०६ ॥ बोलकेजबलरुणग

गणकोपरवत दीनवत्सल २धीदे

णकेजबलदीननजनकोवछलंप्रेहेजबला

दूनसेनती

नंदूसेरे॥ प्रीतभावपूरोदपावनमाम्सरे

केसरकोचाउलोकाबेतकरने हार

कामकोटसोभकरेवरैसालेषतउसरे॥ ला

तिहारे सो कै

लवहैश्रीपति [illegible] नदीसैंउ [illegible] मा

श्रेष्ठ

न[illegible]पतालंभजलोकलोप्रभषेरे॥ मुकति

लुटैपावंप्रचग्रौघनकरैपोवंधुतीननवोभैपाजी

देवे

धरैपारैपादूसरे॥ १०७ ॥ दीनभीतभंजनरि

नेशामुनिवंजनप्रभंजनंमुसजनमुकीरति

मुत्लादि वंधनजोप

मुयासके। सबैजगवंदनवैवंदनानिरंजनहे

व दुरासाके

ग्रंजनं[illegible]हूँचदुंगंजनंदुरासवे। कामग्रादिपंच

नवेपंजनपरुपविलोकवौनसमेलालमन

रंजनंनिकासवे॥ पेरागेप्रविंचनदोसिवनंप्रवी

श्रेष्ठकीर्तिनतीराजासके जैलाबवलेकोपदवनरुप

४२वि
हि
43

नरपंचितनकप्रभीसेविम्भेकुबनकुपासवे॥२०८

श्री जिएकृपालप्रसवरूपतितिहारेगुणगणप्रेव

नाहरुभमरात्मेमनलालके॥

दिवसविभावरीहूजीभ्रहौंचचुनचुननेकनप्र

घावैजिमैअन्दिविसलके॥

जातपतिमानमालतीसुमनरसमधुपर

सालके॥पानकैमनपतिनरपतिवदीतजैसै

स्वातिजलललचाहचाहघनजालके॥२०९॥

निसदिनचिंताकीदाहतदुसहहछविनीकिरधि

निवासीनाथदपावैदुराईहै॥कौनवातदीनकी

वैदु तीसम्मारदेहप्रसेपमीहेवेकादपनता

दिषाईहै॥लालकोतिहारेपदपकहीकिप्रेसाविन

तीनलोकठहरकोठामनहर्दहै॥पातिरोगसे

२ कासेगके सोगके हि केगकाउपाव आपती तो
१ और जपजोगको अजोगको ईनहि जोहित
को २ २ कैरे

गकोवियोगकोउपावनहिं और जपजोगकोअ।

जोगहू नकाई है ॥ ११० ॥ दृष्टांतविजोगवारावि

ल तरंगे वीच

धकौ हर वीचरावतनकोहं रषवारेदी वजनके ॥

कौनकाजवैठनमैं सावरीसूरति नाथमेरे प्रसम

पमापरगई जजपनके ॥ लालकहै ललितअलौ

औदुषतेलन
रे औन

किक अमित गुणनिहर हैं तु दुसह भए है दुषवणके ॥

औरथै पकारणकोकारण नाहि मध्यवकपन संघारन

कौनमहि अघनके ॥ १११ ॥ वाघनके वीचजि

मैं हसलीसमीत मानकरनीलिकवके सरीनके चु

फेरेमैं ॥ दलनन मध्यजिमैर समासुघनीरतिज

निरंकजेका मीहैं

वतीनिसंककामजनोके अहेरेमैं ॥ लालकहै दुप

उःशासनादिके

दरलासीदुरयोधनके संगिनके मध्यजिमसंक

टघनेरेमैं ॥ तिसेवै टमारिकामकोह आदि पंचनमैं

पसाके ललित
अलौकिक
गुणकौन
नेहे ५

अघोंके संघा
रणकोकारण
आपही है

हसलीके स
सओके ना
सैतकि सं
पहे है मैं जे
से गई है

॥४३॥वि

१

44

त्रिनेत्र मर चेर ते

मेरीमतिभयभीतभईमिटमेरेमे॥ ११२॥विनती

गरीबकीकृपालश्रीनिवाससुनोसावरेसुजस

सुनोवेदहूपुरानमे॥तेहीहेतुकरजोरतीहोंप्रध

लापकेसेवरनीतिहारेवसगारवेनकारमे॥

लालकहेसकलवितोकिकेनिवासीजाचवोध

तलदितजतोतेपसेमपग्रलानमे॥जोनसीनद

हमैतिहारेपदनेहसोतेईदेहकवहूनमिलेदह

निमे ११३॥वारनारिज्योंदिषावेप्रभुचिरसताहावभा

वतिमहीहीपाएमेंदुभोवकेसमप्रकास॥तिनके

रसवसमनधनदैविसेसाववकेरे॥मेरेरसकंगमका

हैहेरदेउदास॥लालकीमनतजोउसवगुनतेहि

हीनतोउगनवतीअमेनगाईश्रीनिवास॥मालक

प्रधीनपरीवीनकोनिवाहनापवाहेतवेरेमहूपीकु

जो मैं सीक विताजु लोते रहत है तो गणिका कीकवि ताम्भैं ने हृदय मैं लौकोपनाहीत्ताजो जैसी है तैसी लागत है

टलकुवलीषवास॥ २२४॥ तेरे हैं वे चुके हैं श्रवते रेको

तिमाँ ग़ीला जग श्रवही निवाजो के निवाजो परसव वही

वियोगरूपी दाह दाझते है

दिनदिन हूं दुसहदाहतें विजोगदाहकछुनवसाँ व

तपदेषै तुमैजवही॥ लालकहैं निपटवटेरजासं

मेरे सब बेदो को बिसार के

न्ारर है मेरी वांटवेरमें विस्तारवे दसवही॥ अंतद

पावानहे भ्पाईजवे बेदहें देषदशादीनकीसं

घारंषेदजवही॥ २२५॥ जदपनदानीतवला

पककपाके लाल निपट अ सनतवादीमेंदरअनीत

को॥ पैहि तवदासनमेकपट जुगतवरप्रापनजना

वेंगरभावभावनीतको॥ परतियनिरषविवसद्वै वि

सारतमैतासअनगामीरहे त्यागकुलरीतको॥ न

रविनिवाजकेवनात तुम्मेहीरशादीचाहे

चिताके चीत चित का

सुनतइ॥ रहौ ऊट्क नातचीतको॥ ॥ २२६॥

तेईं धनवान पतिवान पर मानवारे जाति मैं प्रधान
अनमान गनै जात हैं॥ राजमान साजमान है
ननिवाजमान कवीनम्मतजमान भ्राजमा
नगात है। लालबा है जापर कृपाल वीर शाकीना
परावरे पचाजनै नहू पासरसात है॥ तेई
दानमान सानम नदेवमान वारे गानमाने है
अहान्त्र प्रानमान छजत है॥ २२॥ तरगए जगत
तैसरगए सबै कामभरगए कामनाना रसगए सुधा
के॥ अरगए कलिमलगरगेए मानातनभरगए का
म अधादि महान लिवधा के॥ लालबा है दीनाबं
धु श्रीपति पचाधवासी सावरे विलोचं हिं अरगए
सुधावे॥ दरगए तापतीनो ठरगए विषे रिव
परगए प्रेमनंद परगए हिपाधा के॥ २३॥

तीनो लोकोमै तिनके ठाम है
अर्थात् व्यापक है २

तेई विसराम धाम आठो जाम ते अकाम तेई अ
भिराम तीन लोकतिनै ठाम है ॥ तेई तमावान श्री
तरंग मै रंगे महान परम सुजान वेद नीव नरका
म है ॥ लाल कहै छीरसिंधु तन पर मलख चमीजे
ई अपनाए तुमके स्वाहा हो वाम है ॥ तेई निरवान
के विमान मै महान बैठ चारे ते महान चारो थान
सीन ठाम है
[illegible] है ॥ ११९ ॥ के तेजा वज्र वेता पत
वजा हि मालप मध्य करम धरम मे निरंतर दिन रा
त है ॥ जोगमै निरंजन शुद्धि संमत निरंजन निजग्रा
अमनिरंजन हि मकर कैलो जाते है ॥ लाल कहै पन्न
ग असन धाग दीना वेद्यु तुमै नहि जापे ताके सांते
सुख जाते है ॥ देवा प्रवरा धेकि नव मोवा सं साधे
अंग काटे हम दधे तौन साधे ऊराला ते है १२०॥

परमउदारवकृतारवरुचारवारेवारवनिहारका

लमेंवसेरेकौ॥ वारवारकीप्रकारकादेषोसहार

मेरे मानमकी प्रकारवारके

रहेंधारनिठुराईपरहारमानमेरेको॥लालकौ

एकवारवारप्रकारकासालदू जोआपके मानधारमै निहारना

अपारसालदूजोपरावारवासीमानधारमै

निहारसुवकारतेरेकौ॥सदैमदछारकारकेपा

सिंधुकानिवारगारतेनिवारवारपारनारहेरेको

धर्मकाधर्म कर्मकाकर्म

१२२॥॥स[illegible]धरमनकोधरमवकरमनकरकरम

सारोकासार सवसाधनाकोसाधन

मेमूलमेंसारसारमनहै॥साधनकोसाध

सर्वआराधनाकोआराधनजोआप आगाधजोवाधाहैं तिनकी

नेआराधनआराधनाकोवाधनअगाधनको

वाधाकर्मवाताआ [illegible]हे

वाधनअभूतहै॥लालकेवारिजानानाभतेरोना

सज्ञानरूपवातकोकेआनंददेनमेकोवादनकाभीवादहै

मस्वामीवातवस्तजाननजीमनकोजीमन॥

कारणजोहेजगतके तिनकाकारणहै निराधारजेजनहै तिनकेआधारहैं

नहै॥कारनकाकारनआधारनिराधारन

तारणकोजेसमर्थहैं तिनकोभीतारनहै

कोतारनकोतारनसुवारनकोसतनहै॥१२३॥

ग्राहकके जोग्य जे ७२ पु हैतिनो
मैं मानी
मानीनमैमानीगुणगाहीनमैंगुणग्राहीता
कीहिकृतानीप्रभुतेसमतिवानीहै॥ज्ञानिनमैंमा
नीध्यानवानोमैसरनध्यानीतिनहीप्रधानीम
ध्यसंभवजेहानीहै।।लालबेहंसंवरसुहियवार
जातमगस्त्रीपतितिहारेजि हैप्रेमरतिजानीहै॥म
कतिनिम्मानीतिनहीकेंगलकानीमुखविगताग
विगतहेतगई है गिलानी जिनी के ग्रीते है विरानी मैं नहीं वरन
लानीमैनवरनविरानीहै॥ १२३॥विषवनरति
कहेलोगनविरतिकान्तग्रंतरप्रगानिवाहुचंदा
स्वरवीरनकोमें लोके
नकोचरचो॥वरसनावूरनकोस्वरनकोस्वंपाकर
वहुनगरको केधनपापपरचो होनतीमे
यहिजनधनहीनेपापपापपरचो।।लालवंदी
रघातीमहाश्रप्रतिकरविनमवंसिंधुसे
नपारकोरचो॥पाहनकोबाधविनपाहनहजरयो
चाहोबाहचाहद्वारहितसुरतरुबरचो॥ १२४॥ॐ

॥४ दे॥ दि

४७

ओकहे ओरकी ग्रानवर्त्तकाजीकीवि करलेवनायेकरतहे
ग्रापसदृश फूलेहोसे ग्रोफलेहोये ग्रोफैलेहोये ओफवेसजेहोयेकल्पवेल्या
नकैधामकरके ओदयाकावापघकुहे तिनका ...
ग्रर्थात उद्धकामनहो ॥ ग्राप ... करिरसदृश ...
सकोवेरजाते हे श्री ... हरके ग्रापकाजेति

राधलेहु भवसंघहू पमैपरस्यो हूपालकाहू दीनग्रा

सविनरावरे शरीरते ॥ फूलैफलैफैलैफवैतोसे

कामतरू होउ धमदहे पथ के कोकामकाव रीर

ते ॥ लालहैर श्रीनिवासग्रापदो दिकासी छ षें

सुंदरविरद कैयोनपीरत हैपीरते । मेरीकरतूतपे

कैयोकरूरहूतनजातहूाकरूरहूतकरवें सतजरसरी

नवे ॥ १२५ ॥ प्यारेकर मेरीपतिराख लेहु

दीनानाथवारवारसीसधरोंरावरेचरननपै ॥

सकलसुबंधनमैंतुमहीसुबंधमेरे प्रवलसकल

तेमसबलधरनपै । लालकहै विभुरतनाकरजा

प्राणप्रियतहूतिवजदीनननके शिरसेग्ररिनपै ॥

वाहूवलीतेरीभुजै प्रवलीमे निवलीहै दुरयोहैं

कलीविलोकमलीगलीघनपै ॥ १२६ ॥

॥ अर्थदीपरत्नाकरे १

जद्यपि हैं कुपाउं कपट छल लीके पानौ कापन्न है
। और कुबुद्धि कारणनि हीन न कुजर हो है। और कपट की खान
हैं। सुजान और प्रधान और प्रवीन जो। आप साहिब है।

कापटरवु हीलवं लिमलवो भ पा उपा ऊजनदपिंकुव

द्धिकुकारणाविहिन है। कपटकी खान हैं। … ए आन
। अपकै साहिब सुजान प्रधान सो प्रवीन है। मैं क

मुष आन वे हैं। साहिब सुजान सो प्रधान से प्रवी।
पटके रतहै

न हैं। आपनी वडाई हेर लाल के निवाहनको श्री

पति न का रतु मै वन तक वी न है। रवंण वे निवाह

मौ न राह सो मुचाह चौरते ढूंराह को उछाह मेरेमा
जा रासी रमै

हरपी न है। २२। आस घट सव रो निवास श्री

निवास भयो तास को अवकास र प्रति आस र प्रमा

न है। जिस हीं विलै रके मह लस मै महा न ते जधा

रवै हुताल सलसन प्रमाण न है। लाल वाहै ज
विकै नास करवे को

मपास वास न म रास विधौ नास को दिवास मा
विकास को … है

न … कि धौ मास मान है। अमी भवरण कौ विधि

हैं नाभी मसो गको है दो उपन्यमे ज कौं नोग का निधा

विधान
प्रसवन

तिनको सुष
के कैं। तो और
हि पाहत है
। और हि वे मैं
। और रही आ
व है। और
सा जो मै
करहे है
श्रीपति
तौभी तुम
को आप
नी वडाई
हेरके ला
लके निवा
हके मै
आपके क
वी भौनको
रनहि वन
त ५

नहे।।२२८।।जो चातहे मननंदानी सि जिअा हूर रघदेवंसतसं
गंकीरतनमवधंगाहेतुहे॥ प्रेमरस पानमे जो सावदेई
ध्यानमेविरतिहे जहांनमें सुधितलवसुचेतहे॥
लालकहेंप्रावको नंअगमवर पालरलमेंसोधीन
विजयवारहें वेप्र वलहोगार होवे
कोजहांजरउत दिजेतहे।। हाहा वसे पायवसेर
आपमें दरते जो मोहिहसोंगे जो हां कौ वैरमें उहउहोहोमोगा
सोटसोमसेंधीन निजदरोहसां तो सों हरे वोन
घेतहे।। १२९।। सावरीउ ओर १ नरावरी
अधा संदे साथ रेसुध्यान रसपीवे मननयोर जो।।
रहे मतवासे सोंमहार नाहि ओरछोर एवेसंग
तेरपाकावंद वचनवोर जो।। लालकहे दीननकी वि
पाकी तुम्हे हीसरं तिह है तुहीर प्रातीवरे।।
तौलेकीतरह
मेर चौर जो।। वडभाग भागदें प्रभागकों सुजौ
नभागपापवडभाग जनरगमें अडोर ।। १३०
जो
जोनभागकोपापके
वडभागजनतुमारे
रागमें अडोलकीतरह
रहतेहैं

धि॥मिंए॥अनाथनाथदीनके॥अनंत॥अघसर्वघटं
तरके॥अंतरनिवासवान॥वासकादिसनमनादिवि
ध॥आदिके॥अनादिसेव्यव्रह्मवादीनके॥व्याधिन
के॥दरवान॥लालजनपारावारगतिनकेप्राण [कारने वार]
धारनिराकारकरतारविश्वभपटारवान॥तेरेही
वर्नतवनेवेनसीवव्याधनसेवारनसेवानरसे
वारनारसेअजान॥२३१॥सवलजनममेषा
पदिबेमेणाके॥विसेषपोब्यो॥निजपद॥व दिवध
जनछलधल॥आपनीनसरसनेवरसोरकी
नरहलीनीकरनी॥अधीनदेखप्राण॥अघगलगल
लालवाहेदीनानाथश्रीपतितिहारेंगदगदकेहे
नकवीवाकेएकपल॥देनदसतेसेवैविपापाकेउब
सोज्यानिवेसाज्यानवेसोहाथतेसेअागेमेसोगस॥

४८ वि
१
49

२५२॥ जगत्स्वप्नजालमें ऊपालसनसमाल रहीबालपालपालविषैष्यालमेंबलतही॥ प्रा प्रकीअवधिहोगयापरहै अग्यानी आगे कामके दिवसकामनीके प्रेरहितही॥ लाल कहैश्री निवासवैकुंठहीतजिहैबन्धसताको सतपापमानमेंगलितही॥ बसिजायअनिजा नजानकेसुमानसीजैतेरमानदिनजाकेंहान मेंगरतही॥ २५३॥ दे बिरहपालमोकुंपाकोशरीरव हैएकदामके नकामकरनकोबरहै॥ भावनाविही नसतसंगपलकोंभेलिसतेजातदरातनिमका परसंगरहै॥ लोभारूढकामकेमनोरथानगामी सदालालवाहैस्यानज्योविसतपरपरहै॥ परप दप्रदपूप्रावतीपद्मसमपावैवदंतसपरातिवदवरहै॥

(marginal/interlinear glosses: औरजैसीअवी; एकदामकेकामकरनेकोभीबलनही; पलपत)

परपद... [illegible]

२३४॥ जगनगी जठ्यो जगत में जगमगात काय
वालबेलबेली बै किका मसुबहु विरा॥ धनवेउपा
वहू षीवनन विविध घल प्रावनवगाई कैकिग्र
पगएहू वीए॥ विषैरागं जाकी उमंगमे विध्यदीन
प्रावनी उपरस्ता जनाई दौ महाई ए॥ लालकहै
श्रीगोपालकौ नैह तुहूं वपालसमेरलालसाल
घो
मिलौं [illegible] लनाहि लैहि ए॥ २३५॥ निपमनदही
देवस्फुरननतोरं जमनपतपकीनवधुकानको
करतहै॥ व्याधगीधकेहीं लभवलपावकीबकै
रजबचाएप्रगजामिलनंवको गहै॥ लालकैदेवा
दिधतनजाधव हीररापीकैघवालगालकादिको
नवहूत विहै॥ कालीमददमनचरलालकौनहै स्पुग्र
वकलुवनकाटतकटिनपीरहें सबहै॥ २३६

कैसेहूकुसंवरमैंकंटकनमध्यैदकैज्ञौनजौन
कालेसके
जीवनै१कारवीरगाईहै॥वठिनकेपेचनकैव
चकाटकरवमलननमैटमानीशरणाईहै॥ला
लदशाहुसहनिहारकै॰महीपशायीकौनेहनु॥
कृपासिंधुधारनिठुराईहै॥लाघनसवकोरहैलो
मेरीआईक्याबा
ढ़देको
नोंमुखमोररहैनैननमेंरायरहैबौरमोरमा
ईहै॥ १३७ ॥आजलोंजहानमैंअजानऔ
सहानहूकौअसिवडीसहूसीहूविरपानगईहै
आपवेघातनेतेजमानेहूविजानवीतेकाल
कालवलीआ
दिकेचहाने
करकै—भी
औरकीऔ
रनहीभई
केवहानेसोनआनआनभईहै॥लालवेरऔ
पतिसुजानधीरसिंधुवारेविदलीधवेरअव
कौनठीकठईहै॥सउमिरगईमेरीरउतजीना
गरजानीमेरीमतिभईहै
हीतिप्याउरजीविपदमतिमरजीसीभईहै॥ १३८

सेवककौसेवकाईयहहैसोमनदृढहै [illegible] वअरुस्वामा
नस्वामिकीसमुद्रमनैरहै ॥ आपनीउवताअ
रजगतकीचातुरीकौनिपटविडारप्रभुगुननमन
नैरहै ॥ लालदृढताईकीअमितसीमदीरघा ॥
अपनौअर्थ
पी सेवाजनतुमसौनिजार्थमनैरहै । विसव
र[illegible]चातुराईचातुर्यहीरेमणिसोवारवारव
विपदकेसंकटकौ
कजविमलविपदाहनै ॥ १३४ ॥ एसेमतलम
लवैनअनुकूलस्वामीरहैं लायवैसोभूल
नवैजदपकुमतिहै । नदवकृपानिधानस्वान
वानसाहिवहै अंतरवाहरगतिसकलविद्ततहै
आरतिविवरलषअगुन [illegible] दामाकीजैयैआ
रिलालकेकहेजेकरपतहै । दुषितकेदषनकौदेषत
नदीनआतादेषविजअरदयादिलहिधरनहै ।

॥५०॥
51

॥२४०॥ मेरेमनगम्रै न [illegible] विचारवेजेम्याहेदेव मेरेभलाकिपेतोनवनतवनावहे॥ पावनपत तपन [illegible] पालवेकीरीतठान्योपैरपकोपावैप लतिमैमोवचावहे॥ लालकहै श्रीपतिग्रपतिन कीपतिप्रभुमेरीपति [illegible] की जगतिकोगाहीउपाव है॥ भ्रमतभ्रमतभवसघनविपनमांजनमितनि तारदेहुभ्रमतकोठामहै॥ २४१॥ मै तोप्रतिपत तहेप्रापनीतावतावहेप्रोरजेवभंडलमैपा अनिसंतहै॥ जपवानतपवानसंजमीसुज्ञानवा ननजनंतयेपनकजेताघरलसंतहे॥ श्रीपतिदू पालसुनोलालदीनकहैविनैसवाउचराईसोनग रहरबंतहे॥ रावरीदूपावेवरतवपारपानिधान कोहै काहै कलुखनवीनेकलावंतहै॥ २४२॥

अभिलाषताहीकेनिहारवेकीदीनावंधुरहेहवहूदिन

नतेदीनवेकरेजेहैं॥जिमजिमदीसततहैंरावसैउद

समावतिमतिमसालतविपविसापनेजेहैं॥लाल

दीनदसाकोदिलेवबारवाहूबारेपततनवांधतदैते

तिर्पतजेजेहैं॥अवधीअवेरनेसजेरवीनेअसेवल

धिबाणउधेरजीवकीनरेजेरेजेहैं॥१४३॥सकल

कलाधर अनादरकेआदरहूवादरदपावेहै

रकादरकीपीरके॥परदजहीहैदीनजननजेज

हीहैअवमेरोनामहीहैमाहोमदनकुमीरको

लालकहैश्रीनिवासमषदबजेशगामीकेहू

मंजदपाधरदीजेधनीधीरको॥दिगतविव

वेवदिललाजपरखोद्वारतेरेवन्नेनविलंवतुमे

वाहूवलीवीरके॥१४४॥

५१वि
52

रामनवराईजेरेहीतेवन॰पाईसदातेरीठकुराईवस

वैभाईपाईहै।। दुखदईहै जासदेसुखदईप्यारेहे

रेपरीपारलाईहीमे॰प्रानंदताघाईहै।। रमाराई

तीर॰पाटीप्रसहाईवेलहाईतेरेवर॰पाई॰प्र

नलालसलाजताईहै।। पसीदीनताईसुघराई

कोमलाईनिजहेरसुबदाईदीजेनिजसेव

काईहै।। १४५।। पालनप्रजावेजोषैवा

केहेरमासीवेरकावेपासआवेमनसकेमुद

पावेहम।। प्यारेदर॰पावेप्रवतावेकोनलाके

नारेसवेदेवपावेमेनपावेदनमेनहमा।।

लालंडीपसावेसुनमदरंरमावेनापतारेहै

धावेतेहीप्रथीहीनसमदआतेरीसमतविसुखमा

मावसमतावेगुनतेरेहीदपावेपारुपमानेरप्रानंन

देवत्वोकेत्ता लदैत्य तिनोको सा लदे दे नेकारे

सा॥ २४६॥ हू जिग्रसपालदेव कालसा लसा

कालकोध बके मेतलल हेरके ग्राव नीजोचा लहै तिसते नचालो तेध्याल कालगरउ

लकाललषतालहैरचालतेनचालध्यालकालजा न॥

गानक्याव दन

१ वोको

देरमै मिवेरेनाहीघेरेपक्योचहूं ग्रारमे

कमबकेरहेरोचेरोजेरोहैं ग्रजान॥ लालकहै

रावरीग्रोग्रासछीरसिंधवारपासतेनिकासर

ग्रनेर

सत्रासत्रसोपंचवान॥ ग्रावरग्रमावपेनयापंच

रितापहरेकापितावजावग्रापहपके ठठोजरान

२४७॥ गहजनरेजविजरहिजग्रचेतनितमेजविनरा

किसीग्रस्यानमे

वरेनलेजबेनकरहैर। अटवतमवमें मालततमसी

ग्रमेरद्विकोद्धेरके

गतिमाजमाजमासतहैं ग्रमसीग्रमेदछार॥ ला

लकहैं सूठपरततठततठमरठरैरठरेरडस्तकीनपा

ग्रसीवे

तेमगवारिलीनोवोर। तातताकतनकतमामतमतो

नेवा नरर

मतहिजपततपनतीव्रतेरतनरतेजमेरा॥ २४८

५३

मास्यो मोहि मलमलस रमरदनमलै प्रारत
महित मरीसुन तमवानिए॥ सेसकी तलपकर
सात धोवकल्यत स नाते मो मलपवरपल लानिए
लालव हैं स्ताहिव सुजान भरग नादवारे वौ नहि
मस्तान हीनके कौन है तो मस्तान नहीं ठानते
गठाम हीन वेकान ठाम ठामिए॥ मानदै प्रमानेका
न प्रानेवधि प्रानम लोभ मानवा [illegible] वानमा
नमानैतामिए॥ १४५। जाहव गुलामको
न प्रान जाने प्रान नाथ प्रानदौ वा दि नहूम [illegible]
नैनवे निहारिए॥ प्रतिपदु कहिते है काहू जो [illegible]
आपनो कार्य
व हार पालं निजका [illegible] ठिनकलेसानिरवारिए॥
लालके है सावरे ई हाथ मो प्रनाथ काज हाथीवा
रो हाथ मोर नाथ सनाथ दीजिए॥ वारवार वास्यो [illegible]
विलातवे विलोकनै वेवपु दिसाप वढे विलसै वि

प्रमानकौ मानवति जो औरके प्रानकै प्रानि [illegible]

ग्राहि ए॥२५०॥पानीमास्वानीठनीगजजानी
ह्मानीजवैंतुरतसारंगपानीपहचानीधानीतैं॥
धीरधिसुताकोसापबजनापसापातजाह्नपक्र
ग्रासकेसापकी ह्मनीतैंकयएग्रापनेहृत क्याकरी
क्रनापलैसुनक्रसापह्मानीतैं॥लालवहैसतर
ग्रापकाजोहृत हैत्रिसकाजोतिहै हैसो वेद हिरतहै
तविक्रमविहजवेदवामवारविलमानविपदविला
नीतैं॥प्रवहैप्रजानीमोरीवेरंरमागनीहके
जठतेई
साचपाकेहनीवेवबानीमेंजुठानीतैं॥२५१॥
दुपदसुतावैंदुर दिनकीदशावेवीरं स्नुरं सुसुरेजेददद
ददद केन न नेवारे
केसुददनान॥नरवैनिहस्भनधारमवैहसरही॥
भीमवैंलुभीबमवेरहीदीठहारमान॥लाल
वैहेलाजकेसमाजवोलखेपलातंकृस्नेगोपार
एपाहिपाहिवेंपुकारीवान॥ तासमैसुग्राभ्रुमैसु
वासमैसुजनवीनजासमैनवासमैकुवासमैतन

केकान॥१५२॥ राघरे अधीन अपार दीनन को बं
नका जं छीन न है तं वसी नदीठ की न पावकी न वा
त॥ कं पत वसे जो ववके जं गं बहु पाड पाल वस तब
ला पं का सो वहें तो नं सुने वान॥ लाल वे पुं माल
पै अश्व कलि ब विधना के भटन प्रभेटन को जहतें
गं तक यं तात॥ तारि मैं निहार नैवं नारतार तारवा
न गार पहेपग हसी मे करता निकार गात॥१५३
दीनो दुबदा सकों दनुजपति दीनानाथ दी हद
उदापवथ उगबै बाधा को है॥ कहां विष्णु है रतो असन
सिर है रे मोह वितु ठौर ठौर जल थल वेद गायो है॥ ला
ल के हैं अंभको रविक से नरसिंह जोर घोर खगास
व छोर दर रसायो है। द्विगन उच्च दै नवैवके दै अंत
ग प्रसुर कीच दै प्रहलाद सौ दै तापन तिर सिको है॥१५४

यलीका जैनहि अर्था तुच्छका जैहै॥

तारनेवारे

द्विगोको करतहोत

श्रि

मघवा महेश ग्रजं रि वेश शा ग्रादि सनकादि

नारदादि निरख सभीत है। देपा सटा सके पदं

जत प्रह्लाद पति तिं गा पतं न दा ग्रं न्हा भी न्है परं करनी

शा है।। लालव हैं भी म रप हेरं भज्ञ भावनेकों म्ह।।

नानरनासिंह

भि भारं हरनं नंन रं स्र गई शा है।। दिग जंद हल

सं तं दं ऊ तद सो दि शा नं दा ह कद समने हेरं द्धिव

धा दिशी शा है।। ५५ ।। दे ऊ कर जोरे दे ब देवता द

प्रह्लाद

या निधान दे बत भगत रा बकं ह तन वात है।। मं।।

द मुस काय वैं प्रह्लाद लें कहित नाथ तात तोर वे

द जैस्र मत मोर गात है।। लालक है वार वार कहा।।

त शपाल रूम दिपलाप बूमा सुने न वारि जात

है।। कीनं मंडु लेशं प्रसुरेश वंस के ऊद्धार सु

द तसुरेशा वैर मेरा गें सिहात है।। ५६ ।।०ः

५४ वि

55

आपसह्यो दुःख दरद दहे दीननने देर मेदरने रिलदीनेोदीनानाथजू ॥ जाको जस भीर सहातातही को सुनतनु मैं नीनतापके कानि पातजू ॥ लाल पैंश पावैं दोका है तेन विगसत रवकनीन वहूं तजनकी गाथजू ॥ कालके करालते कृपालकै कृपान वरे वैधीव लीकी लवैं वलीते कोव हाथजू ॥ १५७ ॥ सामरे सुजान नैक ध्यान कैं सुकानवीजै नेरा नितुराम ते विरान मैं विरानीते ॥ हासनेकहेरी पीरवीरत घने री आसतेरी वासमेरी पानवेरी सावधानीते ॥ लाल सविकार वेसन्नार वान घारे विपद विकल वेलसान दुरहानीते ॥ गहीपेंनाहीं सेंनाही कीजहार नाथ मिनतीग मारवैं नगहीपोंगिलानी ॥

ते॥ १५८॥ नाथ मोर ठीठता पेठ हिराठ रनहार
ढूंढ़ि पतनाहि मो सों अघी भारी पावोगे॥ आप
को अघा न व हिं ऐसो अघी मिल्यो हे सजावे
अजामिल से अनेक वार उधारे गे॥ लाल कहै ते
सें हम में अेसपातुक ऐ ज तुच वेद शाकाल मे सपें नहि
रहेस मारे गे॥ तौ बस रूसाम रे स्वाभ वकी सुद
अर्थात् किसी होदे के भी को आप पावनतन न कहावोगे
न सख छके नै देपपतत पावन व हावोगे १५९
दीना नाथ पलब रे घराने की तीं सुनी रीत पाहे [illegible] रि
जिन्होंने रिहों से आपदों की द रै है पाछते
लही नो बहे रे रे आप धन की॥ वरध ति सी ही जो [illegible] ति
भी [illegible] नरे रधन [illegible] की नु यत सम्हाली उर पाली लाज पन
की। लाल कहे अग अम हलाद पै अनूप कृत आप जो ध[illegible]
हे रूपे सी कौन करे जन की। जमन जमाते गीध जाल
अमा
म अजामिल से जग में जनाए [illegible] जारे जम गनकी

५५ दि
ह
56

२६०॥ कहाँ लौं बखानों जो ह एक सों अनेक गुन सा-
खरखन वारे रहि दिपवत है॥ दीना के दरद के विदार
वे कों आप ए सों दीनानाथ रूप सों नंदवंद दिखियत है
लालचा है। रावरे गुनान कों अवरूप गाय रासन की जी
वनमुख मूरि लों दिखियत है॥ सरव सखंजन की जोउ जे रजस
पराधीनों की
वंतन की पर बस ने तन की आस देखियत है॥ २६१
आपु मोर मान सनमान तम हान महु ठवरजात
आहू सों सुताहू कों वरत है। रावरे चरण के जो मैन
व रें भ्रमर ज्यों चरत दिषन मैं विवेक हीन अति है
लालचा है मेरे एवा सवै ठौर आप विविधु रावरे
अधीन मेरे सों जो ऊँवर अधर है॥ दास जान दी
नानाथ देखि ए दरद मोर दीरघ दया सों दाद
दीजै दैन जर है॥ २६२॥ ०॥ रूपा सिंधु के जे

रमतंगऊवमेरेमननराहितउभलेवकेमेदमारमे

गालितवैं॥विषैंआसकुरनीनतजातनलकपले

हरैचाहसुवासुनलनीनगातिवे॥लालचकेह

आवकेगुनानरूपगठकरवेठतहोकरतही

ठाहै जोरअतिवे॥नाप एकअरजअनाप

कीसुनोलजानअंभेसअनीली दीठदेसु

धारेरतिवे॥१६३॥वेदमतलुन्योन

चरानमानसुन्योषटदरसननसुनेननसुनेहै

ननापवे॥विषैमानरहोमननरछनोसिष

वेषैनदसननउलेगेपाएजेनेखहापवे॥

लालचहैछिरधिनिवासीदिनतेरेकुरसरहेउ

उहनेकासुनैपानोरगापके॥अवैवेतचेतजो

चहिजचितचारगतिअंतपवेआवकेनसाचीतेर

२६६

57

साध्यवे ॥ २६४ ॥ ठगगनकी ठौर को न ठगत ठगत

ग्यान ठाम ठाम वे ठगात ठग जो ठगत है ॥ सूठ्यें

न सूठते सी सूठत ग्य सूठ हू पै तू ठत तू ठ ज्ञ सू ठ पै सवान

ज्यो जुरत है ॥ लाल कहै जम के न के सर पै ब्याल

करै वरत करालका जा विघ्न नारटत है ॥ तैसे तो

नतन तो सुतन जात ते रे कहू तरनी के परत्यो

सु ताते ना है रति है ॥ २६५ ॥ सुपनो समान ज

ग सम सत नाहि सुठ हानि लाभ रोवक ग्रदरपा

हि कसत है ॥ पा कोई हालाम मांगि ने पुरन प्रलाम

तेरे लाभ पे न सत मां ग्य हू सकयो गसत है ॥ ला

ल कहै आतम हनन पाप पीर पत ... परै गीष्ठ

न पात कनमें परत है ॥ जो वे जम जात मांजनि तम

नें मोर मरी जो वेर अरे अरी जराबै ... ति है ॥ २६६

ए रे मन पातकी तू पावन पतित नाथ जापल को न ला

गै भव पारावार हू तजमै । नाहिं पानी जेते मैं न

नम जौन जह तू सग जग हि चैरै गो जाग का है पवो

सौ तमै ।। लालक है तू हीं मे रा हित हैं हि त हे तू न स

म रै न हू नी हू हा है रहीन हे तू तमै ।। कूर कैरस मन

सो कैरें गा कहिं काज कूर कहूं रहू तां न के कसा लको

पहैं तमै ।। १६७ ।। ए सो दव पर नाहिं परस न पर स

त का है वजत न गारे तेरे सी सकाल वी रवे ।। प्रवेचा

है सोई हाने के रन वनन कछु व व जति हा पव है वेई मा

रवी रवे ।। लाल कहै ए रे म छवनन त वना वँ माधव स

जा न भज ताली सिंधु छिर वे ।। नाहिं तहीं ता हवी

र जार न है जार कै हे नन त ह जार न है जार त

म वी रवे ।। १६८ ।। ता हा वर सपे नानि ह

५२ छै वि
ह

58

धनादिकोऽसै

रीफै बहु तहानि जामै हित है रैं सो दुतास नगुर
कहै ।२ अपदि नतेरे जानहु सीनहैरैं दुबचेरको
हकामबे धनेरे तरफत है ।। लाल वैरैं अगनि हू
सलार जेगाहवादस्या है बेसावगनंकौ सुगाय
कयोंगुरपति है ।। भागभागभवते भलेजे भणभा
लतहैं ...सी प ... भासमै वणाही भरमत है
।।१६८।। हरि पद पंकज की प्रीत के भ्रम जे ईएरे
मन ते ईरहैं आनंद के घन मे ।। सुंदर अमल
मलपलमैं बिकालवरे के लिपलिहर ... विम
लवर ताम्रै ।। लालकरे छीरधि निवासी प्रीत
केर अपात्रजन नमज नमाते ई रहे नरकनमें ।।
शंभु शेष शारद शुकादि सनकादि नारदि साग
रसमनते सरसो बतमारतमें ।। १७०।।

माधववहपालमोरहालवेंदि आलहू जे जालते

निकालनापपालसविरदावली॥ दीनकीसुधार

वारवारहैसुवलिहारकरतपुकारतोहुअपारहीठता

वली॥ लाललललवातसुनविरदतिहारोनीरप

णतनपाललालसेपरभुअपचावली॥ दिसदर

वंतदरदीठेदेदशानिहारदीनपत्सलपरदरिला

हे जन्म मेरे अपराध अनंत ... ...

केदिलावली॥ २७१॥ अपचुतअनंतआस

तोसुआसाएकपालआपकेअसानअैअपा

आपके अप्रसान है मेरे अप

ता नी है

नपेअहानिता॥ रावरेअनपरपपसेवरवान

कसोमेरेउरअंतरजिद्दवंदबंमहानता॥ सा

है

लकंअवरअमंतकदआदरैनमेरोमननमधु

मधु मेरे रस्यो ... पाओरे ... नहि

दवर

रस्वोमधुपज्योआनता॥ दीजेदानदानीदेवद

वनकेदाताद्वदीनपैदरेरदेवदुसहविदानता

दीनपै ... दुःसह विदानता की दरेर दे ... व

परदाम दीजिए

५८ वि

59

१२२॥ आपके बिना न कोउ रक्षक है मोरे देवा।
प्रानपति बिलघत लाम मान ठानिए॥ पावनप
नां तपाल तीर नेप्र आलोमो हूं परम परनाने जेप्र
भि प्रद्यानिए॥ लाल बहे बरुण बिधान काहू का
जमो रकाहूने हमेल मने ब रुत लाज आनिए
नीरहीन मीन कौ न मुदस प्रवमान माहारा
जमाध बत्यो मोहुं मान मानिए॥ १२३॥ सामरे वि
हारी बलिहारी हौंने हारी नेंब विवट दुखारी की
सुधारी में बिगारी जो॥ काल पाय कौन कीन
बिसन दसादि आल मेरी करत लेने दिकल सदुंबा
री जो॥ लाल कहै जे घ प दमारी कुत मतहा कसे जद
पति हारे तुमे दाता बे भिखारी॥ ठिठ तावें ठरे ठीलठं
ठां ठहू न हार राल सो सुठ सहू जै ठठठठठारी जो

२७४॥ करुणानिधानकोमोहे तुमैं प्रतिदिन
जोवहुतनलालचीसिवायएकमूठको।पहोएक
चिंतामेरहितगलतानहोसुकोनकाजभारीजा
पैरहेप्रभुरुसके।लालचहेमेरपतिउदेलोप्रसाद
लोराजपरसोदानमीलदेतसोचवकतातसवेअसे
प्रावदानीपैनजानीजातकहाजानीहानीमो
नंकाचमानहूँ
रभागकीमिसानीहारजैसोके॥२७५॥दीनाना
थजैसेतियसुभागसुरीलाप्रभुमैपतिव्रतधरम
करममनवानीते।समसुभापानपसोजगमेप्रं
पनपहेंएकैपतिआसासासासासअरुप्रानीते।ला
लकेहप्रीतमसुजानशिरोमणभैरोपरहरपरहता।
नवानतनिठुरानीते।जैसेदहदोहताहितिमैमोद
हतदाहदाहत्याहकीपुनंगमाप्रकास्कैरानीते२७६

५९॥दि

र्दः

60

द्रिजिएसुजानदानधीरकेमहानरूपपाहस्मुहमा

किंग्रारी

गतहैंउनउनमांगता॥मेरेउरमालवातनसावरे

श्रवरगहेनहैहदयसनवमनमीके

सनेहजहरुवद्धापसालसैंसुगारमरामिवामता।

ग्राद्ध दनकरे

लालवांहैमेहरसनजरहोतानिहारनेकसावरेदिनान

कहुंउहरवींठमता॥हमेपेंसहावहूंजेसामारेस

नेहिंमोपेंसमेसरेंसापहीववेगीहोपसमंपता॥

२७७॥वानवरगानकिंअजानवंप्रसन्नहेहुवि॥

मौनवे

लोकतदसनदपावरु।भिवासीवे॥एसीग्रनाक

नीवैंग्रनाहवमरनमेरेमेहरनिहारनापदी

ग्रापकी

नकरिंगुहासीवे॥लालभवभीमतेभपाउलभव

दग्रासमालजतिहारेंगेलगजवीसुधारीवे

हाहांहांसीहातहेरहेसमैंहिसानहेतहासलका

देहैंतुमेंहीनताहसारीवे॥।२७८॥०:०:

पाहि नाथ पाहि नाथ पाहि नाथ हम पाकी जो
१ म१ न पावन तै सी स नाथ हारि ए॥ सावरी दु
हाई मेरै ठौर न ठहर कहू पाल पाल पाल प्रभु
सरण निहारि ए॥ लाल कहै मेरो हाल देख कै
ह पावरी जे दीना नाथ दास को भूदार दिखा
रि ए॥ दीन न दूसरे मेरो दीनो की दमा न देखे
देव देव देव देव न हमारि ए॥ १२४ ॥ सुनि
ए उदार दसरथ के कुमार तव नगर मझार हो अ
नाथ खद को पोहे॥ आप को न सार वौ हि कर्म की
हार मो हि विष म हि हार हि सपार पारे सो पोहै॥
और को न वार मो लवार पै उमार वार हो पझो १
मैं तो द्वार द्वार देव चु का है
कप हैं तौ बार वार जो को हैं॥ और गुन अगार
की एकार पैष सारि नां वारि कं निहार पैर सार सार मौ

६०दि

६१

दोहा। १८०। किसबिह वालक हुरवरस मकरनहा रवरूराणाकर नभ्रऊकरूणा सहाकिए। मोरहे पर है नतोर जेम सो पल जे पर ना पर को र स्वो र वो र घो र को र वे निवाहिए।। लालदाहे हीन पेन बसी व वी हीन वान वी हल्ची न ही न हीन ही नता विड़ा रिए। चीरवा सब पच्छे होत्र कारता वत तपरे सोपी रहा रेवनवारे पीलवारे पारिए।। १८१। दिनादिन डुरदिनदाहतडु सहदेव दादन सुनत को ऊदमोद रदे बिए।। दसो दिस दीसत नदा सपन परे के ऊद सनभूदरवा ववेह त बिसो बिए। लालदाहे दीनाधे ध श्रीपति सुजान क्यारे आपने सरततोय तोसमें से बिए। काहमों नसाधी पामे बढत ऊपाधी न तो बिरदं प्रकाधी तो सवाधी है तो दे बिए १८२।।

सुनतनकाहूकी आनंदसैमगन आपदीननकी

दसावेसुकरि तुमैदीनता॥ निठुरताअसेहैवे

वहि यत तुमैदियालवनीवैपुढानवरैजैसी
दीनोकी दीन ताकी जै सीपालनाकरतहो

पालैदीनता॥लाल अघसालकीसुनीक

नाहि सुनी विश्व विश्व आकारवैसंसार रावरी
काठि अनाथ पस तोहु बंधद दाणकेहवेरहलौव लोकीतहूताताहरेंगी तावे त्रिलउपर

केठीनता॥पिरदुषहुंदहंद दवंदकी ठेलेदना
तांमदकोंदवचा
सानेमने
अधदुदकी
प्रवीनता
र्गीकर

वैहैवहै मंदमंद अंधधुंद कीप्रवीनता॥१५

मेरेबदुकबनदेनापनान गाहूकीजै दिपदवि

पासवे विचारवेवेवादजे॥ आवदीनतारेम

नामिलसे ऊधारे अचवारे त्याधमारे आ[३]

धारेपील आदजे॥ लाल अति आरति सुवारधवैअ

धमवेकरेजुमैनाहि सवैईश्वर अजाहिजे छीनवे
करे

कमाहिंकमहेछवीलैछैलछीरधिजाहूवैधम

समझिरे

छातीमें
ज्यों घाव है

कासी छाती छिद्र रजे ॥ २८४ ॥ जोविंदनुमानी
वै थे हे रमें विसानी भुज धारी निठुरानी मोर न
चतुर
मीन अकामी है ॥ लाखों कहा जानी को उरस नाम
वानी जैसे हानी भई नृपतें न राबें राजधानी है
लाल कहें तानी में हरखानी सें निहार नै वतार
अधोवे बानी जे पद बिथ तिनोको तार अवमोर
ते का अवमोर तेगि लानी आपको आवत है
अधबानी तो वमोर ते गिलानी है ॥ जात अब मा
नी के से ग हा जो मद बानी रहे अहोराब पालीका
हे हे रमौन ठानी है ॥ २८५ ॥ मेरे अपगुननकी आ
वरै अनंत दव ठग से रहे हैं ज में निकस निहारवै ॥ प
ती पालो हैर दिवजग्य व्रतिया रहै प विष लव हैं विनाशक
धर्मराजे
ती अभै सारवै ॥ लालकवै एके श्रास पावन पतनते सी
हे सै मोर वाटरहे सन वै मन नमारवै ॥ याते वरही योरिए
ते रदन दंतां बुरे मैं याति धजा वरसी नवे दन विचार
वा ही नहीं जो दिवजग्य व्रतेव नाई विरदर पन दर्मै वे रिए मे सिपीडा को

कैं॥१८६॥ कूरबरनवरनतिकोटनकलापकटैककार
कलेशको नै
णानिधानकंपकासोकहेतलिके॥ कुदिसिकौ।
लकीवठौरताकुठौर कीनेवे॥ शावयूपासवंसीकर
उ कोकीय
णा प्रथलिकें। लालकहैसेवरनेसाधुरेकीसाव
लजाली प्रा
रनसवनसताये [illegible] कीनेहलहूतेहलके॥ आ
जैसे
पवेंश्रमनादरवैंप्रासरोनमोह [illegible] प्रभुजनप्रनादर
वैंप्रासरोनप्रलिवे॥ १८७॥ साध्मरेसलौनेप्या
रेसुनदेभ्यारमोरनिठुरनहूजैठौरएकैलही
हीनकी॥ जगमैनप्रोरतोसिवापजोनिवाजेमो
हूहस्यो है रंठमठंमधोनसुनेहीनकी॥ ला
लकहैसावरोविरदसुनेटरयोतोहिएकवारहूरंगा
समाहूसेमलीनकी॥ अमानमानमानितनमोहू
मोनमोप्रापकी है लोमानेमाजूहै
मानदानकोउमोनमानोमाजूतेनमारमापमी

६२ लिं

६३

नकी॥१८८॥प्रथिनदुबाधेदेवंहारसे६कारकेंराव
नाथ
डिए॰प्रनाथों॰प्ररले॰प्रनासीवो॥जानपापसास
नें९रातनपरनश्रेपीरवैपसीजपालप्रगतश्का
सीके॥लालेकोनिवाभिाघ्रपालकीरसापीदेव
निवाटवलापवंश्जारनहस्मारीयो॥नेंजरानिह
ररहयोनेंजरनिहारनैवनेजारहेंजीवरेंननज
रानिहासीवो॥१८९॥एकनउपावबन्धो॰प्रेव
ध॰प्रनेवकीनीवेदन॰प्रगतिरुजविषमहस्मारे
री॥पहजीपजानभको॰प्रवलपपोधरा[illegible]पी
मगवनस्वाहरहें नितपानिवारेकी॥लालकेहपा
हीहनहैंतिहारे॰प्रापादेवरुगहास्तिंगतिसुनीविर
दतिहारेकी॥वारवेविकलवरवरवेंविलेकोवार
वारिवविलावलिसुवेदनविचारेकी॥१९०॥

विस्तुतोसमानतत्तिसुंदरउदयवानस्पबदस

लाघवानसाषवानधमावर॥मानवानद॥

नवानदरदविहानवानपनवानप्रनैवान

गरकाप्रे षभ्री॥कापालवान

स्वापवान

पालवानप्रीततर॥लालवकै है दादवानदसन॥प्र

प्रे

ह्लादवानहरनप्रमादँप्रनादिवानप्रभाँकर॥जप

वानजसवानजारनजरनवानजमेजनजरीवा

तान वारे

नजानवानजगपर॥२९१॥कुमतिकलेशातरप

प्रत्रिलदपालवहै

ततप्रबीनतारकारिजातदेखोवेप्रपालनजनां

केहै॥न्याग्रचनिधननवीननीलनीरजसे

निग्रसप्रणेवारे

मुनीनासीनिसतारीनचलपनाकेहै॥लाल

जैतै

वरैंकमलाकरननेवालितनितवरनवरन्कु

नमके किंवरैउ तपत्रिजोकहरहै तिसके कदनवान

मविंकरगणाकेहै॥वेषवरणावेविस्तावक

रणकेनैन तास्वरणाकेहमनापशरणाकेहै

६३ दि॰
रा॰

64

रहे. वाहि दिपतमें लिपत. इ. दानिधान ॥ श्री व

रज्नं प्रमितनकाहनकों नमहे ॥ पाहिपाहिकर

पीरविपलंपकारहोपरतनकानकैध्यावंस

वाइ गामहै ॥ लालकेहे श्रीपतिसुजानदि

नावंधुद्वारेनईरीनंवसतहै वसगाकेधाम

है ॥ कहरविसोकव्है कछुकवेवलापवकरे

भसलसोवैठकहंकर हवामहै ॥ २४८

कोपनउधारेकोरवोरनप्रघनवारेवोपनसो

लालवहै कोरनकहानीहै ॥ वारि दिव ॥ तिनने

कोरनगरंभकीनेसावहेभकादिकी प्रभृतवु

द्विठमीहै ॥ दीरदिमिलासीहवीपारीवेबजानेवे

लेनहिनेमकीनोपावहरनानिधानीहै ॥ पातसं

केलंवनप्रसंघनकीसंघपाहिसंगतसमरप्रव

संकतावनतानीहै॥१८४॥सुनसुनसावरेंग्र

लोधि[illegible]कुचरितनाव्दभीलवसायमनादिकीन

सनितलेहै।ज्ञातकीविचारतनगातदेंदेंग्र

वसमपंतनवतोपंतवठीस्वपरविसालेहे॥

तिहहेतुलालदीरसिंधुकेनिवासीदेवमंगण

देवांधितेनिपटविहालेहे।।तनेहेंहसनगखवस

नरसनरखेसनकसनमोहवसनमेघालेहै१८

५॥दससीसदुरदकेकुमेदवताादिजदांस्वरिएग्रव

नितेउखेरदुतिहीनेंकिय॥वमलनिकरसंनसउ

नंग्रवनिदेवकीनसविवसंतिनेनसजलपा

नंकिय॥लालवहेंसभिग्रतिजीराउलजना

वसंस्तविछलसरजीवजनचलकिय॥सिंहहीरसिं

धुवासीसासजनजसेलोकलाखमुंडतापसांप्र८

१६४ लि·

बरन तमाल हरिबन माल वारे लोचन बिसाल वारे
चाल हंस माल के ॥ अधर न लाल वारे लालित लसा
र वारे रसन रसाल वारे गाली लाल साल के ॥ प्र
लंबन व्याल वारे नयन सुव्याल वारे अद्भुत ख्या
ल वारे साली पीत साल के ॥ मुकतन माल वारे
मुकतन माल वारे मुकत सुमाल वारे मुकतन का
ल के १९७ ॥ मुकट मयूर वारे अलक करूर वारे
मदन गरूर वारे नूर वारे भारे है ॥ अमित करूर
वारे करन विसूर वारे प्रेसी वा न चूरि वारे क्रू
र वारे तारे है ॥ बांधे तन पूर वारे धेनु पद धूर वारे
हे जु हे तुम्हर वारे नैन रत नारे है ॥ नैन नच वार
वारे दीनन नजूर वारे षीनन हजूर वारे सूर
वारे पारे है ॥ १९८ ॥ विनै गुन मान वारे पन

परम्परानवारे दूरएक लानवारे हानिवारे भीर

के ॥ दुस्वभ्रष्टानवारे हीनपरमानवारे भद्रिस्राव

नानवारे दानीदधिदधिरवे ॥ लालवहे ग्रानवारे

भगतानगानवारे महतगुनानवारे भानवारे पी

रवे ॥ चारगकतानवारे पठवनप्रानवारे परस्योहै

विरानवारे दानवारे धीरवे ॥ २९९ ॥ सेस

सीसचौरवारे रमाचितचोरवारे गंधनसुचौ

रवारे चितचोरवारे है ॥ ग्रहुरनठौरवारे प्रतिही

वठौरवारे कीनसुठौरवारे सवननितारे है ॥ ज

जगौरवारे गीधपिंडकौरवारे [illegible] नेहर ग्रौरवा

रे तोरवारे मेपधारे है ॥ भगुपादवारे सुनन्हारि

पादवारे होवपारे भीववारे प्रवकोनवारे जर

है ॥ २०० ॥ सवैया ॥ सुनिए जगदीशानदीशसुता

६५ वि·
६६

पतिईश्वाकतऽभवमोनपाठनी॥कालविशा

लमहाप्रघजालवेसालमैलालचैकाउरश्रा

नी॥कौनभरोसचैसोसकिकोंप्रघवोरावैद्धो

सभिशावहुहिरानी॥दीनमलीनजिचैकवनी

विधदीठदपानिधकीजोरिसानी॥२०१॥

कहि॰एलुषबानवहाइमजाप७कारेविपाप्र

घपंजमहो॥जनपीरापहारिप्रभुसारितहो

परपीरमेपीरपरेसबहो॥सबजानतजानत

जानपतीप्रनजानचैजातनजातसहो॥पन

पालकरालपाकालमैलालकीजालकोगास

हुप्रालगहो॥२०२॥मोहनमोहुमिलोजी

मपाकरमेटमहामरपादहिनाकी॥घोस

मिलाहूतिहारिएप्रासकेरेप्रविप्राप्रमिला।

थी अस्ताकी॥ वीथैवियोगवियानवरैवियवेगवि

लोकविलानतिनाकी॥ मानप्रमानननमानद

मोहरमानसमानजैमानजनांकी॥ २०३॥

सुमिरानंदनंदवसंदतुमैनेप्रनंदहमैसभलं

दमरी॥ रावरावरीजामैरहैकहूलालसदासु

रमैतेईलाभमरी॥ सुबघानधिप्रानहमैसुव

हीमसकानकीवानसोमानवरी॥ तवदासकी

आसखुरासपहीपिंजासनतासखुजासवरीं

२०४॥ पहलेईदिनांतेसदारितिप्रातुमदीनो

केदेवरहेहोककुनाई॥ कापमनोवचवेवहुपानकी

पालेवकारैवरानसदाई॥ जैसुहतितुमतारेतरे

तेईतेरेईनाथनतेंप्रेमहाई॥ जीवसुतंवनहीव

रतंवजोमंवनजांवासकेतारिजाई॥ २०५॥

६६॥वि
ह:
67

गजेंद्रकीवारीऔरअजामिलकीवारकहावारी
अजामिलवारेजोवारधावहैसोहैहरीदीपकहै

गारमवारअजामिलवारवधकीसुवारविआध
कीवारी॥भीलकीवारसुभीलनीवारक्रिरजनवा
रकहाउरधारी॥पूतनावारकुपदीकीवारकुप
हनवारकीवातभरसारी॥गारमवारअवारनहीं
अवलालकीवारअवारसम्हारी॥२०६॥धरणी
अपनीलखवेकेवास्तानिधकाहिवाहैनकस्योकहु
नाई॥जेअपकारकुकर्मविह्नमदलोभकेक्रोधके
कामकेनाई॥तेतजवेतुमतेंहमचाहतनपारकरोम
पसिंधुपनाई॥नीचनिलज्जनिसापकलालकी
लापकसापकनातेलषांई॥२०७॥छमिआछल
छिद्रछलीकेधमाकरधीरधिवासीसुछंदविहारी
हेरखुसानतिहारेकहावतजोकरनीकरनीकेनिहारी
हें.पधरानंदमारअपगुनआपनीओरविचारीवि

ज्ञास है सेवा सी औ है तम अग्य ज्ञानवे तुं जो वे संकुहो के अग्रे सी ताकनो है तमासी अग्य ज्ञानके शत्रु ओ है और ताक मै कृतार्थ होवो

वासी" ज्ञासव जो तमतुं गहै तो मन नं ताकन नं ता सों ताकों

मासी॥२०८॥ वें कुंठ वासी विनासी विप्या के विलो-

तिसी आपके परपर पालने के सहासे ४

क विचारों वके तो दु आरे॥ जान तिहारो परं पर पाल

न पातकी पं जवे पं ज उधारे॥ तेई मरो सभ लाप स

वै अघ लाल निलज्ज संतो पैं सिधारे॥ सीलसु

है ज्ञान जो आपका शील सही है और सुचाल धारे है तो हम को भी उधारो

ज्ञान सदा जो सही तो सुधारो सुवनै जो वे सुधारे

पावन वतत

२०९॥ सुनवे जवरी जं अनीत की भीत है चीतध

री पा अनीत कहानी॥ कोर नहिं सव जेहि नखेनु

के पाहि अकारत तारे तें बानी॥ वीर्ज पहारि स

वार देर बहुत वीती है

मार है मैं तव वार विलोप तवार विहानी॥

दे निज हाथ अनाथ के माथ दें नाथ सनाथ

पके सो जन जानी २१०॥ कीनी अकार अ

पार दयानिधि दीन की देव दया ही धरो॥

तवदासहौंकावप्रपीनजोदिवतउभिजगग्रारते
मोउवेरे॥वलिजावहौकृभवृपालकिसीविध
दूरवपूतवैध्यानकरो॥लिगरीवहूवेरकीवा
तिन्हा सदा ती जो भी विनय
रिकतेवनजावविसेसीविनेहौवरे॥२२१
मनमेरे हैमोहिमरावतनाथजोमेरानमेरे
तौवासोंकहो॥हठठानतठेरठेठेरनसरून
नीठहठीसठसूठमहो॥मदमतमतंमैमहावत
ज्योनहीमानतमानीमहाउमहो॥तवपा
वेष
दपंकजसर्वीरतवेबरेबलपाहिजोहिवैधरो
२२२॥ छ॥मतिविभ्रमतानतेदूरभयेनवकै
कलित तंब
वहुवेनवहावरित॥मनकामनतेअघकूप
तमनवावभयोहै गिरिदमहादरित॥सुन
सालकीसकंविनैवलिजावलिप्रभुलजान

हो वलि हरि आप के पाद कमलों मे जो
वज्र निवास करत हो हे ... के सिर
... धरे ... के ... का
... करि ए ?

हियें धरि ए। चलि वज्र मे पांय तिहारे रहे धरि ताहि सिर

पदादि को हरि ए॥ २९३॥ जमना के रागन वहु भिनती

गिनके हरसायर ... हरसं हसारे॥ एवना न नर्कल

... तांत ये जाय पकारे॥

लालसे हे नं भए नभए गैं भपा वन पांनकी भरत

लभारे॥ नाच ... तिनैं व ... जो ना

थांतिने हों वजाय नगारे॥ २९४॥ विं हभानध

रो उरधी रधनी ... तिहारी विलोक जहो

... जो रख को रचु गैदि नगी ... जारे

तो को निवहो॥ लव लाल को ... माल ...

रीध ... भांत दपां हिंगहो॥ कहु वात ना

... जात का ...

आपको ... प्रति मल जात व ... हाथ गा॥

हो॥ २९५॥ सु बदनें तिहारि ... ति सामरी

९८ वि॰ [illegible] बहुत वाहे तो आपकी कामही जो मूर्ति है सो सोरे ...

69

(वलजावे) (त्रिलकाल) (म)

मोहि वमा[?] रवसे जो चहे ॥ अरु जाहिं [म] हा उत्पा

(बहुत)

तके मूल लों जे पातक परवे पूरवे है ॥ बलि लाल की

रवद साडुब की पर[?]णा करके निजवा न गहे ॥ ह

रि हा हा रमारी हजार न थै रसो हेरह हरैं रमग्मा

नी वहे ॥ २२६ ॥ जिस काल नगारे बजे पे वजे

पे रमाके से पापी न मानत है ॥ हिं पजान अ

जामिल की वरणी पहि आसते आपुगमावत है

कहि लालह है मैं पर नजीर मिली जमराज वे रआ

(कोहरदेहै ओकरेगी) (एककोताप्ना औरन) (कोअनार) (ना)

गे बखानत है ॥ बलि विग अनीत निवार ने तो प

रपातक की भेद तो जानत है ॥ २२७ ॥ निजही

चित नाप निहेस तहे । निज आरते मोरनिवा

रवे से ॥ बिन साधन ते बलि या कलि मैं जो उधा

(कलीके) (ने)

रे तो पाप समाप भरे ॥ कहि लाल अजामिल है

बड़ो

जे कहि आप बचो हि विना जु लेहु जो तो मै कहे उके आप का अजा कि लखे सा को कहत गा मात अव जो आ प का अजा कि लकाहै जा का पर नी न भवे कर के हूं जानत है को न हि जानत मै करर सम

बड़ो पुन न्हू जो तिहा मो हूं सा को बेरा॥ रही आपनी

बात सब मो नर हू पछताव हूं मै न तु मै मगरो॥ ११

८॥ बहु तेरे दिन नते विछुरे ते किये बे १ दोन भई ह

मरी तु म को॥ प्रह वात प पावत है को लि मै जो ह

है तो जे पावत पर आप को न दिवन

जरसरहै नपहै तिन को॥ कहि लाल तु मै नव मै

त कहो ते १२ बत जाते है जिन को लंब धन को [illegible] आप को अमे मेरो

लंब धप ति है आप के है ते ने ते हो

पहरी त त जै जै तिन्ह जो लंब धन को॥ नवअं

आप की अं सहो जद प कुमार स न कुबन ही रहो

सहो लाम है जो नर हूयो न त जे धित जो सु त अ

गान्हि है॥ ११९॥ अति ही वि पत मे दिला तप्र

कहं भेजो है पाप की पंगती को

मर बलि वा कुरा बाना बक हा पठ्यो॥ अवली अच

को अवली बलस त क ने वारे निवली १२ को का वली कने यारे जो आपने ठठ्यो है

रीन बरेर अवली निवली नवली करजो ठठ्यो

अपवा करे को पाप को का टत का रत जे ठ तम को

वाहि लाल बरे र कोरा न के पालु बान को का

हे नाथ मेरा जो अति अनादर करे [illegible]

र त है के ठठ्यो॥ मो हि नाथ ना हि यागो न दरे

हहो बल हतु तो आप को बिरद आप के पास है किव हू न ठठ्यो भागगयो है

के

सिहरे जुते है वॅ कहू न ठठ्यो॥ १२०॥ पलहू पल

६४ वि
२

70 आसंति हरीरहैं वचवहैं हरीहमवेदु बको॥ जिम

चानवटर लगीधनमे तिमनैनलछ्याचहैं तो

मषको॥ वलिलालकी आसरप्रगम्यतङं निज

वेरीआसको जो नहेसोहै तिस

सै जते पालिए पासु बको॥ निजाते हीनवेसेन

कोनिजते हीन है सो अपने आप ही नवे रोकरी मिलत कोन दूहे अपने
प्र छ्लज। जो न जा। जे कोई मेरे अघलनर आपको हटाई वेतिसहै तु

प्र हे वाहू तो न वेरे रमारे है पारबको॥

आपही नवेहैं तो हमा रे तबको पान वे रहै ४

२२१॥ कपटी कुमतीवा लिरूपकु घीवरीव

नावनहारहैं एव हरी॥ जे तिहवे हैं कामसु

केवार हैं तिहजे तव आर दे टरवरी॥ कहिला

विचार विहपकारज्ञो

लविचारविहपसुनो ज्ञो विचारविचारी नहि

विगरी॥ भवरूङ तकांहिराहे वलिवेगवहे

गज्ञाहिके परज्ञोकरीसी

गीनतेंविहरी सिगरी॥ २२२॥ कहि

पापोकेधेरेवरपर

एमो हिवचमवाहाकरहेजे घूठेरवे आपक

ठेरमए॥ कहिहैं हिरवावलि आपहिलेल्पनआ

पहिचानकोउदए॥कहिलालंविनातनचाहत
मैमोर्ईहौंऊऊहांविवौंरंगए॥कनकीजनतहां
मेरेतेजेकोटकारमए
सीहहाहरिमोउवारहिसारजेकाजमए॥
२२३॥गमनाहिहमैनरवानकोनैवानहि
नीच
गमकोचकहैजगसारे॥नाहिकछूहैसुवं
धनकोकछुनाहिनैनापजेपाहिबिगारे
नाहिकछुवाहिलालसुनोप्रेमजानतनांजेज
मपीउतभारे॥एकहीमारगवावतमोगम
जेमनहिंपननापवधारे॥ २२४॥
हिजरीहमरीनवमैहमदैतुमपैहीवनैएव
नावचली॥रूवकामगुलांमकोप्राननहि
वरकानसुजानमयेप्रवली॥कहिलाल
सजावतहैंलखवैकरनीप्रवनीजेकरी

७० दि

71

नभ लौं॥ कछु की कछु ह्वै बसी जो कछु जो कहू
लख हैं न कछू दिखली॥ २२५॥ गहे मन बाहु
अनाथन नाहिं कहे अब कोइ अपनाइ गिसा
नी॥ पाहि पै पाहि सुजाहि भ्रम अब दाइ सुचाहि
असा हिं विसानी॥ लाल की बाहि दिखाइ बसो जिन
बाहु बली ... लानी॥ मोनि रवाहि न
रजनाइ बसो के उदाइ निशाहिं दिसानी॥
२२६॥ मांगतो मंगन को तब सैं महाराज
म हैं मल मान भ ... ॥ मन में भरपाद म हा
लोब वै तव बान की अनि जवान अरे॥ लख
को कहि लाल तिहारे वा ह्वै है मारे बको दिर
दावरसो॥ ... हो उपरी ... हरसो इम
बैहि विकोदरसो॥ २२७॥ लाल वै माल कुरे

षलिषीलषवै प्रभु कौ निजबानलजावो॥ताप

तचेप जुमनै वननताबजाकाव। तिकालकोमान

वढावो॥ क्रूरकुपतसबजुमेरेउपकारतेपारम

गावोधिपावो॥ दासकी [illegible] सप्रभरे तोउदास

कहा कि दृग्भासतेसारहिसावो॥ २२८॥ वा

लमवेगविपाविचलीकोवनावोविलोकब

उर्इ निजांकी॥ सो धनहीनमलीनमहाब्र

तिदीनवेचीनदपाद्रिगवांकी॥ लालकोला

लिनिहालवसेमिनचा लेचालविचासन॥

जांकी॥ कोनमरोसबरोससमाबसनतेतोसगु

हीषनेसासकीवाकी॥ २२९॥ द्रोपदीदीन

मनीबापालालकीमोहसबजोधनजीतसई

वरकामसदादि [illegible] तकालकली

११दि॰
हः

72

धीरघमेदुषहैतेईदुःशासनहै
श्रापवताना मरुपमेवद्धा है ते मं
वतहै मैनहनपनतराजकी श्रज्ञा सो
सम जो है तेई भीष्म द्रोण चार्य है
सो श्रसमसमप सुतं बनही मन श्रीह
वैपटतं वै है सोहै वैद्ध दैवा श्रा हि मां सो हि सं

कैदत्तानजरई।।दुषदीहदुःशासनन्नाशानसो

षलवासनश्रंचतनामघटई।।समभीष्मद्रो

णनदानसुतंतरवाहिसन्नारिणदधम्मरई।।

२३०।।धिनपावदासैनचढैश्रस्सापलव।

रमकरैवरदृविनसारे।।रदामचीटीकीनैक

दिकारसुनैविनश्रंनकहेश्रुतिचारे।।नैनवि

हीनेंहषीनतेषीन॰ लवैरसनाधिनवानी

च्प

उचारे।।श्रेसेउश्रंजिसुदासनकेहिजविष्णुरूपा

यरब्धजिनदेनतारे।।२३१।।श्रवणज्ञानपरैनव

पावननाच्यदिषेगहवैवदुकालननेते।।नि

श्रेमवे नेमवेपाउकेर श्रतिदारणकाहि।

श्रापविवे जो प्रीत है तिसते जो हि
मै हि नतितुमसो व नी श्रावा

वैसालननेते।।हिजहीनहैंमैउप्रवीनसुनो

तुमनैकनद्रविकिाचालननेते।।३२।।श्रदरसंद

श्रैसे
श्रव
वद्रि
रवद्रो
पदीव
हरहीहै
श्रवग्रा
पसला
रिण

रविछुकसेप्रभंसरसुंदरतासनके॥२३२

दिनराव रीझवदयाकेवदूनवनैविगरीसिगरी

जनकी॥प्रहिंउकेहलाहलपीरतकी त्रिगार

डूवागंसुप्रानजनकी॥पिरतानवनैवदिलाल

सुनोवरताव रकानकसैपनकी॥दिनरैनरा

गागतसैनरहैं जधपानरतीविरतीमनकी॥

२३३॥ लखकेममाघ्रनाघनताघग

केमनताघतेघारोमनो॥तिहहेजुनेहरतकी

नेहहा।निजहालवसाल ... दिसाल

भनो॥विरहलीवाक्रीते।जरवापकला

लवहै।उरठौगनो॥चरहूंघरमोघ्रघतोपन

येवानहोरवलैघनस्यामघनो॥ २२३४॥

मेरे सिरवेप्रतिदासताप करवयो है उनीदे कोउरपीवारो
नहीसनरवयो

केरकोसिरवेप्रतिदसताप नकोरववारउनी

जनकेहर
वसेकेरो

७२॥ छि

आपनेपनकोछकानकेहेंसबबानआपहीसरकोएसेरेपर

सरको॥सरकोसुबबानउछानवनैहैंसदहीत

हैरेपलोघरको॥घरकोनवोऊजनिकरसवै॥

मैंथीमममहाजनमकेवरको॥वरकोवरगहूंमव

रेपकौंपोकरुणाकरसवैंकरवेवरको॥ २३५॥

छंदकुंडलिया॥ दंपतिकरुणानिधहरीहरण

वालबकलिकाल॥पततनधिकासैजगतकोश

रणपवस्योनंदलाल॥शरणपवस्योनंदलालनि

रवानिजोचालउधरहै॥पापपुंजपदवेलिप्र

सपदाहिसपधरहै॥कितककरमतव्अर

रहितजातेतुमसंकत॥महांदानिकेदानिमि

बारीतवदरबंपति॥ २३६॥विनतीविनयत

हैंप्रभकेसानैकहूरूधान॥सुंदरबवजपाम

धरमोहिपनिपटपबानि॥मोहिपनिपटबबा

नताहिउधरनवृतधारे॥ पालनपरनमहान
हा नजनजानविकारे॥ सुनसवँगवहिला
लगिनतउसमखागिनती॥ पलपलपरतनदे
सिवविनदछि
नजिमैतरफतपितविनती॥ २३२॥ दीनवि
यपेरहितुमैकहिजसकलसदंग्रथ॥ निजमु
षतेतुमहूवहि मवमेटतकेपंथ॥ अवमेटा
केपंथवहारा आवस्तजनाऊं॥ लषनिजप
विपरीतपततपलवैठलजाऊं॥ निजसमरप
हालीतेकोबिन्हेरहाहूमैं
भहूपालपीलतेपीनहैंबीन॥ लालनिल
लालकोदेषकेकहासें २ ए दीनोके आनंदकोमें दरदहेतो
प अवघलषकहामिटवतमुदमन दीन॥ २३९
हरिहमरीविगरीनहिजेतुमरीरहिवान॥
तुमरीजोविगरीसुतोहमरीसिगरीहान॥
जेगतमें वह वातीविदतहेवेगी
हमरीसिगरीहानविदतजगपहैवनाई॥

ह॰ वालिके वल पटीवत तन (ा) व प्रभु रीता हि सांई॥ क

लणाकर वहि लाल॰ प्रजा सन हि तुम्ह मेरो जहिं

कर॥ वर तव वहि उपाव प्रणत की पीरा परहरि

२३९॥ वीर तन तव प्रभु प्रति विसद भई पतनव

हु तार॥ का प्रवा (ा) व ह पतन तल गिंह रत तिसाउ

जि॰ प्रार॥ हसनता सउजि॰ प्रार नीव नहि व॥

नातं गुसांई॥ मेरि विसता नाहिं हरं नमहि ते

तं हुसाई॥ कामना पति कहि ला ला जहिव

हैं॰ निजवतं पीरन॥ तरव उ वारव वन तत

मे प्रभु लख निजवरितन॥ २४०॥ वसयो वनत

नति हनगर जहिं न वसी लोना थ॥ विघ॥

न रहित निजे ता सासिर जो न वसी लेसा

थ॥ जो न वसी लेसाथ नजर वर मिर बगुसा

दृ।।जिंहतेरहिवेहेतवरसनरसम प्रथमजिताई।।मति

विनाहितूतेसंसारमेरसरहयो [illegible]

विनप्रधामसुढीठलालविन [illegible] हितुभवरसयो

प्रवतुमकोसहविनिरषतवभ्रजातरबासियो

मै जो आप को दास हो

२४१।।कारनकवनकपानिधीकरतदासपरप्र

मान।।कैवध्रुवमतीकरमममोवलिधिवोदि

यान।।वेकालिकिपोदिवानदीनकीकेसुधम

नैयनकोपाल

ली।।करजनै [illegible] लालहितमोनक

रूली।।वेदनविकलविलोकवरदजिमवार

नवारन।।तिमनकरतसममसुरनवहाहरिकव

नेकपन।।२४२।।निरवलनिपटमिहारक

तंमिदरनमोवलिकाल।।प्रातदसहमविम्

केयवहुनवरेसमाल।।वनहुनवरेंसमाल

वहरतेमनुमहमहमही।।कोजानैविंहरहतुव

२४ वि ।
75

से हमन तव हि गरम हि॥ वदत न तुम व हि लाल पर

म ग्रह मन ते ग्रति बल। जब प्रभु हमरी सुनै न

वै तु हि करहै निरबल॥ २४३॥ कर गुणकर प्र

केर कृपा का हि भ्रसाव नहास॥ कहँ तव लि पीक

टन ते दीनति हसे दास॥ दीनति हसे ति दास

ग्रमिन रन मर पग गते॥ पद न हि वन नक्षपाल

तु मैं ग्रणतन न परि पते॥ पन तव हि तव हि लाल

पा हि ग्रभ पाल प्रणे वरस। न वतु म करजा सहपद

प ग्रवव कों करुणवर॥ २४४॥ दूषन दूषन दु

ष हरन ग्रण तपाल वर सैरस॥ परम कृदार दुग्रा

र पर दीने दि जै ठैर॥ दीनै दीजै ठौर चरम कु

निसित जिन है रे॥ विरद विलोक दिस ताल तं व हि स

रि वती जै है रो॥ करि हल गव हि पहि लाल विपर

भाखैं हजें भरम ॥ अवनी छें धनि छार काल ॥
सुधि तज सम पूरम २४५ ॥ अवनी करणी
कींक पाक हि लगके हूं हां पाल ॥ इव मैं हीक
लिपाल वों ए जैं दि विसाल ॥ ए जैं दि कोवि
शाल वहू तभा बन की कं अव ॥ भ नत जन जिअम
आपने अपराध तज हैं तो की गति कुमारे है मागता है
पराध संत पर जाचत माधव ॥ जिम सुबहुक
र नाब मांजु श्रा पतल षम बनी ॥ तिम हैं निल
ज निहार लाला परं करधि अवनी २४६ ॥
रे मनं नि लज निहार निजं नित कसा नन
गीचा ॥ काल वाह संसिर वर अवलें सं संगई व
दि नीचा ॥ स्हु गाई वां दि नी वं वहु रबल अस
अव सरं नहीं ॥ सुरदु सला भंत न कावं गमा रगम
यो गलति है ॥ स्रिर धु निधु निपछ ता वं तु थै तैसी

76
१५ वि
६:

सोंचहु धन॥ पहर प्रवसर नहिं मिलै लाव लाव

नतै रै मन॥ २४७॥ कुसुम निधि सुंदर सुबद विशं

भरंजन पाल॥ चसैल नयनं कर नलावती घिर

दं विलेखत लाल॥ घिरदं विलोकत लाल पर

१आ२त्रि

म१ आफरं नव आरी॥ पल पल पर तन मैं है नरंघ

नहिं न लागि पटोरी॥ जब लग तुम न दिल

किस विधि करके

वोनाय तब लग कवनी विधि॥ उरपर इजत

पताप जांहिं कौ दिसा करुणा निध॥ २४८॥

आहि आहि सब धंग रंच न न संग्रास कुधर नाथ

निरव लोकोव लदेना आवदे ताप है

प्रणत दीर्घ छंदन कैसालं प्र वलन वलंत वह

पा॥ प्रवलन वलं तवहू पम्मार प्रवकैं नस

हाई॥ दिन प्रिय वन पाल रैत नं मये वा मिं आई

तुम तजत लाख नहिं पर जलाल की जौंग दिवाहिं

१ अरवरन सरनत त्रास विरद जाहि अग्र जाहि ॥

२४९ ॥ ब्याकुल तनन धीन देखा हतं रहे पन गोप

तुम तज अपरन हैं रहे सहं बोलत दुषरोप ॥ जहं

करतं दुषरोप ॥ कहत तुम हि करुणा कर ॥ जव क

व मेरो का जव जे तुम ते हि गदाधर ॥ सुष निध

१ अवरन द्वलाल पर जो हित पारे ॥ दीन मली

न भक्त वृरके तुम हि प्यारे ॥ २५० ॥ प्रणता

रत भंजन प्रभु मै पहस्तु नीक पाल ॥ पातुरन्या

पसुरहा मे नहि बलीनि बलन साल ॥ नहि बली

निबलन सालदीन दुषिय नहरिता ते ॥ ताप

बांधत अदल अगट श्रुति वरणत जेते ॥ रुपासिं

धु महरा जालाल हित न्याय विसारत ॥ रुपा

पतीक हि १ प्रेम रन जानो ला अप्रणता रत ॥ २५१ ॥

77

१६॥ दि॰ महामोह दिनरातवहु भातसतावत मेरेको
श्री पकान्यापवाहाँ

हु: महंमोह दिनरात वहु भांत सतावत मोहु॥ वहु

जनमनतेन वचरा त्रिंहु सम विद्यो विद्धे हु॥

त्रिहु सम विद्यो विद्धे हु दीन रहु षी वीको तारि

रावरहु पा सुन्या पमां कहु तन्व के दाषनहि

लालक लंगभ भाग ते सुमत रूपद तजो ताहु॥

विषै वुन रूपं जाना निवसा कस्यो वाज महामो

फस्योहाथो

हु॥ २५२॥ अघ अघ प्रति दीन कृपाला है वसत

षकार निहारा॥ येन केन विधते विमुख पास

छुटा

ठते निरधारा॥ फास छुटते निरधार उपद्रव सौं तक

रो हरि॥ निज तन कपन रूप मोर मन करति हत

नपर॥ लाभ भवहि कहि लाल शंभु सरव सद

सन गति॥ संत न प्राण अधार रहु है [illegible] श्रा

श्रव न

रति श्रति॥ २५३॥ तंकु पतत पावन अपर मोहा

जेकर सौ सेभी और कोई पतन पावन हो तो

तौमैंजोवामहैं [illegible] देहपावतनआपकेंअमनकवीनकरावतो

तोसुषधाम॥तौमैंतुमैंरूपावतनअमनकरा

आपकीपरमकोमलता

वतवाम।अमनकरावतवामपरमकोमलताल

बनव॥कछुनवरसाप [illegible] लषापनहपदसन

तुमहिंअव॥तिहवरतुमपहिंलालवहिजअघ

आयोनवनक॥सापानतेसितअवारनतरमा

विषय लालताकोतेस

षितनाहितेनक॥२५४॥जनआवतषलका

हजनलगीहेंऔअपनैतनेकीहानीकोनहिसम

लषिरभजततनहुंसुषषान॥विषैलालसालग

कत

लगीनाहिंनिरषततनहान॥नहिंनिरषततन

हानजोनाहिंतैंवहुतविगोयो॥सरवससुषममषे

यआपविषयनसुषसोयो॥नवहितावलअति

रंकउवितपरपदहजिंयमावत॥पासंगममस

[illegible]नवंधनाहिंहितहदिसमनावत॥२५प्रा॥०॥

८) लिः

78

मानन मन मेरी कहि लिखयन मगन ग्यान

महा मोह के संग ते जम कर पार न प्रान॥ जम

कर पार न प्रान प्रत पछताव प्रछैयें॥ प्रबक

हुवन न बनाव बहुरन हरि प्रवसरवै धैं॥ पद्धिप

विहारी लाल मूढ प्रज हूं सब हान न ना॥ कृपा

सिंधु भगवान भजन बिन न जम द मानन॥ २४

ध्या हरि हरि हरि कहत रघरीं जम किं करस कहि प्राव

निरखत रिति हन रहरी उरधरक रत्युन गाव॥ उर

धरकर गन गाव निरखत बनिक पनरप्रावे॥ विषय

न दिख मन वन निकार परवार भ्रावे॥ मरपरीहर

कहि लाल हान निरखत किन पर परा॥ सरवस सुख

दातार एक जग पर मन हरि हर॥ २५ ॥ श्री पति हे

१त नन भ्रम्द पालन करन कृपाल॥ दीनबंधु द

रद दमन बलानिधि बाहु विसाल॥ बलनिधि बा

हु विशाल सुबद बहु दिनबंधो हेरो॥ निरभर प्रेम

प्रमोद मगन ग्रह निस तुहि टेरो॥ पद सुख अव

धि प्रनत पलाल की सब भिन प्रभ मनी॥ दै सर

वस दातार दास आस पुरन श्री पति॥ २५५॥

मद्धि कर

रघुकुल सकरी [illegible] जल सुबद धनु सर कर रि

न॥ राम तिहारी शरण हैं प्रनत हरी लखन॥ प्र

नत हरी लखन मोर दुख दुसह विडारो॥ संस

रगी ...सोर प्रजा मिल प्राण पिआरो॥ बरन

सते नवधा मग पे जा महिं करदे हुलास॥ ता

संग लाल ह्रि मेल परम दानी तुम रघुकु

ल॥ २५६॥ करहीं बर बाढ दिन दिन

मोरकंठतनस्याम॥चारवाहु प्रदिसतिसपनसं

बाधिकनललाम॥संबाधिकनललामरोषप्रि

रध्वतरभंजरम॥नीरदनीलनसोनसीसाप

रणप्रासिलसजिम॥नयननलिनकलिलाल

ककतंकुंडलमनहरही॥नामकमलविधच

रणलसितलालितमोकरही॥ २६०॥ छंदरू

लन॥प्रनाथपैनाथरवमेहरकीजैजरानल

वदीदारदीदारप्राण॥वेदवरषिनप्राधिनसं

सयहृदयभिंनप्रंगभिनविरहसताण॥विरदकी

लाजवरदीनप्रावाजपरदवसिरताजवरकाज

भाण॥दासकीगरजकरमरजाहरदरदकीलालत

वजलजवदसिरकाण॥ २६१॥नाथनवद

साकीप्रासनवधैहिदजमेघमयवासनसतास

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नापत्रति॥ हेनाथ अपक जोमे दासकूतिसकी आस अपवेविदा
है मेदनकवे सवआसकोतिसकापालनकरो॥ छंदकुबदीरूपरदीरूपवउ
परवजायबकर्के है दीनानकेदनी आवनीसोहोवे सो चलनी भाव
चालसोचालेगतोमेराकार्ज होवेगा सेगवनभानकी सोभावे
है तेहार जो अपकातेज विसाल है तिसका जोभास प्रकासोहै तो
कौटमव मोमेमेरिभरता है तिसकोजावके तौ मेलोकासे प्र

पालै॥ छंद॥ बदीरूपरदीरूपिबदारवरदानि

दीनानबचालचालै॥ अरिभरभवनमेमास

भगवानजबभानभाइराएतेजाविसालै॥जाव

तितिरसइजपावतिहसोकतेलालउरकीन

नमतेभरालै॥ २६२॥ लालवेदीठदुबद

सुनीहरिलकोदुरसदअभिलाषनीद्रोपदिवारी॥

अद्भिसुतजगनञ्चिद्दसुमनउत्पाजकीनगन

जोपीनवेगमनकारी॥मानअवमानकीपाद

नसुजानकीकानजमभानकीहनहारी॥ध्या

धअप्रह्लादनीवाधधुववाधनीपरमअग्राधनी

वानवारी॥ २६३॥गाव्यंजवनामकीनापकहु

अवनकरपातकीहमसरसअप्रतिजमाहा॥भीज

तेजचीततेव्रत्तदुआदिअघअपरनुरुद्रोहन

अघ पि हम अलाह आदि अधो कम प
ख्या जो हैं आपके नाम की गाथा वे जा
बलकर तौ भी जानबर्दे आपके नाम वे
तौ मैं ने अपराध किये हैं तिनो को गन
के औ कोटि कपटी औ काठिन्य है तिन
१८ पिं ते कठिन लब के जो फेर मेरी तर्फ [illegible]

हं हिं गिननत काहे॥ जानं अपराधं तव नाम के जे कितने
तिनैं जो हमैं आस्वादे॥ कोटि कपटी न काठिन्य तें क
ठिन लब लब पैरें तव बिरद हद ए पाहे॥ २६४॥ छपै

(अह्लाद)

तव दि आसन नहिं दुरे दनुजपति दास दुबायो॥ तव
दि आसन नहिं दुरे अजामिल सरव भलायो॥ जव दि आ
सन नहिं दुरे गिद्ध बैकुंठ पठायो॥ तव दि आसन नहिं दुरे
करी दिज बगत जस्यायो॥ लालपत तन कवि बेर अब दु
दुरभाग तवन आगमा॥ करी निठुर हाती हरी पन
न्याय जो प्रीतम परमा॥ २६५॥ पद॥ भज विष्णु

(पती) (छंद)

देव अहितोरा शापी वारनिघातन पांवरा॥ भज चारस्वा

(सं ख्यादि)

रस चार आछ धन्धारस्त्र कतिपदौ करं॥ दयाद्रिचितद
सा ने सासी दुरद दुबदी दे दा हनम्र॥ ध्रुव बाल लालि

(लोडौउ ने कारे औ अह्लाद वोस)

अह्लाद कारी व्याल अरि विरवा हनम्र॥ मामाधिवल

कि॰ भ्रास वश बधृ ज ब्रज स्य ताजीवन धनमू॥ नंत॥

नारि नर नारी निबंध न निरषन मगति पति पन

सारंग शासि सुरपति सम नसु रसर वसा सनस

दनमू॥ सुखधाम संस तजल कालसन सिंधु श्रि

वंसरवस जनमू॥ दिन॰ भ्रंत भ्रंत करभ्रा कर मधीश

लान॰ भ्रमित तबिद्ध दनमू॥ मनभी मभीरविद्ध

दमगवत मनम जो भवबेद नमू॥ गंगा गदा गो

दावरी संगम त्रिवेनी तीरथ वनमू॥ मिहनाम

समसमता नरावत लाल उरके रसो मनमू॥

२६६॥ १न॥ श्रीपति नैक निहार कृपाल॥ विन

नवदि ठसि हैहैं स्वामी लील तसु वन कृगाल

दि॰ ह॰ रम घ॰ म घ ह॰ भ्रारति भ्राभ्रा॰ भगम कीन लष

काल॥ तीनताप रितापकाल गालक ठनकर मम

गाह हु हुपदेवतवस

नगु बडस तकुमरम

विभ्राल २

वजाहि। जवद्दरि दसानपसनत्सरे रेलसनवपा

जिरमाहि॥ पनत्सार सुनेश्रवनसेरव हिनसन

गवशरणसहनारी॥ कि रुअपराधनेरुसनहरिमेंग्य

वबधु अपरविचारी॥ तवतजमोहिरेअपरनहिश्रा

सोकमलनयननजियजानी॥ नमकतनिदरसि

दीनदुखितकहुउरधर ग्रति निठुरानी॥ कासोव

होसुनतनहिकोउ बिनराघवरमुबदानी॥ रमनम

लभलभवग्रनैभवग्रावतमयतरूपाभयमानी

नदबदीबदरार बहतमनमगजलमबविनपा

नी॥ वसिाकृसवपजकत्यिनवलिकासोकेहेविरा

नी॥ १८ विहविधनाथननिवेहेवकद जोत्रिभ्व

दलेसहमारे॥ वारवारवसिजावलालपरविर

दंविसदविसारो॥ २६॥ हरिकाहेतधरीनिठुराई

२

कवकेटेरतदीनैंकानिधदरनदीठहरसाई।।मेना

मह्ल मलमलिन लख्योममह्तमयाविसरा

ई।।भवनायकभववाधुभवनगुरभीमभयद

मनभाई।।कारणविनवरुणाकरवानोवरनवर

नंकाम्राई।।वैपयपीयपूतनाकेप्रभुपरसुपीरनि

हराई।।जनवरश्रमाचनश्रमतकिएकैसंश्रतश्र

मवहताई।।तिहतेतनेवननाकनतलकततीव्रता।

पवहताई।।किहविधधीरधरेतवआसातुमन

रखनारतकाई।।प्राकृतजननतिरस्कृतकीनेतात

वनाकीशरणाई।।अवतवदासआसमोहितेरी

त्रिभुवनपतिंसहितप्राथी।।अंततिहारेचरनेवनेहे

लालपतनकीभाखी।२६८।।किहविधधीरधरेश्र

जो भीम है सो श्रपके मन को भाव गई है यहसि है तसी तकी नसी है यातुम को भीम संग्रारसे पेर दिया है

हिसाथी॥ निज अपराध बिचारोंतिंहृदसानलक

मे
तहैं अन्याथी॥ कहुनयसायहृयवकसाणावरवि

नवतममवृत अरोरी॥ सिकताकनन्हीननकी

सो पुरष मे दें अघोकी
जहिं गति सो अचभिन्नत अजोरी॥ एकनअभु

नवरीयवलायवक प्रायुबमरवृतकीनो॥ जि

हे ते ममदुबदेबदयानिधयदयादिठ वरसीहे

भागहि नहैं अहिमितपरण तुमसबकपटकसा

ऊं॥ यहिन अननतकहि नावत अननतहृवहिकहितु

महिसुनाऊ॥ नवजससुननमींदवसवैवाकस

नराख्यानमेस्वामी॥ परदारांपरद्रोहपरायण अ

ग थी नवदुत अघोके। कोशमे देवाल है ताते नामी है।
घकोशानेकोनामी॥ परमकवालयनतकुलमंडन

परधनहरअपमानी॥ ऐसेलालहि जो अपनावहु

तौ हे संकट गया तो
गया बना जस है

तौजससंकटगपानी॥२६९॥ हे श्रीपति करुणाकर स्वामी॥ निज घर को किंकर लखकाल कजाय पहुर हुतान श्री कामी॥ आपन विरद बिलोकदयानिध कवहिं पद पाधरें जो॥ दीनमलीन अस्त लखक लिमलमम सुख पर करें जो॥ जिंह विद्या को टर न्मये ठहमनमो हु वसकीनो॥ तिंह विध वहबल निज जनलखकरकरहो मोरंग अधीनो॥ जद्यपनीवसमजहो सुखनिधअपराधी हो चेरो कौन अजो जन तुम रो मो संगवप द्रिखजिंह हेरो तदप अोरनिजेहरकृपानिधपद्मअसंख असुर पी॥ एकनाम के आश्रय अचि हो पर सावरगे पापी नैवाकठिननदिजो वहुमं पतसालदीनकरपा है

परमकृपाल्जसानीचितवनकरसमदुबदीहदाहीं
२७०॥ हरिजनप्रपरमजनत्र (मत) जांही॥ २प्रतिसठनिव
टत्यागमंदाविनमगत छाजलचाही॥ परमबुधा
रतिसुधात्यगाग्रह मोद बुवरस लानो॥ नहितहि
स्वादनक्षुधानिवारनप्रतिहतिभागप्रयानो॥ त्रिमवं
तामणीतजगदुरमनितलघु कांचकिरचकीप्रारी॥ २प्रतिश्र॥
(कामादिकोनेकुगौहीलीगा पनबहि)
मवरतिंहरसंचयवाहतहपोकुमादिठजोरी॥ जनबल
निवटप्रदागसुगतिहितवरमनासससरिप्रारी॥ प्रम
करिकरिसठमेव न्हलाजतमज्ञानहितवरजोरी॥ किंहवि
(बेटकोसगवे)
धवरनकसेंतिंहकरनीविकसभपेतजमोही॥ परमर
ठजेमर्विवरपीडानहिंसमसतगुरद्रोही॥ पहरातिअनु
सठकीजकप्रागेकिंहविधहलकसुनाके॥ निपटनिल

जोलालहतपापीपापसुधारबलिजावो॥२७१॥रेमन

समसकहांवोईहै　　　　वचाव ..कारे

मरु समसरकतवोई॥हरिपदविमुखमनेतारउवारवजो

जोवृन्दाभीतवप्राधीनहो

विधवधी तवहोई। जाकेचरणपरशातरअसमदु प्रभिम

प्रीतमके ठगने

तगतिसुखपाई॥तिहतजनतठकतयहहठठानतप्रपरन

मैं प्रेठता

ठगनादिठई॥नेककपटतजहरिपदसिमरनकीननक

वहुअघाई॥परनारीपरवसुपरनिंदनविसमभजवानिउन्ना

विलेखतासोकीन्ताहै

ई।जेखलम्रातमहनक्षकीनेप्रापदवीजविवोपा॥मन

मावनमैभजनगरधवबनकरप्रहरसुखसोपा॥प्रज

हुसमसप्रप्रवहुरवनावनवानविसदश्रुतिगाई॥धि

नधिनवरअनरागमनोहरमरतहिसुवसाई॥पह

रघुरलनरूपकोहैवेरप्रधीन

जो

पनकरमनेंद्रिडसिमरैलालकाहित [illegible] हरिवाती॥स　सपथकार

व

मनेप्रणमनावसठतेसीजलधिपारहैजाही॥२७२॥

८४
८३ पि

दीनदुषदलनकरदीठदानी।सोबधापीअधमउदंद

दाहीविम्र जाहीपैजाहीलबमेविरानी॥५॥सिंधुअगाध

भवपरमअर्थसाधुलषकरतमोबाधहरव्याधस्वामी॥वहै

मेरे को परम अर्थ साधु लाष के बाधा करत हैं है व्याधस्वामी त्रिलोकी

परठौरनहीरौरसकदीनकीओरनहीसैसेयविनशरणमामी

हैं

मेदपअपराधनिधतदपनहीबनतअवदीनपरनिठुर

तातुमैनाष्यो॥वहुरजसदंडहरिदेवतिहलोवमैतमकनाही

अनषअववरसनाष्यो॥सदाजेरावरेटहलअपहोअधम

कामादि को के संग ने

संगकामादिवेपतनकीनो॥हेतुनहीजोरदरवारतेगतभयो

अघकधुवनतनहीमोरकीनो॥गीधगजराजगणकाअ

धमअतनाभीलजमनादिबसकीवाहानी॥अपरपापा

कृपाते

त्माबहुअजामिलसरसतरावरेहीदहंगतिपरमधानी॥आ

७अ

वहुरो =

पंस[illegible]समरथीवहुरहैदासतवपनँ[illegible]जानत[illegible]

संसार तक द्रस्ते रुठके तुहिना पहरो।

जो तो आपको टेरर तहू

एकतो आप सम्र्थ है दूजे मै आपका दास हू
ती सरेव हैं [illegible] सी जानते हो ताते विनै
विरदकी लाज करके धनः आप ने राज कीला
जी सर्वस लोक मैं आपकी ही राजा हो तिसते
जो राज आप रखो सो लाज आपका हे ता है तिनकी
और देखो॥

विरदकी लाज धन लाज निज राज की लखो हजॅव रघु

हूलाल चेरे॥ २२३॥ अनुदाग्णहरि जसकहु मनप्यारे

सोच सकल तजि निज करणी की जमदिं करकर मैनि

रवारे॥ लोक चुरासी औनिदुसह दुख सोनव निकट न

कवहु प्यारे॥ संग तज कुलम सलत जभ लाहित वअन

ते रोग अकेला हो
कवीन निसा रंगा

कुलकवरन विसारे॥ वाम विधाता वाम कर मतजा

वसन मान महान विचारे॥ दाहकदुःसह सुखदल वे

तेरे सुपनेहु कधुन विसारन हारे॥ काम क्रोध मद लो

बोले

भ महा [illegible] अजित वन गाठव वहू निरवारे॥ स्वामि वितर

सुर गुर सिर तेरे दंडु प्रमित रवक्छिन मै टारे॥ लाभ

श्रेष्मती

देत
हान हरख महाभय द्वंद दिवद विमती न विगारे॥ मी

नताप परितापप्रवलप्रति कलि संगत नहि नैक प्रजा

85

८४वि॰

रे॥ परमानंदकृपायतनमेसबासरसदाएकरसरहे

तिहरे॥ कंजनसकलरतछनखगबसनहिछनछनला
ल
छकारे॥ २७४॥ किंहविधिकहौंकृपानिधानकी॥

नैकनद्रवतसुनतहरिजंससठनिदरीसीमसुखपा
सुखपाईवैकपाइ नकी हद

पाइनकी॥ दृग्यादधीचहसुरपतिजांच्योछनतिहपा

पठराने॥ परहसनवरपवितवसुपहसतवतवहुपीरप

राने॥ शिवसुतसुरहितगिरवेधनक्रियचिहसप्राप्ति
तीहण

विसाली॥ तारकप्रसुरविमंचनकारणतिहुजोगनत
घरकेदूरकर्मैवारे

घरघाली॥ भृगुकुलकमलप्रभाकरपरमवीस

एकजहिवारी॥ मंडलेप्रादाजीकलादंजातिहवकेठर
निद्धावर

नोवारी॥ भवधनकठनजोनकतनयाहिजतिहसव
जिसकोसंसार
कासिपानेभलावे
भीनहींकोस्यो

भलनकरतष्पा॥ तिहलमसकचकहिजतिहसमता

दुरजन नें और दुःख दे है जितने जो उद्यमो मन
तिसको मैं ने स्वर्ग व तपर होता है

दुरजन दुरजित परख्या ॥ तिंह कारँ करुणानिधि स्वामी ॥
श्रीपति तुमै सुनावति ॥ यह बल को मुख भंजन करहै
लालन निरख अति आरति ॥ २७५ ॥ रेमन चंचलता
त जमानी ॥ हरिसन मुख कत सुख नं विसोक तरथा
पावे थाव आयु सिरानी ॥ निरख त संसत दुख व हू विध स
ठ तत्वीन करत गिलानी ॥ जिंह धन हित अत्रु वरण वि
सारति अधरम हित रति ठानी ॥ तिंह धन कर सुख श्रीप
ति ने हि मन हाविषम विषमानी ॥ करत न संग्रह भय दमी
मल व समसर परम हित हानी ॥ जो कद वि सठ त व सीविति
तिस धन
१२
ह पर जो सुनि कहित सयानी ॥ विन उपाय त व दरस व द
तकर मिलन न आगम कहानी ॥ श्रीपति सुंदर परम नार
पानिध जिंह बिन तत अति हानी ॥ तिंह विसर न सुख

औरशरीरमे

रूपअनूपमसो न मिलत तन प्रानी ॥ बारम बार गउ

संसारुते छुटामनेपर

बार न परहि जतन बहुत प्रति घलसानी ॥ सतगई

नव हरि सम जान नति हत नव प्रीत प्रसानी ॥ २८६ ॥ कैं

विध धीर धरैं संग रहु गसन ॥ पीडत विषम विपति जि

मउ बहु कर सह पर अहनिस है तापन ॥ लोभ पास

ममतारूपवेडी वंदीखाना विषयवास

ममता नीगड नहु बुट मौकार गहि माही ॥ विषे वास

नासवचैं तनको नाप औ लेकर मनोरथ पदवदाही मारत है

ना बैन नकस गहि हनत मनोरथ पदाही ॥ वहविध पना

वहुविधकी बासदे ते कारे जो का मारि डाल है तेरे

सकै मारि कबलरदा कतिंह ग्रह केरे ॥ निकसन हेतु

उसप तुहि टेर ते रत टै भट मेरे ॥ ममहित विपदा प्र

मितैं हरि प्रवसर कोन हि तहनु सहमारे ॥ प्रपरसुरा

सुरवि मम मसुनदे रजानमगति अतिप्रेरे ॥ वधरसोग

केतेदुपपीडत कि मजन नवातु सुररे ॥ परमभसलक

रणपथस्वामी विश्वंभरदुखहारी ॥ दीनउधारलाल

कीसुनसुनतुमकृतदयाविसारी ॥२०७॥ श्रीपति

स्वामीहैं जबचेरे ॥ जद्यपगुरद्रोहीरप्रतिपापी नि

अतिसैमार्गमे हैं चास्नजावेरे

पटहरामी बुपथवसेरे ॥ यहहनरहि नमैंप्रेतरजामी

कपटकरततौसंगवहुतेरे ॥ तदपनवनततुमारद

पापरप्रनुभलाकरसकमेरे ॥ रघ्रगिनिजपततपतना

दिकजेवरतवैकुंठवसेरे ॥ विस्मरप्रेमभैक्तमततजति

हिववसुषनिधतुहिहेरे ॥ गणकाहृतजगविदतमह

मतिसतजनधुवतननेरे ॥ रावरिकृपाकृपानिधेतेहि

तिलदवाके

दीनसुतवछरडेरे ॥ किहविधताहिसदुलनागुणग

णवरननेहतघनेरे ॥ शेषसमेहशारदामुनिगण

जिहपटतरउपमाननेहेरे ॥ विश्वंभरस्वापकवनमा

87

८६ वि

लालऐंमधमकरग्रौग्रिस
कररणकाहसवर्के भटअ
रीमीलापकरिए

लीऐं प्रव जनिवसेऐं प्रवेसे॥ लालऐं मधमकरतिरक

रणकरं हस्तकरवकसभटभेरे॥ २०८॥ हरिनुमं

सुमेविपदवे हारी। जवगजजराजग्राहदुख पीड्यो

जौंलमानके

जवसमकर जलसहीनि ऐंचारी॥ हां हरिदेवविपद

मनतेउत [illegible] जो वाणी सोक हनी [illegible] परी

दवजलधरगनमवगिरानकहनेउपारी॥ मुंग

सुंडकाआकार जलमैंऐंप्र [illegible] क्योनहीं ऐं प्रवीहापद [illegible]

तवही [illegible] प्रगट भए

कारसललजातिमछतहुवेदनदसप्रगटमैं [illegible] री भा

द्रुपदसुतारिदुःशासनपीडतदीनदीनलखसक

लसहाई। पाहिकुकारनटरणपहुंचीप्रभुपकारवे

भाजई

चीरवढाई। वनलखधरमनृपनकुरुसपतिप्रेर

हिजदुखदीनो॥ नेकसागते सहसासिख्यनस

हितंप्रघपमनकीनो॥ नृपतिसुताहितकोऐं प्रध

रमीकृतसमजगतप्रकासी॥ तिं हदुखलखमेनृपतव

तुम्ह प्रभु जग पुर रवै कुंठ निवासी॥ किंहु विं हमां नकोहे

ऐसो अप्रभुतगुण

निहकर लिय क तगा पप्रभुति चारी॥ समस्त गुण प्रभु

किस अपराध सो ऐसे प्रभुतण्ण को विसारदी यो है

दीनलाल पर किहुं अपराध विसारो॥२२८॥ सुनश्रजा

जा नसुजान शिरोमणि॥ पावनपतित अधम जनन

तणतण

धरन सुनत वचान मदत है॥ [struck] ॥ गीध अजा

मिल गणिका भील निअपर मलेछ क तानी॥ परमअ

धरमी अघ निवधन ह्व तपन हि ततहित्त मानी॥

देवपं सु परम अघ सींचत जब निज भाग निहारे॥

घवराकर

कल्मष ताप कु बुद्धि हैं कांपत नहि निस्तार विचारें॥

जो आपकी दीठ मैं आवे

निपट अधीन दीन वरी विनती वत्सल दीन दीठ जो

तो मै वो हत हे

आवे॥ जौ हैं व हतन सुनो पद्म पति के सो वहुरु जो साउरभा

जै

ढ है॥ अंत विरद की लाज तुम्हे प्रभु हैं करणी वरस जन नजा

कृपा की प्राप्ती

नत॥ तो पहुं विं कर विना मोल के परम अवकेसे कृपा गति

४४
८१वि.१:

लालकहितहै जै सै लुधाकर्कै जो अ्मारतिप्रबहै विषमवनमें प्राप्तहै मृत्युपरावण होरहाहै पुरयह वातजानताहै मृत्युकीहु बंधुदोका पिंडकर्कै दिअ्ंनहोवाजोअन्नहै सोमिलेगा पुधानरतीहे॥परसोअनंदनहीमानता

लालकुधारसतिगतिवनविषमहु मृत्युभविष्यजौने

निजबंधुनपिंडनदानअन्नहुमिलैनसोमुदमानै

२८०॥श्रीपतिनामसकलपकलदायक॥वेगज्ञान

विज्ञाननिपमशमदानअबिलसाधनकरनायक

सर्वफलप्रदजिमसिंधुसलिलगतितीरथफलन

फलैसे॥विनहरिनामअधोगतिपापकरमनास

जिमैसे॥हिंदुसरससवहिपहसाधनजोपद्म

नंतकरीजे॥नामअंबविननिरफलसविवतंसु

न्यनामतिहलीजे॥नवसगनामनिरतजननता

रहसपृ

ही जीवसरससपंक्तिताई॥सारदसमविनबुद्धि

संतोकेसमाजमेउसकीअधमाईवर्तीजातहै

प्रकाशनिसंतसमाजअधमाई॥अबाद्रसाव

टचारसारवदजाटलनिवमअजवानी॥विनहरि

औकालिकीहानीकूनैवारे

नामहरनभवमलाहिअपरनबलिहतहानी॥जो

सुमरणप्रसंनिरखनामकीतैंमनरारलनसीनी
जोपद्विंधुसरसक्तुद्विवैरैलालवाहूनकहीदीनी
२८१ ॥ विनतीसुनपन्नगप्रसिगामी ॥ प्राप्चरा
चरपतिपरमेश्वरसदज्ञाननिधिसरवगस्यामी ॥ सा
पाधीश्वान्निमखगतिरंतरउतपतिपालनप्रलयनामी
कोरनकेरदासपल्लादिकृतवरुवसरसरहितअनु
गामी ॥ हैंअधीनअतिदीननलालवरअगअलप
गजग्रज्ञानी ॥ अवस्याधीनवृतंतकरमसुनवंतापत
कुरकलुखरजधानी ॥ तिहतेंआपहुकहुनमजा
जनयहसंमउचितमैनजोठानी ॥ तनकविभवकस
सबलसुरासुरनीवहूपरनकरतद्विगदानी ॥ वैसो
हुवाहोतुमैतनश्रीपतिपतनठौरकोआनी ॥ तिहते

८९
८८ दिं

ताहि।। एक तुम्ह दीन्हा तुम्हें अनेक पतत ठकुरानी।। पुन
पुन दीन पुकार जैहि हिंलाय निज विरद बखानी
लालसा हृदय हरि प्रपनो कि जै पीयत सारंग पानी।।
२८२।। हा हरि कोई सुनत न करुण।। दीन मलीन राव
रे दरबार बसे दिन निज प्राचणा।। प्रभु मित नग हार
पियार बहु परी परी न करी करी स्वामी।। प्राप्रव
राधा प्रसाद धुरिदकि पनिद सत जाहि हिदिनते ने नामी
वहु विध विलप विलप विपदा निज श्री वर तुम्ह प्रति गा
ई।। प्रति कोमल उपमान रहित हिय किह विध द्यरी नि
ठुराई।। हम मग हरस्सुनी अवन विश्वंभर प्रजग्र वनानि
गगन तुम्ह जोई।। परम दयावर दीन जनन नहि तसग
न चत रसन जेहई।। वेद श्रुति न सम तकार समपत निस

तवनतनसांई।।जद्यपि पतत १रातन नसभमि ललसा
लसरसनहितारे।।तद्यपि हि विहसांतरमाधव प्रप
नाविद्वनवद्धरे।।२८२।। रेमनकंहातातजमेरे।।श्रीप
तिस्नानरूपतेछतपति सदाप्रकासरूपसठतेरे।।तीनका
लमैनहिकोउप्रवसरजोतोविनगम्मिपावै।।जीवन
मरननकवहूतेरेदुखसुखनिकटनग्रावै।।निस्तदि
नहूरिपदविमखमाएवरपहगतिखलतैपाई।।भंतमां
तकेनर्कदुसहदुखचौरासीफिरप्राई।।प्रदनवहग
तिविदतलखतजगपिनुविमखनसुतभावै।।सुदर
गुणजुतासससुप्रीतिहूप्रभिमतकवहूनपावै।।धनद
तानिधवरप्रहसतरूहप्रीतमकरनीके।।परमदपा
लुसदाहीतकारीविश्वंभरकरफीके।।प्रवनिजहामि

९०

८५ ॥ वि॰

समस्र नि जउपरवरउपकारउकारस्तु नाउं ॥ पुनपुन

हरिपदसुमरलाल नंग्राममहननदनाउं ॥ २८४ ॥

मनहरिरूप ग्रनूपनिरषवर ॥ स्यामरूपभुभचर

णनलनवतकदनकलुषगावतसुरमुनिनर ॥ परम

पुनीतपीतमणिपग जुतजरीजुतजगमगजोती

परममनोहरसविप्रासिदुति हरसिद्रिगचकचौधतधो

ती ॥ पीतअंगरषापीतंवरवर पीतमुकटमणि

छाई ॥ छविजुतजानुरापलानी वहुवपुवरनीर

दछविपतभाई ॥ चारभुजागतिसंषचक्रगदवारजव

रनविराजै ॥ भूषणाविभूषनतनकनपावतषे

जकोजनकविलाजै ॥ सुंदरीअंगर्नैवरवंवजणजुत

अंगदविविधनमाई ॥ सोजनतलषगजराजगरवत

भुजो को देष के गजराज लो
जो कहा लो की उ लीकर लेत है

जब कुंडलि चरन बनाई। नाभि गंभीर कमल भव लखि जे

हेरि थकित भए हरि नाई। पीत जनेउ भ्रगुपद चिन्ह बतन

मासु के अमल नाई। ग्रीवा दर कै सम मणि मुकताव

न माला दिक सुंदर। जहि छवि छके रहे तजन भागी

तजत जम्भ गज भंदर। चिबुक चारु रद छद प्रसनारद

सन द्रम वलयँ काही।। नासा श्रवन जनु दर मग प्रवली

विद्रुम तर वर रंचा ही।। जनु नभ घन पर तड़ित बीजवर

विद्रुम चार बनाई। सुधा सींच मनभव किर स्नान हि

किए उगाय सुहाई। श्रवन सुभग कुंडल छवि छाज

त मकरा कृत वर सरे। रुचिर कपोल शकर सामि निंदत।

त्रिभुवन सुषमा हरे। पाटल नयन कोकनद छवि हर

भक्तजनन सुखकारी।। नैव बिलोकन जन मन मन की

91
९० वि:

जरत जरावन हारी। भाल विशाल अस कछु धारी। अलि गन जलज अग्र मांही। कोटि कोटि रति पति लख

लाजत उपमा किम बान्हि जाही। पुरट संघासन पद्म

राग परि ति हरा जत सुबदानी। सरस रस सोभाज

व चितवत अस तंच्वल गति ठानी। वाम भाग अद्भुत

छवि छजत व सन अलंकृत करमा। सकी सती सोह

दि भंव भामाल जत लख जिह परमा। परम धाम ब

भुराजत हू ह विध परख द विपुल सु हई। छत्र चंवर व

हु विध छवि पावत जस गावत मुनि साई। सनकादिक

ब्रह्मा ... गिरपति दरसन हित कर जोरे। प्रेम सुधा

करसु धा पीवत जनु नैन चकोर चटोरे। वारवार हरि

परम नवारत प्रेम मगन सुध भूले। नैन चुचात वि

जब विरह काहु बसम गृभावत है
तब पीडत हृ ग हृ ग कै नहु चात है
औरंनी है जे सनकादि है स्पा जोमे
आपावत । जे हृत

हृदय पीडत विरह नन बाहि तिरसीलै ॥ कंहृ विध विस्तुप्रभा

पावै

जो मिरवै कि मसंमृत दुषपारे ॥ आपनो सुबलषसम

रविसारनलाल सरसतन हारै ॥ १९५ ॥ मनबांछत हृ

रिदेहु कृपाला ॥ दीनबंधु पावन पतत नतन बेर आरति

हरण विसाला ॥ दास हृदय हु अदेवनाहि तुमरे वदत

जटल श्रुतिचारी ॥ मुहृ मंगत हैं दानि शिरोमणि पूर

अभिलाष हमारी ॥ तब मुष छवि प्रभु असरस धरपाव

रहरण करुवहृं ओर ॥ ममम नपा न करै हाण दाण प्रति

तिहरस रसरस कतब कोर ॥ उनतबर वअनूपम चितबनथा

नपरमाध न जानै ॥ सो मन लुब्ध पर षसमत्यामी ॥

निसवासर हितठानै ॥ निज हृत वरमकरे ऊन कलप

न जेन स्यातिदरसावै ॥ तिंहृत जअध मउधारम बानो

92

तेवसमसमनपवप्रावे।।पहभिहुवनवद्दसवानिधमं

गतदीजेदानी।।ध्वनतुमेनदरिप्रगमलालनिधहे

हरिलखंगपानी।।२८६।।पहदुबनापनरकतेभा

री।।सुंदरस्वमस्तुबदवत्सलजननवकरुणावरुनिर

वारी।।महंप्रधमप्रधमागनिअनिहुतनवन

धनरिसैवे।।पुननिजचरणजलज्ञाधितवनप्रभु

धिननतावबिसरेवे।।प्रवरतनवदुबमोहिनसा

लतपहवडदुबंममंटरो।।लाविधमापतपितागुर

स्वामीतुमतजवतंतकारो।।सवरप्रमपविएषलवि

वरतिसजनजनगतिपाई।।सुपनेहुहेसावनकामा

वेसठसंसजनरसवहाई।।पिहदुबमजवहुजपीसा

मोहिबलवपतंतिहहतमारो।।कीननतापवकिर

विधमाबेदामनमोलनिकोस॥जिंहसमरपतेग्रवि

तदीनकीवाछतकीनगुसंधु॥तिंरजेग्रधमलालकी

ग्रभिमतवरतवाहवदसर्ई॥२७॥मनवरमहंमो

हमदपान॥कुपपहुसुपपसमसहठहानतलाज्ञार

दितग्रजान॥महग्रगमसंसापग्रहितुतेजासविलो

वनतेव॥रूपामईउवनिमबंजरमेविजेवरनजिंह

टेक॥जनहितनिरतवपानिधवासीग्रससाहिवतज

हूर॥विवेग्रमनमहंरजाहूरतवसतदूरतुहिदूर॥ग्रस

मनुजनवरहपभिलाषीवछुनवनजजिंहराठ॥जं

हविधस्यानतरसहतकीने७न७नयादतजरठ॥विव

धजतनवरजिंहलगिमगतितवदितरिबवहुदी

न॥तुमनगहितजिंमग्रोबदसुबदाकालगग्री

मतिहीना।गहजतनकहाधहिनवीऽप्रवहेसकलसिरा

नर्कदेवकेजिवको

नीऽग्रासा।तकग्रेरहुग्रात्महनपापीनरकनिहरनत्रा

जालनहि

सा॥ २८८।मननंममहिनपसुमोवरनेहा।वहुजान

ऽआज्ञाकारि सहस्वे

मनतेतोरनिदेसीरहिहेंदमवतगेहा।तिंहकारण

ऽप्रपवा।कमकरुणा।ररमेमऽप्रभिसाव।वारवारऽप्र

ससमपनिमिलहेसुनहुकपनतजमाव॥ जिंह

ऽअविद्यारुपमार्गमे

पपहिवरचहितसुवंभितविनतिंहतजमिजविस्या

सा॥मिरमरप्रेमविमुवरपरमा।निसवासर तिंह

प्पास॥स्वातिसुरसरचविधतपपीहं जैमतिमवर

ड्रिढनेम।नाहितसुवकीकहतवहनहेंकठनविंदऽप्र

जैसे मेघ ऽअंतहकाल

देम॥तिहनप्रीवरनप्रहोहिगो।जिमविदाप्रमली

जैसेमलीनरदुरहै

ना॥तिंहतेउचितऽप्रजहुनिजहितलपमारवहिना।

प्रिय स्वी ह्न ॥ बिगरी बिन तन नेह स लगत है वार न इव वक्र

लाल ॥ इस हृ बिलोक बिषा जम पुर की ॥ निज हित जम

ऽआपना हित ऽअवने हाथ पाल

जेक्रर पाल ॥ २८८ ॥ रे मन नमर तवाद अनआई

अनल से सरस पर जुवति निरष सठ पमत ससलभ सम

धाई ॥ तुंदरासुत बिबिध अनाद रवरस तवरतति ह

सेवा ॥ नैकल जत नहि मठ स्यान इवस रवत ताट

नेटवा ॥ सुधा सरस प्रभु सुजस मरन अरू जनम दुख

हर जम मारे ॥ समन इरन न नहि अच्यो भावन पुट जंत्र

धवँरतैं वारे ॥ करवर अवुद्धि घन अनरे अवगुन अंतस

भेपरसोबे ॥ तिंह पी डाकिम जात भोग बिन जै बोवे

तेई बोबे ॥ अस वकरनी करछी ठइरत नहि पुन अवक

रवरसनेते ॥ निमं अला न गति दुरद तिदा रति अंकुर

सुखस्वजरन ते। अव बहु अघन ते उबस्यो चाहे लालक

हत करसे म॥ आगामी संचित अघ समधन हेम

हेमन उस प्रवका जीवना जग मे अगम है

अन लह हरि प्रेम॥ २४०॥ रमन जीवन अगम मतो

मह अगम संसार समुद्र मे जे हा जसुद्धि जिसका बसी लानही

सके॥ महं अगम भवसिंधु बसी लेपसु बद जनज

नजा सके॥ सकल सुरसुर विन हू बसी ले विपत धा

विपत रूपी समुद्र की धार के भर मै विकल हो बहत है कोउ मिकाय नाही

र भर मांही॥ विकल बहत न हि कोउ उवारत लख

विकार जा तो अब लगर हा सगो सब को
देखदेख विमुख मे त जा ते है

लखमुख विमुखा ही॥ जद्यपि हठ कर निपट हटी लोस

तै भी अपने हित का अनहित देख कर

ठतु मकठिन करत रा॥ जद्यपि निज हित अनहित निरख

जा ररख करनो पर त है

त करत वन परत जरत रा॥ तिह से पुन पुन सदुल सूपामि

ध सुभग ही तिर निधवासी॥ तो हि सुनाव सुनाव

पुकारत आश्रय कर अघरासी॥ अपरन तें हि सवां

तीनो भवनो मै औ पी नो कालो मे त्रिदशा द व ता

पु धिर दाव त्रिभुवन त्रिदश त्रिकाला॥ सकल आपु

किनअपनिवानीविवधविधनकहहाल।।पाहनवँस
रसनिहतारे सिलौउधारेनवार।।जुमससमपनतनथपन
निंहविरदहे तिहमजसवमपवटार।।२५१।।हैंमन
हेरसनजनवगमार।।किंहलगकसनअचगरीनिजगमरि
समनवासतजघार।।ईद्रीगननननगनसकजेतम्र
पअवलमुवमारी।।सकलसुरासुरजीनविदनजग
पततकीनस्वचारी।।तुमकिंहगिमनीमैंसुनपामर
जीवतदशातिहारी।।कपनजोगवनहिकासरजन।
तोहिनिरषतविपदविसारी।।दिनहप्रवलरिपुज्वा।
लविषमविनवाढनविपुलविहीन।।तोरनासदी
सतविवेकरहिकहिहैंकाहूकहीन।।एकाएकलवला
षवतनकीलषतजातदिनरैन।।सोचतनकनहि

95

९४वि:
१:

कोरीभीगुजैसोधनहि
लिपटतुछधनजेसंसार
केहैतिनहितग्रहेनरहतहै

निपटतुछधनजिहैहिनरहिनप्रवेन॥ निरखनिर

सोनेसु

खतवबुद्धिहीननतादुखहतसुषचहिलाल॥ सो

वकीबातरहीनरतोहिगांठमैप्रश्नतापरपमालधनजममार्गमेरहेगा

तोरहीपछुतानगांठतवजममारगप्रतिमाल॥ ९४

२॥ रेमनवहुरसमयनहीमिलहै॥ प्रवकीविग

रीवनैनवालैसप्रवलकालजवगिलहै॥ कोनस

कत्यरत

मऊपरनिकटत्यागहतजकरजवदरसहिसेव॥ तूंप्र

प्रारब्धकू

तीतहिंनिरखनगिनतकछुकुमतिदवापैदेव॥ सि

तरुनबुधोमेसम्मतकियाहै

ध

सिषसुनतकुपथगमनतजेवु[illegible]सम्मतितिहकीन॥

प्रज्वलात

वांछतकेहांम्हलजुततेजहुविपतदयाप्रहीन

जरतसाबदस्नवदनप्रसुरकीविदजचतुरदसभौ

नारुठकोतजकेतिनकेग्रजवर्तीजनतकनीहूपा

न॥ रहेहृदकंप्रिपवंधुनहठतनकीयअनुवर्तिगो

है

न॥ विबधजतनकरहैठप्रबोधिजउत्तिपुत्तिकरनी

ठ।।एकनमानतहठगहिंसाष्ट्रेकविमुक्तिकरनेठ।।

विवधजोनमहिविवधभोगकरविवधपीरजैंकाई

ष

तदपिनभकोविरसतिंहरश्रमहुलालनिरंप्रतिबाई

नकजप्राप्तिर

४९८।।रेमननीचनिलापकताते।।वरवरुवपुषविस

अर्थ

ध्यानवारेनिपटहिंवादविपाते।।जिंहजाचतसुरस

त्रिसप्राप्तिरजै प्राप्तहोकर — वेपश्रीवेदज्ञात

कलबंचरसाचरतिहराअतिदूरकुभाग।।७४९।।तेरतेजिम

जैसेसकरोरकोवसंतकीबोरीभीसागनहीलागजगपन्नहीरहताहै

क्षीरंवसंतहनैकनलागतलाग।।वरुप्रापथिलानि

तेरेरूपपश्रेते डेनीप्रापा — गुपनेजानेनंजीवतहै

लघलरवलादरपनवरततिदरे।।निजनानेजीवन

नंक्विचारतपरतप्रपारहिकारे।।मतमढश्रुतिसंत।

नियमपहविसुविमबनेजीव।।केवलैहतुमापुपी

तिसकलीवकाडेलजनमधमानकीपीडाकरकयापीडादेवनेकाहेहै

डाकरसंभ्रतजनमकलीव।।त्रिविधतापवीडतपल

जोनर्केसैभीप्रस्थानतोसुरप्रस्थानेकीकथाकहनेहै

नरकनसुफलकिरिनकीकाह।।सुबदसमैंनसम

96

९५ वि॰

लैतप्राणजनुनवजलनिरखतजाहु।।लंपटउरसमी

हिमहिमामाहिंमहामलिनेंभुत्यागा।।विषयसेयसु

षलालचहिंहूंस्भागाजिमकागा।।२९४।।रेमन

श्रीपतिकेयांनसत्नारैं।हिजस्तुतमत्तनकवहुरमिंरंश्रा

नेमेटाप्रमिटविधकारे।कोपानलिजिंहभुवनचतुर

दसभस्मसमर्थमहान।प्रंवरीबहितिहंसुरवासहि

रहोनत्रिभुवनंपान।।विधप्रसनतजबुरामपति

ग्रहसुधासरसजिंहनाहि।।दासीसुवनविदरतिय

निरमतिवदलीफलाधिलमाहिं।।कीनंसुरस्वैप्रस

कवनदयानिधजनंतारे।उग्रसैनकंसा

सुरवंदीग्रहगतिदुषतिंहटरे।।सुरनंदीनलषदान

प्रिरामलिजिहदीनेवाहिंवावें।।नैवसभ्रुपनहिजन

हिकीजीवलिजांग्वतबुद्धिगाधै।।तुमसेवतॅपुहम्भिवी

पीउतजेपरतनपारावार।।पारावारऽप्रपरमंवलाल

कहितंवरेपार।।२९५।।हरिदिनऽप्रपरमंनमनतेरे।।

मऊकरतवतप्राकृतसेवाफरतरेहॅफनेनपादीहेरे

विमलविलोकविपलगुणवारीचिंतामणिसमपाई।।

नरदेहीस्वरमुकतनिसेनीविधवसातवंकरऽप्राई।।

सउगहुऽप्रारंमकजनपालकविश्वंभरकीदोरा।।न

तिछलीछिनलेहलखनिरवलोकामादिकवलचौ

र।।।।परवंदऊदायवनपऽप्राश्रितलखतसकरनिज

जोरा।।वरनसकतभयभीतनिहारतनिकटनऽप्राव

तभैरा।।सकलवहिनवहिदिनवहुऽप्रवसेरऽप्रसे

टेरे।।विषमठगनकरठगौकहनहिठहिरतितहेरे।।

९७

५६ वि॰

१॰ लालमहलमणिपायनुविनभ्रम। मैंफलगमाई

पामर

संतसमाजधिकारनि॰केवलंतिहवदलाई॥५६

रेमनसुबनतनकुतैंपायो॥बालसबालपनोबा

आय जोरवारे बाल को सो उरगरहा

लनसंगखेलसजोरनसोझरद्यायो॥मैटीसोचजो

वनगतिपामरपाइलसिमरसकाम॥परमभतम

कामके मद मे अमत दूसरा दृश्य।

रमारनेहबततियविनप्रपरसुनाम॥ततपसंतुर

दितदुषदारणभोगसमग्रिनहीन॥परजुवतिनसुं

तिनके नाम्रिलनेमे

दरवपुनिरवतंतिंहरभ्रनमिलनमलीन॥देपनवी

अवमध्यवअवस्थावरजोर

तगभ्रवस्थामध्यवतवप्रपतवरजोर॥हानिलाभकु

लकानससमरउरतच्योनापवबवहोर॥रहोसदभ्र

भभ्रलमपमरठनवरतविचार॥पीरासमननिवर

तजेवेप्रावचहितवकाईसार॥प्रसधारनतवधर

ये स्त्री ते रीधारना मैं धरर है

तेरी बड़ाई आरम ठी मैं पड़ी औ श्री रते रे स्या हू पटी
औ कुलसें पधर औ श्रै है तेरे कौ जसमें कालिब
पड़ी औ श्रे सीते रीझ दृष्टि मैं श्रृंगार पड़े ॥

बड़ाई भाषवरी सिरछर। कुलसैं अमम सुजससै

कोलिब (कु) मति मैं लाल श्रृंगार ॥२८॥ महाराज श्र

दिनायक साई ॥ पावन पतित हनन जनन बरिसै लालो

कचतुर दशरथी ॥ नाथ मैं दि विध दर्मैं (ते) बैठन वि

कल विलोकहू पाल ॥ नैवकहू पांध्य तामी विवैते (त)

औ श्राप की हू पर्ये मैं सानी चितवन की नो की ढाल है तिस तें काहू चितवत नहीं

न चितवत काहू न ढाल। हैं मति हीन विविध जतन

न कर विमुख मन हिं सम गावत। न हि समगम अवतव

तव श्री रहु पाहि पाहि कर गावत ॥ परेसो कुपंथ न सुधर

न मोचै पवि पवि मरे कुभाग। कहू श्रविवेक मन हि म

तुम्हारे आगे

नावत तुम बिन वनत तुहि आगा। श्रवव वर [illegible] दयाविलो

हेरे मन की कूरता तें जो श्राप के से से हार हां है मेरे वर

कविरद निज पाहि पाहि तजो रस। जो तैं विगरी विधु ल

जन मकी पाल श्रणत श्रच कोस। तव दिन श्रपर दुश्र

९७ वि
६
१३

रनक्षसत प्रधमनवरकरने मा। कीनप्रवेसविस
ऊसलदेम
दवेकुं ठहलालहृद्धसुखदेमा॥ २९८॥ हरिकतक
रतनदुपावरारी॥ कुमति कुपूतकलहप्रियक्रोधी
कुटलकुविधि कुविचारी॥ नेवा नमितवदपद्मप्र
णतहै पाहिप्रकारतिहारे॥ विजह विषमसंकटगदि
पनहितपारिपतनतउधारे॥ प्रबकहुवाण्याकरक
मंडल पु प्राणका पनउपमानदिहिनभको
सितकुमंडलमंडउपमानविहिना॥ जवनसरत
तवसकलसुरासुरनुहिनमिवाहनतलीना॥ हैं जिं
दसगन्जिविधसरसमतिवहुविधकुवस्नाई
नमतपाद
पाहि पाहि शरणगतिपालहुं जदुराई॥ नेवनिरख
प्रभुनि वलनिपटकीनैवनवरतसमाला॥
प्रवपनविदधरवरजनिरादरवरुणावरप्रचसाल

जिसके पद सं हरि ध्यान मैं दुनी आदि ते
अस्थान न ह्वै दीन त हीनं ताते दुखित है
ऐसा जो प्रणत लालसा है तिसको पालन न
हीं करत पं वपत्त भी पाऊं कौन भांत है

जिंह पल परसादि सादु नीनह सन्त दुखित दीनं दीनं रात

प्रणतं न पालन न करत लाल बेलां पं परत किं हृ भान ॥ ०॥

जो आपते कवी हासीन हीं भई

२८५॥ हरि बिनु मरत न भई उप [illegible] हासी । कत हु
ष

अश्रम नपवे

एकं [illegible] ल नाम सुमर बि [illegible] प्रन जानत अघ रासी ॥

सकुचन करी देत निज पुर गति काट दुःसह जम पासि

कतहु दीन हम सर सपु कारत बार बार करु आस ॥

जिनकी तरह

कलि श्रीमन्त भर परज हरत तिं हु वत करत न बिस्वास ॥

विरद लाज विं हु कजन न लागत आहू पराज सु [illegible] रास

आरति विनय विवस करदीन न तुम्हें विविध श्रम दीन

भंजभंज किस परत [illegible] व मानेउ नाउ सार धीकीम ॥ जो

वि निरषम मनाप मलिन मन करत न संग्रह नीठ ॥

अतह कारन कीनि मल कर्त्
हाही जो दी ठहै आपकी

तो सुम्हे कर वह पाव पाधर विमल वरन करदीठ ॥

कामादिकजेबल १४ तसवरहै
तिनोनेमेरेसाथ मिलावर सर्व
मेसुदृतर १ धनसा विवधवपुट
वोर्कैभमतीयोनेछि नु

रावरकृपाविनानहिंदीसमैंवनचतुरदशदेव
श्री कोऊ औरयवकसेवाकर्के
कलहिकूरकपटरतकोंविमलभयेकोऊसेव॥३००

हाहरिविमनविलोवतदीन॥किये प्रनाथसाथ

लिलेनसवरकामादिकबलपीन॥सकलसुकृत

धनविवधवपटकूरकुमतिनलियोसुछीन॥१४
सरवसधनतेविहीन आपको निरखवार मेराजीवधीरनहीधरत

वनधरतधरधीरनिरखनिजसरवससुधनविहीन॥विछलविदतजगविसदसानकृतकीरतपरमप्रवीन॥जेननगनरदनुअसुरसुरमगनधनदेरिवीह॥तिनहितनिपटनिरासहोवतवंचरणशरणगहि
हेवीनचतुरमैनेआप पालकशाविदत
लीन॥वेरवेरकरटेरविवधविधदशाविदनकीव वेरदर्दहै
आपकी तर्फ देरदेवार धीरनार्हेरहित प्रौमपसाभीना हुपा
वीन॥परतदेरलषप्रारराक्सीधीररहितभयवीन॥

पाहिपाहिकरपीर१कारतवहुरहोंछुमलीन॥जो

जे वर अप्रे सीतारामन मे गजन कर्के मेरी वेदन को न ही हरा क्या
लाल ने अप्र हे सर्व पीड़ा के हरन ही लई जब कु हनु के गात बनु
रत हरे ग गो हा से भी हमारे दुख न कटे गो जो संपर्गि अ्रा
७ भर वा पन कि ना भाव सं पर्णि अप्रा ७ भर जो मै क हो तौ भी न कह

अस मन गुन हरत न वेदन लाल सकल कह लीना॥
तौ नतन कदु बकट तह मारो सकल अप्रा पु भर कीन
३०१॥ विरद विलोकत पर धन निधि बासी॥ जिंह हरि नभ
नन ७ कार दुरद कीच लै प्रिया तज सुबद रमासी॥ जि
म छ भ्रंस भ्रसांड वि ७ स परह अव नाशन सम नाही॥
जिंह द्विज विप्र दीन्ह पवक छ गंच दप वद मु विकरवा
ही॥ मांगत भए सकल तज प्रभुता निवट भिखारी हे य
कहे कवनं अप्रल जप्र परमा हि जान दीन वहे दुखरोय॥
द्रोण तन पवक रके पनि पम वकर भीम गप्र जा सव्रचलाये
नपति वरे दात गर्भ हनन द्विज वु स भ्रम पति द्विज ठाये॥
जिंह द्विज वे ठि उदर कृत निछ फल विभ्रन नाम दंड संभारी
जमन किरात कुपथ पथलगामी नीच निशाचर मारी॥

स के जो
र ल व र्के
१ प की ७
ध ल हि
प्रि ए

३ जा

पसार

तिभ्र नो सव को जो स म र्प प्र प्र

सं २२

१००

२८८ वि॰

हः

जिहहि जब कठिन कुसंवट सहि सहि फिर सच उर अधिका

री॥ कवन हेत गुहि पाप महि धर लाल नन जार मसारी

२०२॥ हे हरि बहुत हि वस मुहि दीने॥ सचमन विरह पेषा

वाली

धव हित भासवक लमने नार परीने॥ सुन कृपाल प्रसनि

पट विहुरता कीन प्रास मुहि तुमने॥ जरवर सुमन तजत

बहुत अपराध न जद्यप मेरे

नहि सिमरत तिमैं तजेया मुहि मन ते॥ बहुत अपराधु न जान

दीन के हैं तो भी आप की दया पर सोच है

वियोग जन्य जो दीरघ विप

र विदीन के तदपि दया पर सोच॥ दीरघ विपत वियोग

जनन त [illegible] धरत नव नेरत्यो संकोच॥ अबन वसम जरत

मेरी गरीब की पीर

नहि सुब निध मे गरीब की पीर। सम जस सुरत मम कर

त किनाहि करत कुगति अधीर॥ निज कृत वरसम कठ

न फल भुगवन अब सपरतन हि आन॥ तुम हि न बर

अमोद रहे निज वतन निसप समान॥ लालि कविर

[illegible]

जे करुणाकर [illegible] लालद्रक विनय करुणाकर वैं आपके अंगा की करना है ताप जोड़ कर क्या विविध तरह की जो लिख्या है वे सब घु में है को [illegible] कुरे परंतु जा तिहूं णा लु ताकी जो रुप है सो कदापि काल भी में है। कौन विसरै॥ १

पकरतेँ करुणा करुणाकर करजोर॥ विविधविथाविनविकलकरै सुहि सुरतन विसरै तोर॥ ३०३॥ हेस

रथीपत मजल पर करुण॥ निरबविकल तवतत्तार

फतहै ऐसें दिव्याध वि पच्चरण॥ प्रथम मेल तव सुख

सिमरत अब विरह विथाकी पीर॥ जोनपरी किंहूं अं

तनकाहू दिहूल कीन सरीर॥ तव गंभीरता सुदरता

ई नैकन भई मलीन॥ मम प्रानन तवविरह विवस अ

ति कठन प्रवलपन कीन॥ तजाव सरीर वहु जहि अव

धीन

सहि जीहि [illegible] रहित कओ॥ सुख निधसु नहु तिहूं रे अ

मिलेजीवन धन तज दीन॥ एकदिन पह मकरत

तिहूं रे कि सकल जग माने॥ तास लाज वर दीन जा

जो जैव अर्जी मानै तेजै करत है

ने कै तनक अर जजो माने॥ परम मलीन मीनवात

[illegible] हेरु दुख बोध हीन [illegible] मन जो आपका दिजो गई [illegible] ति दह विथा की पीर जो न परी अगाड़ी [illegible] पीर जाको अब [illegible] जैसें दारा सीर दि [illegible] सुकर तकी [illegible] आपकी गंभीरता और सुंदरता [illegible] मलीन न भई [illegible] हे [illegible] विरह के विवस [illegible] कठन [illegible] है कया [illegible] त्याग [illegible] आधीन [illegible] एक दिन [illegible] नर [illegible] जगजा [illegible] जो माने॥ परम मलीन मीन [illegible] वाल [illegible]

कपरलालनिठुरजानरा॥सुंदरतुंगतरंगमालकरक

रसपसमुद्विवार॥२०४॥पुनः॥अनन्योक्ति॥हैपदलोद

रसुबदघनस्याम॥निपटनिवलनअगेअरसुरस

हितनवहछविलुब्धललाम॥वऽतदिवसदीहदाह

निदघहदुखितविरदतनहछाम॥अववहुवेरभईउसव

नसुबकलनपरकिहुजाम॥अवपरवसुजरपसखिजसुह

वनिजीवनदानिहुनाम॥तिनाहिजाचिजियजरन

नमाहैतिहतनहिंविश्राम॥परदेमववरपीनमअवि

ममांगनमगनमान॥जानवलावेहतुतिहहमरीति

हसुबघरतनकान॥तोपेरस्यापरससपूरनपरम

पदबसमान॥अबसेवेभवपरवहुसवरावतहाहाविवध

विधान॥जलपलतधरलघुनिपटपपीहानिठुरनिरव

तिहहनि। नैवसुनाउमधुरमुदरायक ... प्रवस सहित

निजवानि२०५॥ हरिहैंबहुकीनप्रकार॥ गाजग

जमहाराजनेतारददरविपतबुआपप्रपार। रावरहीत परतपावनता

जद्यपमैपापी

नेमोहिसपरसतकारनकवनलूपाल॥ पाथिन

भगवानकेहाथपरआपकीरीतिजासपरसनतेमैपततोकेपलकहदैनजोगनहीरहयो

पलसुहिदैनजोगहेंरहयोनेजदपिविकराल॥

तुमारेगुणसमरकेहैंअपगुनपालनेआपनीरीतहै

तवगुनसमरअभितअपगुनपलसैहंदयालबी

लबी धनाढ्य

नमोर॥ ज्योगयवानपितासिरसुतसठगिनतना

मसम्रलकलीकोसबकेआपकेप्राण

दोष

आपनबोर॥ वलिमलमलनिरबरावरपनजो

नेजोपततोकोत्यागदियोहै तोहैअतिअजानरहयो

दीपपततनत्याग। जोहैंनिपटअजानरहेनेत

जोजानतहैअधकोवरत

अघवतकरतअभाग। अथजजानपरचवादमा

सनेह

कररापिवेमारदुलार॥ नयेहुकम प स्नेपा

नजिहजननिनेनेजनकार ति ... जगद

102
२०१ वि

रैनदिन लालकी सकल भुवन सिरताज ॥ सुषदा
श्रवन सुन हरष समार हु विसाद विरदकी लाज
२०६ ॥ हरि किरकहे जाय निज घोर । कोम मसमाम
तिश्रधमदिन पर वसन हरष द्रिगकोर । विन हूं श्रव
न मम चरत अ पावन ठाहर दे जनकोउ । सातवि
तासुन मिव्रहितने हैं धरे धीर विद्र हूजोउ ॥ विना
सुने गति यह जवगुदरे तनवधि मह हूवै ऐहोंहि ॥
वर अनुभलपर निज अनुभल सब ममयेटें विस
वाहि ॥ निज अनुभलहू तैं गति दीनी संभ्रम विद
तप्र अर । कालकूट कुच मे लिप्त तनातवमु बनाय
वैरर ॥ सर सम सोमति गति गति पावन पातक अ
चलअजार । चवितलोक लोके ग्राव पापर अउनच

रितनिहार॥७ प्रसउदारता। निरखसावरीलालपतन

किपटेर॥ जिमैआवनस्तुनपरमउदारहिसाखकजुर

तनेदेर॥ ३०॥ हरि प्रवकरेवुठाहुनवेरा॥ मन

प्रगममवसिंधु धार महि वुउतलखममवेरा॥ ज

पतपकरनधारवु समवपरसतनजगएपराई॥ निप

ट निरख प्रसमरणविपद मए एकनरस्योसहाई॥ एक

लकूवकरेरनकीनीकानवरसनहिकोई॥ जिरवहु

सुनीनस्तुनीकरततेउदेवदनुजनंनरजोई॥ कामादि

कपलकूरवु संगिनतिनपदपालमुहि घाला॥ जेनि

हृदिंतपस्योरवं कठिनकरमदृतपाला॥ सकलप्रस

म प्रतिविदान समनपरसविधिवुशाल प्रपार॥ जु

मसमनुमहितकेदपाकरवरुणाकरकरतार॥ विवध

मति विबध तिनय पर नस दृशै निवल अआह आजो बेरा है
एक रसोकि सको शमा हरी पवनते पार करे दि... जिए हे सभर
लाल पततआपको है, २

विनयपरविवसवारिनिधवेरावहितविजोर।।कृपवि-

आर पारकरदीजेलालपततप्रभुतोर।।३०८।।हेह-

रिअधमनिलायकजेरो।।कृपासिंधुसुंदरअतिसावी
आपनकृत निरखनवेरो मेरो करो

निजवृतनिरखनिवेरो।।महाविषमभवपासप्रवल
विलंबमकोहै आपकेहृदयमैदयाकोवसेरो है

महिंपीरतभेयपुअवेरो।।किमसतिहिजानविवयदुखघेर
केसकरके मेरो दुखकै से सहाररहेहै

घंतवहिंवदपावसेरे।।जनपरितापद्रवतदेवतजेकि
मेरे हेत कै से करे रेभटो हे देव

मंममहितसुकेरेसे।।स्वाभाविकजिंहदेवहितहित
उत्कृष्ट

तुमेदीनवहुतेरे।।संकटजायवदकायमपरतपपर
तवकुलै पर आपको
प्रेरक

करनपरेसे।।अनजिनअवरचरितमुददानीदीन
जिनोकर्के दीनोकेमन

नभीनदरेसे।।शरणपालअघहरनदयाकरतहा
आपकोजै सेआपमैअमितगुणहैतिनमैसेएक

भाजनहंटेसे।।असगुनअमितनएकसरसभुतिउप
भी आपके गुण सदृश उपमानन कोमै न तिहुं लो

माननकहुहेरो।।अपतिपततआपतिंगतिमापतिप

औसेपततलालकोनिबाजहो
हु आपकाबेतारुवपदकवले१

नतिसुमतिगतिकेसे॥ लेहु निबाहिं लाल कहु हठकर

सुवसवसेनचषेसे॥२०८॥ हरिजनजंतुमैंकहौंहसजा

महि
हीं॥ सजनमहिष्ठनवर्तमानंठहरठामभिहंहन्नाहीं॥ प्रभु

रसवन
कोअस्था
न

महं करुहौ सुरासुरंसमर यासकलवकहुचतंदानी॥ कव

नंपतनवकै हि निजसुहेतुविनंदीनसुत्रिंगुनंषानी॥ न

वंविरोधरंतिविविधंमिसाचरषेनुब्रमनहरीनीचा॥ स

आपनेपरकेतीसवला ए   औसाकवनअबुद्धि

करंसहितुटंवंकरोरनंसुछरवसाएवीचा॥ प्रसवपा

हैआपसद्रिसहूपालकोतजकेजौनसेदेवतानेकरुकते आर देत हैं तिनकी प्र

लंनजकवनअवुद्धिसठ नैवंचकजेजारें॥ तिनप्रसन्न

सन्नता है तआपकोगम्यतहे जोवदाविप्रसन्नभीहो आनतौ तार नहीं सकत

केरनहितवषितेनजोग मवेसेप्रसन्ननहिंतारें॥ वहुजवरव

फेरवहु तवबति जो ... र जोग नकमैंकरवर देवतो के शरीर पा एहै अव

रजवकसमदिउलकरविबुधवपुषातिनपाए॥ प्रपम

मतुहे तेअववके आए हैं तिसकेपरमवि ओने अववोसाद दिए हैं अ

तमकनेवड़ेभएअववपरमविभवबौराए॥ तिनैंनजरत

वतिनोकोनजरहैठदीनलालसेओअनाथकेलेपरतहैं जोहे टेसे वडा होत है ति

रदीनलालसेविमअवपरतअनाथ॥ तुमदीनन

नकीनजर
हैठदीन
ओअना
थकेवीन
आवत

मान॥१

104

२०३ टि॰ ॥ औ॥ आपतो केवल दीनो के हेत अध्यात्म से अध्यात्म मान भये हो हे नाथ

हेत अध्यात्म मान अध्यात्म मैं नाथ॥ ३॥ २०॥ हरि कलिका

हे हरि कलीकाल रावन ने

ल विषम वीर हवा हू॥ विसद विवेक दिवाकर निशाकर

सम किं हविघन उघार हू॥ दम [illegible] मन सुष समन

कीनं बल सहनं द्रुग हि लीनो॥ सं जम मं निजम

मलं सुरवैदन कीन विकल वल हीनो॥ र्मन संवि

वधर्ई राव रावर्ति करिन वज्र वलं भान॥ रोष सं

तोष धनाधिवं नि हसुष [illegible] लीन सुभ हपविमा

न॥ जपतपं विविध मुनीश दुषित हैं सुधन कवनं पत

गवने॥ त्रि र्स सम घ अभ्रु भदूत ह विवर विरतिं प्र

न लिन हि हवने। मलिन मनीषा भट मिंधेनु हैं विप

त प्रकार सुनावत॥ जीव विभीषन दुषितं दुषते नि

तनव अोर मिहारत॥ सकल सा जमहाराज वुन्यो अ

हे महाराज संपूर्ण साज सर्व वतवनर स्ताहै
सो सहाय जो उवारकहते हैं अवतुमारी
ही देर है विना जोरते जो दिभीवन उ थि
ते हैर स्ता है तिसको निवाज लीजिए

वलालकहिनकरजोर॥ हरवचनअवहसावसीतेंहु

निवाजविजोर॥३११॥ हरिसत्योंहरतिहारीऔरें

जहां पीमै पापकी अवधि होपर जावतें आपकी जसमें रे अव गों मे पुरखो ... ही बोरमें ... है ... लसी निज

सुजसतिहरेसअवनपरयोजवविसरगईसबबोर

और क्रोधरसो जोरवा ... लोजो

वारवारपदकमलतिहारेवंदतओरधरजोर॥जैमहि

सुदामा संपति सुग्रीव

जदीनेदेषदसावतीदेतनकसीमैरोर॥हरसुमन

दुषसमनकियोजिमवालित्रासहरेघोर॥कुटलकि

अपर अधमनकी वटोरवटोरवे

रनकुजानभांतजिहरअधमनअपरवटोर॥भीमभ

वर

वांबुधिभेदभवनगतिसवपरभेर [illegible] जोर॥रंकदिभीष

और

नकीनलंकपतिवंकलंकपतिकेजोर॥अपरअजामिल

अलेबेमे

सरसिसुधारेलीननामजिंहमेर॥कृपानिधान

सुजानध्यानकरचंद्रचूडचितचोर॥ [illegible]

[illegible] ॥तिमती॥

105

१०४वि

गप्रासावंतलालकोविषमपासभवछोर॥ ३९२॥

गमवहरिकेसविरदकीलाज॥हैं गप्रतिहिप्रारप्रकार

नपतनप्रधमशिरताज॥सुनोकृपानिधिहियेहैं

बनछबीपविलाई॥ऊहनविनमतिसरसंप्रभितसु

बगमनपरजवहिंगमाई॥संसपविपलविहराविजाय

वरजैनवरजिनदैर॥समसतपनकुवमानजान

जियतजनननपलतिहछौर॥विरदवाजमहराजति

हारेविपलवलिषप्रताप॥तेननजरकरलषतहानि

मोतिहनेकरतविलाप॥पहकछुसमजपरनमनमे

रेदिषतविलिषहमारी॥कुलहरूपहेयतिहद्रिगमें

ददीठनकरतसिकारी॥पमसकोउमोरनप्रपरगप्रास

रेप्रवरदीकपरकार॥तेरोवाजविसारिप्रमहोलाल

जानवरजिवमेतेजोबलपजीहै तिसके नेकप कौरबोनहीतजनेगप्र्थात् ते जानत है ...

... तेरोवाज है ... प्रताप है ... मेहीलाप करतहे ...

निहारयनिवारा।।३२३।।यहसुहागनदेहरिदानी।।[illegible]त

नवनेहचारणपंच[illegible]तवममममनमधुपाएकपनठानी।।

सुध हूआ हूआतन की हून पावै सुध

निसवासरमकरंदप्रेमपरलुब्धनतनसुधपारे।।अ

रसजजोमन

परकोमनानिरससुमनइव रसकननेकनिहारे।।

लालितनीलसलि लजसम

तवपद[illegible]सुषदस्या तीघन[illegible]

अपरजोसालिलरुपसुष

जै।।ममममनच्यातकपरमसुद्दिठपन।अपरसलिलसुषत्या

तिनकी त्यागै।।

जै।।जिमि।अषंडपरमव्रतधारीपतिव्रततियजियदेषै।।

तिसेतरह मेरीमती आपविषै पतिरतप्रीतदेषै

सकलस्वरस्वरंनारिरूपमयंतिममममतिरतिपेषै।।

तिस आपकेप्रेमविन

तिंहविनसुषदुषददीसैसब।प्राणहानिजिनमाही

नष जैल

जिमसफरीजलविगतमणवरप्रियतमदिसुषमाही

दैनजोगधनाधिपस्वामीदैदुरदिनदेदार।।तुमसम

न

दानीदुनीनदीसैलाल[illegible]सरसंभिबार।।३२४।।

१०६
२०५ दि॰
१॰

मसेपर

हे हरि मोसर अवर न पापी॥ मन तव पंकज नगन नैमी

मैने अज्ञामिल कराची ता लो है मतपद गनगुगिन नीआप ने

हूं पर द्विज नतास्यो हौं सुरापी॥ शिला द्रुपद तव गगभुम

जुमलार्जुन   मतशिलादीवेगई ते गर

गनि पाई कुतरू कुरू कट मेल्यो॥ मगगर की ले हौंहु

की है हों मई हम ने अज्ञामिल ओशिला आदी उधारे है ओ आपको
स्तविपद न कीअबला कम दा हीन ने हीं मई अबको री ही मई है मैं के सो

गरवते परस पतत न भेल्यो॥ गोवरधन तें अति

हौ गोवरधन ते भी भारो हो मैं सो गोवर्धन है जिनके सांला मैं चरन अबहरी

हौं गरवे सुपत चरित जिंह नाहीं॥ गति न भई जिं

अग्नि से गोवर्धन को आपने वह उंचे को आज ताकर को परउ सो की
गति न भई जैसे शिलाकी आप ने तुरत ही कर दई थी मैं तो गोवर्धन से भी भारी हो

शिला उधारी वहु उद्धकिये वाहीं॥ अव मम विनय

आपका गावै
वैसे मेरे ना
न ओर है गायं

हे विसद विरद वारे

सुनहु जे रे बहि विरद विसद वरवारे॥ भूत भविष्यत वर्त

मान महिं नहिं हम सर सउधारे॥ अव परिसर तुम हहू

तुम अपने नाम से बड़े हो   अपना लोक के कोने

म वहु विध निज गन वस तुम भारे॥ अव गुन वस हौं अ

भी अनन्य पायो है देवमो है अंत मे कौन
हारे गा॥

नन्य पाये अंत लख वको हारे॥ धरि धीरज अभ्य वहु अ

म करवर विपलगजादिव तारे॥ अव किंह विध पन

पाल करहुं लख लाल हर खव समारे॥ २०५॥

अव कौन विधसो प्रणकी पालना करहुगे
जव लाल स दिस पोपी को के आप उ
देखा

सेहरि काहि हि बसावत हासी॥ बिरद लाज बिर ह्वा जन आ

वत पन तज भाग उदासी॥ मो रत भाग उदधि गति पन

तव दुःसह हलपकनकं पाये॥ निज खूत तज व्याकुल

है वे धो सकु बिसहित सिर नाये॥ के कहुं दिवस दीन

पर विषम नन तव हि पकीन कठोर॥ सुबद दुषद जिह

सहि जवकर नछत कीन कुठेर सुठेर॥ वे जो अपरक

लिपत न प्रपीडत ति हदु बदुधी दयाल॥ सोन वनत

ममसर सनन केरन तुम हि नअगम कृपाल॥ हेम

ति हि न बिवध प्रसतर कनक करनि पट बिहाल

जाच्यो पसतनं किं हहि तरावर बिरद न कसत स माल

है किं र भान धरो धर धीरज विषम प्रकृति गति जाल

स्सवनव जसत्थिरन रहे जो निदरत लघ बलाला॥ ३२६

हरिहर विमल कर समहतवेरी॥ दीनबंधु निज जन रन

ढरो हैं ढीठ जदपि अघ घेरी॥ विविध कर स कर सहार

रह्यो तोउ अघ कि हूं अध्यक पिसाने॥ जिम कुंज

वागुर गति निकसानउ सकरे अधि कउरजाने॥ विपुल

जनम जिंह जनम लिय तिंह जनम संचीये॥ ते

अघ वहूत वदाह कर तें अववनि सवास र सुव कीये॥

तव पन दीन पतत पालन वर पावन जा घ पि जाने

सुन सुन विविध पुरान श्रुत न कर स सम्मत दिढ ताठने

तदपि देव वर आतप व्याकुल तमनसतर विनपाए

विविध प्रयास करस्य सुन अव न नैव नांत पत पलाए

तिमदीह दुहदवनादि कजरुयां तवभुज्जन सतर छांतीं॥

विनमलाव कि मंलालाले हे सुखतव अधीन सवघाहीं

३१७ ॥ हौं हरि कुटिल कुचाल तिहारो ॥ विषम विषै ज्वर वि
षम पीड्यो जद्यपि करम हमारो ॥ तदपि दीनवं सील
तव प्रभुता भवन चतुरदस छाई ॥ कठिन कुग्रंथ कुरस वंवि
आपके
धि निरमत मेटन कठन न काई ॥ महि प्रताप रवि तपत
तिहारो सम न प्रबल दंड धारो ॥ तव जान निरंतर प्रनाम
करत न प्रिय रम सभीत विचारो ॥ सकल सुरासुर तव
ले
अधीन प्रभु एक सुतंत्र तुही है ॥ अवपावन तै दीन नि
वारे प्रबल लाग पर्यो मही है ॥ तिंह हित वारम वार पु
कारति पर्यो दीन तव द्वार ॥ जरन दवागिनुः सह
सहत नित करत न मोर सम्हार ॥ जब लग मोहुं न
मिलत तुम्ह तेतव लग पति गति मोरी ॥ पीर प्रबल
पुन पुन पुकार मम लाल कहित करजोरी ॥ ३१८ ॥

108

१०७ वि॰

ह॰ हमि हौ तव दृग कृपा विलोकित ॥ रेन दिवस दीह दर दर दरे

स्यो दुखित दीन दीसत न हि कोगत ॥ तव पन दीन दुस ह

दुख टारन कारण विन कारु णालय । वहु विधि पीरपु

कार सुनावति तृण रद गर ग्रंच रालय । कवन रेन तुन

हि कान पर तत व मोर कलाप कृपाल । जग्य विपाप

पहर नीच हैं तद वि निरख वेहाल । पावन पत तंप्र

पछ विरद तव पस्यो श्री ए अव मेरे । तव ते श्रीपति

तोर भरो सो सब कल सं दे हन वेरे । अव न तु मेंय ह

वेरे पाप पर दीठ करनी

वन तं कृपा निधि मो मल पर दृग सा हन ॥ सदं पा

मन ब्य करदीए है तरु ग्रो पाषान

म पव कर लीकर कर मन जकी न तर पाहन ॥ अव भई

पद्म आप की करणी

मेट विपद की भारी लाल हि देहु निवार ॥ पद्म करणी

करणांत न विसर हि छन पुन हों वलि हार ॥ ३२९

रिसुन नंद दिं जगत वहु दानी ॥ सरस सुरी लसु जस

सर्व आश्रय तो मैं

घुवारे सवल सुख दस खाणी ॥ तव जनंतु हितं जसु पन

आपदे पन पर कर पद्म ह्र ह्र है

नेह स्त पन पर पंक्ति हारे ॥ जिम नंद नदी नवल जल

आश्रय विमल सिंधु सर भारे ॥ कदु लमराल मानस

व्यर्थ शोभा

रंसे वी वाद जिनंत तिहु परमा ॥ अलि त्रि निरख

रसरहित चाहे भाव नभीरु
मनहै रंग रजनार तिन की और वतावै अमर नहि गनत

सुमन नमा वन की निरख नैन के नगरमा ॥ भानपर

मभा भवन प्रकाशित कोव कमल मुदकारी ॥ तासप्र

चकोर चंद्र को निहारत वारे

भातुं न सम मन विलोकत चंद चकोर निहारी ॥ जिमति

और रूप को अलकर भी पर वनहि जिन ति

पपति ज्ञति पुर वहि संदर आनंद जनमन नेहि मोरे ॥ तुंग

तरंग गंभीर सिंधु की चातक विपान तोरे ॥ तिमतं जनं

मैगरी वलाल कहि जाचन अपरन जांही ॥ गणीज

रनको निवाजना तेरवी नाहि जो केवट मैं आयो है

रीव गवार निका जनन पस्यो बंट नव वांही ॥ ३२०

109

२०८ वि॰
ह॰

हरिसम मदिन पस्तुमे तजेराब ॥ विपुल ब्रह्मांडनि काप

सेमप्रतिवदत वेद विधा प्रहिपस्तु घोष ॥ उदमव पालन

प्रलय निमष देतराव रसीन विदत दुबहारी ॥ प्रदुनी

पदानं शिरोमणि दारद दुरदद लनदुरदारी ॥ नेकेन

भितदयावदन गप्रभु जदीपशा कसाररसर जधानी ॥ जा

चनं विन हिजं दीन सुदमहि त्रिभुवन संपति बानी ॥ ५

पासमाप्ति ... सब विघतु मंपर भ्रकरस्वान प्रघाल

या । र जकादि वगट ब्रादिकं प्रतिबल स्वप्रदीन करुणालय

प्रपरप्र भितगुणरा वरस्वामी करि नवनत प्रदि पाहि ॥

त्रिपुरहरण बानीगण नाथ कस्तु कवि नेमंत सकुचाहि ॥ प्र

सप्रताप पर लाल वंट मे केवल मेन नत वानी ॥ वउप्र

चर्विभ्रुव जाजगपरमाट नकोर नदानी ॥ २२१ ॥

हे हरि आप की कृपा की अद्भुत गती है जिस दीन पर वो महा आश्चर्य होते हैं आनंद तेउ आप की कृपा का ...

हरि अद्भुत गति [illegible] कृपा तिहारी॥ जिंह पर सर्ई नम
न सकत तेऊ जग्य पिनी ठनि हारी॥ सर्व ग्रंथ चतुरदश
भुवन हि सकल सचमन स्तवा है। जब लसु षदस्तु तविव
धवि संपुदस सहज निंकस कै पै है॥ महा नाग दुरजय दुष
दाई म. षवदसन न बाधे॥ कंज ग्रंथ कुमादि नक लेशाप
रपारावारसु काधे॥ वडवानलि वड वेग समन कि पतूल
निवट अति दीन॥ सरनेलनी अतिनाशाकीन वलमहाव
लीं कीन॥ वहु कलप नकर कठि नं महिधर बंजन व
न प्रजास्यो॥ मारतंड सुरभान ग्रसां वरविव मक लेश
निवास्यो॥ चातक स्वर अति घन हिं प्रमोदित निरब अ
चेमो भारी॥ लाल पतत तव शारण परयो प्रभु निज वर
दान सुधारी॥ ३२२॥ हो हरि विपत वर वरि तुव हयो

जिस आप की कृपा के चातक की जो स्वर है सो बादर को आनंद करत है ... आप की शरण परयो है ... आप जो दान है कृपा की ...

110

१०२९ हि

हः विषयादि जरी व हुँ न सुख कर बस बाधत बे पशु ता बड गह्यो॥

तांसां हह स समदं स हमोरा समें हेर हह रिमाग्यो॥

वेक वाव मुद्ग्वाह ह २ प्रवेत हिरा ममन्न २ प्रवर पद सान्यो

यव अम म मेक मुवंगभीम मम सम बुद्धि मुविभारी॥ ९४

ति २ ग्रस्तान तिमर ता ऊ तत कवहु दिसत कर न प सारी

निरव सतानि सवा सर सत रिनाशा क उअं गसंग लीनो

दुःख प्रवाह दुःसह धुमाधीर जनेतारं वहन २ प्रति हीनो॥

सम दम नियम विचार पथ वं जन विप कर हेमुसा

नै॥ ज्ञान दिवाकर महा मोह घन दिखत नेनि पटलुका

नो॥ हरव म मम दुःत प्रोक्ष कर मति हकीन कुरता भारी॥

२ प्रवव हर भार तिहीन २ लालकी बांह गहु गिरवरधा

री॥ १२२॥ हे ह विचार न सम मोह ची हा॥:०:

विषयवासनाजो वहु प्रकार की आहे तेई हस्तु नी पाहे संग मोह मद हे॥ मोह जो है तम है तिसमें लीन है॥ संसार वन में ग्रामग्राम तिसमें फिरत हो हो फेर दिन देव कर ग्रीह स्त्री भवनमें मनपिस है तव नानातर हैं ते तरसंजन करत हैं ताये वासते हैं परउपकार जे हैं तेई नानातर हैं ते तरहै सुंदर ति नके संजन करत हैं ताके से मेरा जो मान सहै तेई सरोवर हैं मानेन की वारजल लेके पूरत है सो हे वैसा है मानसरवन लेके नवीन हैं रम पाई जलसर वर में नवीन उत्पन्न होत है ते से ही मान नवीन

विषयवासनावहुविधवकरनीसंगमोहमदली

न॥भववनग्रामग्रमतिनतनहिंकोहे फिरतकरवि

तदीन॥परउपकारविविधतरसुंदरतिंहसंजनकृतकी

न॥सरवरमानसमानवारिकरपूरतपरमनवीन

लक्षालक्ष अपार लहरी से वाली है अति स्वच्छ के

लक्षलहरिअपारवलितअतिकुमतिरूमिषलली

न॥राजत [illegible] नमोहवारजावहुप्रविनपउरयनपी

न॥ग्राहक्रोध [illegible] तंतुविषादिअतिवलवेगग्रा

दीन॥हेविहरत तिंहतंतुपासमहिपक्षमहामतही

न॥लिप्तजातवलमातवलातहिवलविहवलहो

दीन॥पाहिपाहिप्रणगतिपातलनपासपरला

पनवीन॥पीरवरापणपततलालसकीकोहेसुर

तकरीन॥ ३२४॥ हे हरि हरे सोवठि नमम विपता॥

111
२१०वि॰

तारन्मे वारा तुम से अति
अधिक नही

दीनमलीनदुषीदूषनमयपतितरनहितुमतेंअतिछिक

अवगुनि

ता॥ हैं अवकुमतिकहंलौंकहूंकूकोंअटवजिंहंता

जैसे सम्मे वारंवार बन एक ही नाव को देषत जिन से छूटो है

ही॥ पुनपुनतंवपरदीठवरतजिमसिंधुनावबग

आपने वारन्मे मेरे को पहलो देष आप को जो तक सिधा है। हो

चाहि॥ वरणावरनिजवारवस्योलषतुमवितनै

रसिधारे॥ विलपविलापवहुवेरविहानीवसीन

दपातिहारे॥ विश्वंभरवारिधितेनपापतिविदतति

हारवडाई॥ विणाविलोकंविवसदिनवताकिपंवधान

वधंवरआई॥ तुमसमअवरपतितपालनवरपरतन

हो भिन्न क जो हो

दीठहमारी॥ परमानन्दभिक्षुकतुहिंजचितअचल

उदोपसारी॥ धिंहवारणअतिनिठुरमयेपनवहिंव

अतिवसमावारे॥ लालमगहतवांटसमवअ

वलषिपनवुसबतिहारे॥ ३२५॥ हरितुमगई

वहे।रनिवाज।।पांडवतनयदुखितलषहि।जेतेद्विज

हदिवाईभाज।।गजप्रकारयैपायनधाएपरहरप्रिय

षगराज।।पंचालीपतिनिरषविगतपटदीनकीनति

हलाज।।मगधनिपटसुदामाभाषियोजद्यपिधनउ

रकाज।।विनजांच्येवांछितगपप्रधकहदीनलजत

सुरराज।।वालिवंधुतेविकलसररसुतविपतवेधकूसाज

दशसिरदीनेदीनशिवसंपतितेतिंहवंधुदीनकरलाज

जरासंधकारागृहसंपतिवढदीनसमसाज।।वंद

विमोच्यवंसउतदीनोउग्रसेनशिरताज।।किह

लगकहौंप्रगटप्रकारतकलपनतेनहिंप्राज।।

लालनिहारपरततवपायनंधवनगिरीवनिवा

ज।। ३२६।। हरिममहरोकठिनभवपीरा।।

112

१११ वि.

दीनबंधु दासन के हित कारी दुरद हरे तें दुषी सब सारी तु मजि मत जत मोह ममता बस लंब मल भाजन भारी ॥ तिमन बची तव तें हत पूरबक्रो मम महिसा बधारी जिंह विध तुम रीस तव तत न परति हत हैं जग मानी बार बार मम बिन व विकल की विरद बिहितकर ग्यानी जो गति ऊर ध्य रेत बढ नकर सावत परम मग्य मानी ॥ जे गति प्रबधि सर्व वर बिस्रत कीन मता नी ॥ न वकस बरसाकर विकथ कह न परत कर तृती ॥ कु बुद्धि व सब की कुटिल चाल देहि कन्हा दीन सबुर पर स्वती ॥ प्रब बकर कृपा काल न काल की इतव सुषकुस तप्र पानो ॥ लछ निवास लाज रख ली जो लाल नग पर ठिकानो ॥ ३२ ॥ हैं प्रति दुरित दिवाकर

दोहा॥ श्रीपति सुमनोसरसरस संपाती सिद्धति सुखवन स

पन मैं चाहे॥ जललाघ गगनन न्यावरठ हरजाहिं स

ल सम न है हैरे॥ पुनपुन तव पर दीठ परत जिम

लोहहु मक पर पेरे॥ पहनसमर मोहि परत दीन

के तुमक तंसुनतन कानी॥ कीकी परी उकार अपार

हु कसी नहैं अघखानी॥ जिंह विधविरद विसद

ताविलसत विवधव्र लांउनिकाय॥ पसुप दीपत

तनपरवसहुनपालाव्र लोकव वसाय॥ ते किमम

मअपमान करनपरहरव वतछवि पावे॥ पतत प्रसं

गअचार पमन परसकुच सहित तिरि रनावे॥ पहवउह

निसमग पनप्यारे विघलपीरपर माही॥ निनेक

रक लिवरव ल्पत हकरकर सुलाल धीरछहीं॥ ३२८

113
११२वि
२

हृदमुजंगध्यात। महादीनब्रह्माभवेधेमसारी॥
मधुरीग्रीवेटमारी त्रिनादनवाकीमहाम

तवैनामधारीयंमध्वेटआरी॥ अईन्हमिदानेम
ओद्वावेरपधीलैजातमई

हांमक्रोद्धाई॥ नमोदीरशापीनमोदीरशापी॥
हरिरूपाढ़ अवतारअवतार२२

धरीतेभुवीसोनग्रदीसुरारी॥ भयोवोलनामी
देवत्योकीसोचकोमोचकरैप्राधिकयताकरनमे

रूपोतेबरारी॥ वरीसोचवेदोमोवदेवाधिकाई॥ न

मोदीरशापीनमोदीरशापी॥ २४॥ भयोनव
ब्रह्मसोन विधाताकेउनसनकादि

देस्रुपेजवैज्ञानभ्रातं। भएदेखवौविधातासुतातन॥ अवतार
अध्यापनकरैतेहवेसर्ववतसौनिकीप्राधिकयता २

पवोजोपुरानत्वज्ञानाधिकाईंनमोदीरशापीन
निर्मलजनतोसे

मोदीरशापी॥ २३॥ भईहीनमसीजवैजनसुखघ॥
अवताई नसावतारहेजोदावसीना३

सदैदेवदेहोप्रहेरेरभरतम्र। पपेजसनज्ञावतारीव

राई॥ नमोदीरशापीनमोदीरशापी॥ २४॥ तीतीन

तापंविभ्रालेग्रसेसमे॥ महांदीनमतारिसेवेउसमे

अवतारचकनेजातीन ताम्रसीव्यातिनिके ग्रसनाराजोनातीइदे चवकवेउअवत नाटमिट २

नरकेसाथ नारायण हो
सहावता कै भगवधीर
नरनारायण अवतार हैं तमए ४ चौथा

६

नरंसंगनारायएचवीसहा॥ नमोहीरशावीनमो
हीरशावी॥२२३॥ रषाहीवधासीसुधारीपनाके
कपीलांनतारीमएश्रीजनाके॥ ष्वीएसंबसासत्र
दिसाहीसहाई॥ नमोहीरशावीनमोहीरशावी
२२४॥ ऋतीउत्रप्रत्रीतपेतापपूरे॥ मएतासदत्तात्र
पातातरूरे॥ सहांलेजासिद्धिविचारीसुहाई॥ नमो
हीरशावीनमोहीरशावी॥२२५॥ सहीपालना
भीमएतासुताता॥ सहांमोरूहूसीऋषकांलंविचाता॥
ऋतीपेगसत्रीप्रभ्रश्रीदिषाई॥ नमोहीरशावीन
मोहीरशावी॥२२६॥ ऋतीचेरध्रू वालतापधेसु
तापं॥ दषेताहिरप्रडोलसपादंजप्रमापं॥ तहांध्रूवरे
दानिनामेकहाई॥ नमोहीरशावीनमोहीरशावी॥२२७

ऋती ऋडोल ऋस्थान २

गुरं ग्यान नै वेद लीने कुमेधा
हयग्रीव है दुष्ट मारे प्रभु मयी

११४
२२३ वि

भई हीन म्लेमी जबै म्लेछ म्लेतम्र । भए नाथ वेणा सुदे

हंसा म्लेतं महाराज पृथु प्रतापी म हूई ।। [illegible] न

मोदीर शापी नमो दीर शापी ।। ३३८ ।। विधी द्यो

सगंताभ ए सैन वेधा ।। सवेग्रार पानी ठवी है सुमे

धा ।। गयो ले सुवेदे ह स्रोतेक साई ।। नमो दीर शापी

नमो दीर शापी ।। ३३९ ।। प्रमाथ्येव प्रथारं ।। धरयो पी

ठमं द्राचलं लो पहारं ।। सुरै मोद है कूर्म नामै धरई

नमो दीर शापी नमो दीर शापी ।। ३४० ।। प्रलै सर

रदो प्रम्ल सात्य वृते ।। हन्यो संखचूरै विधाता सुदि ते ।।

तहं मीन है दास प्रीती जनाई ।। नमो दीर शापी न

मो दीर शापी ।। ३४१ ।। दुधीर दम जै प्रम्ले दे सुप

ये ।। विद स्याम हं घोर शाहै प्रदे मे ।। न द्वैदे त्यक

मनघोर शाह का प्रारंभ करते थे

स्यों नरसिंह है वसाई।। नमो वीर शापी नमो वीर शापी

३४२।। सुरेंद्र ... भिका स्यो जवै है त्यराजै।। भए

वावन्नारूपंई दैं सुकाजै।। दुवो पाद मापे वलीलो

कसाई।। नमो वीर शापी नमो वीर शापी।। ३४३

गजै ग्राह तंत गह्यो जोर भारे।। रहे जा सुवंधच छू

डातै विहारे।। १ का स्यो जवै हा हरी कीस नाई।।

नमो वीर शापी नमो वीर शापी।। ३४४।। विधा

तासु पुत्रैं करयो प्रसन्न तातैं।। रहे मौन है व्रह्म ताकैं न

घातैं।। दयो हंस है तासु उद्वैं जनाई।। नमो वीर शा

पी नमो वीर शापी।। ३४५।। विधातासु

सुत्त नपत्नी विहीने।। भए तातसमै से स्वपंभू

प्रवीने।। रची मै पुनीत ख रिरीति चलाई नमो वी

115

११४ दि

र्‍शावीनमोहीरशावी॥ ३४६॥जवेंहीरसिंघ

मछ्छरंदेवदानो॥मत्ताकेनुनेम्रतव्याधींप्रमानो

प्रभ्रस्वपधन्वंतरैनसाई॥नमोहीरशावीनमो

हीरशावी॥ ३४७॥भ्रतीनीखछ्त्रीभएम्रभ

मारी॥भ्रगुवंसमध्येसुरामावतारी॥विनांवार

रधीसर्वेरवंसरा॥नमोहीरशावीनमोही

रशावी॥ ३४८॥महंतावंतावंहरीधारंहीमे

भ्रतीवेदवंवेंप्रवास्योमहीमें॥रमाराजंमेव्यास

नमेंधराई॥नमोहीरशावीनमोहीरशावी

३४९॥दशग्रीवदाबागिंदाघेहिंनेशाम्र॥र

मावंतयेरामजीमेंतेवंशाम्र॥महाघोरंत्रेताव

जंदेंदुहाई॥नमोहीरशावीनमोहीरशावी३५०

सवेभूतज्वंतसारि दुखेसताए।।भए वासुदेवा

वतारी सुहाए।।वज्जै भेद देदु षमारे महाई।।

नमो वीर स्वामी नमो वीर स्वामी।।३५१।।

सुरेंद्रे हितें नाप वेदं विहीनं।।म सबै कीन बंद्रंग

हिंसा सुरेनम्र।।वि पा वोधं हें बुद्धि हीनासुराई

नमो वीर स्वामी नमो वीर स्वामी।।३५२।।क

ली काल घोरं जवे भू भिव्यावे।।वसुधा दु

धी है महा धीर वावे।।तवै विष्णु जैग्य हैं तो

भवाई।।नमो वीर स्वामी नमो वीर स्वामी।।

३५३।।पयोदं न भंगं विकाशं शरीरं।।लसंतां

वरं पीत धवानं तपीरं।।करीटं महीनं मदिं तमो

लिमंडो।।प्रचंडा पदा सुंदहासो मगंडे।।३५४।।

116

११५ वि॰

लाल कमल की जो प्रभा है तिसके हो का हने बारे रा ते हैं नेत्र जि नोके अमह पाटल है लावन्य रूप जो मरुस है तिसकर के मानो प्रमो ते है

प्रभा लाल अंभो जहा नैन साते ॥ शुभं पाटलं लोल लावन्य माते ॥ मनो मीन है मीन गामी रचे ते ॥ रच्यो व भ्रमरा गंध रेफं जरे तम्म ॥ २५५ ॥ प्रभावंत अत्यंत संकुंड लाभम्म ॥ प्रतीशोभ शुभ्रं महा ला भ लाभम्म ॥ सटं वज्र माहा रि शोठं वध्र कम्म ॥ प्रभा ग्रीव सेवा व मानी ठचं व म्म ॥ २५६ ॥ सुजा चा रि व कारि मा अप्रम म पम्म ॥ लसैं अंगदा दी सुरा जी विजै व म्म ॥ उर प्रापु तं सुक्र मा लातिवा मम्म अनंत अलंकार वंता लिलाम म्म ॥ २५७ ॥ मणीके सामं मा संवं ठं सुदे शम्म ॥ लसै हासहरं ती हृदेशं मनो चंद्रका चंद्र चो जं सुदेतम्म ॥ दुरी सोम साजे सुधा स्त्रछ्छ वे तम्म ॥ २५८ ॥ प्रती भ्रम्न नाभी लसै

वारिजातम्॥ दुतीवतनापैविधाता सुगातम्॥ व
टीसिंहसाविकणीसोभसाकौ॥ जरीजुत्तथाती
हसैविकुंभाके॥२५९॥ नवीनंवुजंकादपद्म
सुपानम्॥ सदालालनीयंप्रभाप्रप्रमा
नम्॥ प्रहीवेशसजाप्रम्हसैनकारी॥ पुरे
लालसाभमवैहीमसारी॥२६०॥ गिराती
तहाभीतनीतीप्रपाली॥ सदारीतप्पावीप्रना
रीतपाली॥ महाधर्मरक्षीप्रधर्मपिहारी॥ न
मोदीरशापीप्रणामाधिकारी॥२६१॥ विनापार
प्राधारदीनानुसारी॥ गुणागारगोपारव
तीरधारी॥ निराकारसाकारसादीसदाई॥ गोहो
वाहस्वामीडिलोवेशसाई॥२६२॥ विचारीउवा

117

२२६।लिं

री विकारी प्रमाथी ॥ ७ प्रनारी सुधारी पुकारी ॥ सु

पाथी ॥ महारी तथारी प्रहारी जगनं ॥ न मो व क्र

धारी संघारी प्रमन्नेम्र ॥ ३६३ ॥ प्रभा का महारी

सबे हेतु कारी ॥ ॥ गदा संबधारी सुमुक्ती विधारी

प्रपाटी तिहारी सबे दीनरछी ॥ कुतच्छा दिपदी

३६४ ॥ ७ प्रसंबं टिवे संप्रतापी ७ प्रनादी ॥ ७ प्रखंडी

विबंडी प्रचंडी प्रमादी ॥ मदादी विनासी प्रकासी

त्रिलोकी ॥ नमो हीरशापी सवैस विलोकी ॥

३६५ ॥ कुकर्मी विधर्मी कुभर्मी महा हैं ॥ ७ प्रघो

घो न घेरा व हं लो व हो हैं ॥ पसो दीन हेसा

ती धारी गुसांई ॥ गहो वाह स्वामी प्रभ हरि या

ई ॥ ३६६ ॥ कुबुद्धी विरुद्धी ७ प्रसुद्धी ७ प्रभानो

चतुर्दशाभ्यवनो भौ जीसवोवोई
ठकानोनहीदीसत गौ नौखतघी
गौ सज्जार हित जो लालहे दिसमे

दशोवारसोवंनजाहीठिकानो॥हृतद्विप्र
लजीविनैलालगाईंजाव्यावुद्धिस्वामीवि
वाजोदुलाई॥२६७॥ कवित्त॥विधमुषवेद
धराषंडअष्टिनायका सम्मतसुयोगशुभसो
भनप्रवनिकै॥ सुमनसुवारमासमाधव
शुकलतीजविनैभईदरसाविदारतीगप्रचनवे
हरिजनसुखविबुधांनंदमैकीजैचषलाई
दोबलालगौगुणभुवनकै॥पीरहैरपालैपा
रिजातहैं प्रवन्नेकेदेहैं प्रीतपादप्रभुपद्मारस्मणा
के॥ २६८ सोरठा जगजितसिंहमहिपालन
गरकपूरथलेसचरातहंरहितनंदलालसत
जनदरमसुलालजे २६९। इतिश्रीपद्मावति

पदपंकजमकरंदमिलिंददासानुदास
नंदलालवत्सहरिप्रबोधनीविनयपत्रि
कासमाप्त शुभंभूयात् ॥श्रीमन्नारा
यणायनमः ॐतत्सतब्रह्मणेनमः रामः